डाक पंजीयन क्र. आई.डी.सी./म.प्र./892/2018-2020
पत्र पंजीयक क्र. : म.प्र. 15059

आयोजन समायोजन विशेषांक

संस्कार सागर

● वर्ष : 19 ● अंक : 229
● मई 2018

● मूल्य : 50 रु.

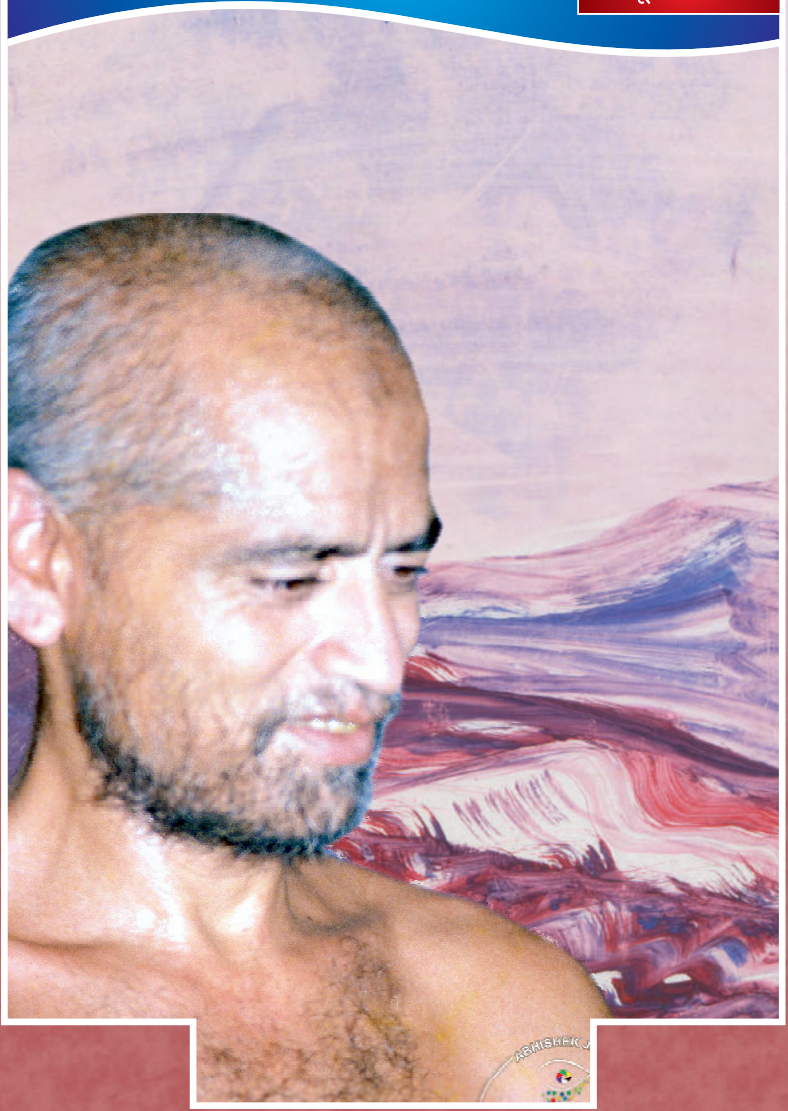

बालक विद्याधर (आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज) के द्वारा रेखाकिंत दुर्लभ चित्र

संक लन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		(मई 2018 प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल)	
16	बुधवार	प्रतिपदा	कृतिका
17	गुरुवार	द्वितीया	रोहिणी/मृगशिरा
18	शुक्रवार	तृतीया/चतुर्थी	आर्द्रा
19	शनिवार	पंचमी	पुनर्वसु
20	रविवार	षष्ठी	पुष्य
21	सोमवार	सप्तमी	आश्लेषा
22	मंगलवार	अष्टमी	मघा
23	बुधवार	नवमी	पूर्वाफाल्गुनी
24	गुरुवार	दशमी	उत्तराफाल्गुनी
25	शुक्रवार	एकादशी	हस्त
26	शनिवार	द्वादशी	चित्रा
27	रविवार	त्रयोदशी	स्वाति
28	सोमवार	चतुदर्शी	विशाखा
29	मंगलवार	पूर्णिमा	अनुराधा
		(द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण)	
30	बुधवार	प्रतिपदा	ज्येष्ठा
31	गुरुवार	द्वितीया	मूल दिन-रात
		(जून 2018)	
1	शुक्रवार	तृतीया	मूल
2	शनिवार	चतुर्थी	पूर्वाषाढ़
3	रविवार	पंचमी	उत्तराषाढ़
4	सोमवार	षष्ठी	श्रवण
5	मंगलवार	षष्ठी	धनिष्ठा
6	बुधवार	सप्तमी	शतभिषा
7	गुरुवार	अष्टमी	पूर्वाभाद्रपद
8	शुक्रवार	नवमी	उत्तराभाद्रपद
9	शनिवार	दशमी	रेवती
10	रविवार	एकादशी	अश्विनी
11	सोमवार	द्वादशी	भरणी
12	मंगलवार	त्रयोदशी/चतुदर्शी	कृतिका
13	बुधवार	अमावस	रोहिणी
14	गुरुवार	प्रतिपदा	मृगशिरा
15	शुक्रवार	द्वितीया	आर्द्रा

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभ : मई-17, 25
वाहन क्रय :जून-14
विद्या आरंभ मुहूर्त : मई-17,20,25,31 जून-15

तीर्थंकर कल्याणक

04 जून : भगवान श्रेयांसनाथ गर्भ कल्याणक
09 जून : भगवान विमलनाथ गर्भ कल्याणक
11 जून : भगवान अनन्तनाथ जन्म- तप कल्याणक
12 जून : भगवान शान्तिनाथ जन्म-तप-मोक्ष कल्याणक
13 जून : भगवान अजितनाथ गर्भ कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

17 मई : रोहिणी व्रत
29 मई : अधिक मास समाप्त
13 जून : रोहिणी व्रत

सर्वार्थ सिद्धि

16 मई : 05/50 बजे से 29/49 बजे तक ।
18 मई : 26/24 बजे से 29/49 बजे तक ।
20 मई : 05/48 बजे से 22/45 बजे तक ।
26 मई : 20/38 बजे से 29/46 बजे तक ।
28 मई : 23/05 बजे से 29/46 बजे तक ।
03 जून : 05/45 बजे से 12/00 बजे तक ।
04 जून : 05/45 बजे से 15/06 बजे तक ।
08 जून : 23/03 बजे से 29/45 बजे तक ।
10 जून : 05/45 बजे से 22/30 बजे तक ।
12 जून : 05/45 बजे से 19/08 बजे तक ।
13 जून : 05/45 बजे से 29/45 बजे तक ।
15 जून : 11/22 बजे से 29/46 बजे तक ।

तीर्थ सरंक्षण संवर्धन विशेषांक * आगामी * आयोजन समायोजन विशेषांक

संस्कार सागर

• वर्ष : 19 • अंक : 229 • मई 2018
• वीर नि.संवत 2545 • विक्रम सं. 2074 • शक सं. 1939

लेख

- आचार्य विद्यासागर जी के चिन्तन में पुण्य हेय कब ? और क्यों ? 08
- आचार्य विद्यासागर जी के चिन्तन में शुभोपयोग औदयिक भाव नहीं 10
- आचार्य विद्यासागर के सानिध्य में युवा सम्मेलन 14
- वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली और उसके साइड इफेक्ट 17
- आचार्य विद्यासागर जी और गजरथ पंचकल्याणक समायोजन 22
- जैन पौराणिक साहित्य में संस्कार विधि 42
- आचार्य विद्यासागर जी के सपनों का मंदिर 57
- आचार्य विद्यासागर जी और मंदिर निर्माण 57
- जिनालय का निर्माण करने/ कराने वाला 58
- भक्ति के प्रमुख आलम्बनः देव, शास्त्र और गुरु 59
- अभिभावकों तथा शिक्षकों से 66
- प्राचीन जैन मंदिरों का खजाना-गुलबर्गा जिला (कर्नाटक) 70
- जैन न्याय : स्वरूप एवं उपयोगिता 73
- भारत के संग्रहालय : ऐावत हाथी एवं कल्पद्रुम अथवा कल्पवृक्ष 75
- आगम वाचना और आचार्य विद्यासागर 77
- जैन दर्शन 79
- आचार्य विद्यासागर जी के सपनों का मंदिर 83
- जैन परम्परा मे आखा तीज का है विशेष महत्व 87
- गुरुसत्संग जिया तो जाना सन्दर्भ- संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर 89
- जैनाचार्य विद्यासागर जी के प्रति दिग्विजय सिंह की अपार श्रद्धा एवं समर्पण 91

बाल कहानी

- गिंचू का समोसा 68

कविता

- बेचारा बड़ी स्पीड से चला गया 16
- हम नाचत ताल बजायें 27
- गुरुवर विद्यासागर वंदना 29
- अनसुलझी पहेली 33
- दर्शन पूजन करों प्रभु के 39
- रेत में नॉव 64

कहानी

- सम्माननीय सुनीता 54

नियमित स्तंभ

• **पाती पाठकों की** : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 12
• चलोदेखें यात्रा : 21 • आगम दर्शन :28 • पुराण प्रेरणा : 31 • माथा पच्ची : 31• कैरियर गाइड : 32
• दुनिया भर की बातें : 34 • इसे भी जानियेः 40 •दिशा बोध : 41 • आओसीखें : जैन न्याय : 51
• हमारे गौरव : 65 • बाल मनोविज्ञान : 66 • हास्य तरंग : 67 • बाल संस्कार डेस्क : 68
• संस्कार गीत व बाल कविता : 69 • डाकटिकटों पर जैन इतिहास :75 • समाचार : 92

प्रतियोगिताएं :अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा :95 : वर्ग पहेली : 98

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ,
इन्दौर (म.प्र.)
आंतरिक सज्जा :आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें । बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क
-आजीवन : **2100/-** (15 साल)
परम संरक्षक : **15000/-**

अपनेशहर के
- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (संस्कार सागर)
  खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
- भारतीय स्टेट बैंक (ब्र. जिनेश मलैया)
  खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
- ओरिएन्टल बैंक ऑफ कामर्स
  खाता क्र.07882151004198(IFSC:ORBC0100788)
- आईडीबीआई बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)
  खाता क्र. 155104000037022
- आईसीआईसीआय बैंक (श्री दिगम्बर जैन युवक संघ)
  खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपनेपूर्ण पतेसहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय कोसूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय
संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 8717924109
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों वैज्ञानिक स्टीवन हॉकिंग का निधन 14 मार्च को 76 वर्ष की उम्र में हो गया। जब वे 22 वर्ष के थे तब उन्हें बहुत कम लोगों को होने वाला ऐसा रोग हो गया था जिसमें धीरे धीरे शरीर की सारी मांसपेशियों को लकवा मार जाता है। डॉक्टरों ने उन्हें बताया था कि उनका जीवन मात्र 2-3 साल का बचा है लेकिन चमत्कार यह हुआ वे 76 वर्ष तक जिये। इसके पीछे जीने की इच्छा शक्ति ही विशेष तौर पर कार्य करती है। स्टीवन हॉकिंग का सकरात्मक सोच ही उन्हें लम्बी जिन्दगी जीने में मददगार हुआ। मृत्यु जीवन का अटल सत्य है इसे कोई टाल नहीं पाया है किन्तु भय पर विजय पाकर दीर्घ जीवन जिया जा सकता है। अतः हम यह कह सकते हैं कि व्यक्ति को मौत आने के पहले नहीं मरना चाहिए। जूझकर जिन्दगी जीने वाले मर जायें पर वे अपना नाम अमर कर जाते हैं।

श्री ओमप्रकाश जैन अहमदाबाद (गुजरात)

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों सर्वोच्च न्यायलय ने बीमारी के कारण कष्टमय होते जीवन से बचाव के लिए इच्छामृत्यु को व्यक्ति का अधिकार माना है। अब जैनियों के लिए सुप्रीम कोर्ट के इस आदेश को आधार बनाकर सल्लेखना को भी व्यक्ति का अधिकार माना जाए। यह मांग जोर सोर से उठाना चाहिए। क्योंकि सल्लेखना न तो आत्महत्या है न इच्छा मृत्यु। अपितु सल्लेखना एक साधना है। जो प्रकृति के नियमों को स्वीकार करके अपने जीवन का समापन करता है। जब मृत्यु को किसी भी प्रकार से टालना संभव न हो तब सल्लेखना साधक का अधिकार स्वयं सिद्ध हो जाता है। शास्त्री परम्परा में इच्छा मृत्यु से समानता रखने वाली मान्यता सल्लेखना है चूकि मृत्यु के भय पर विजय पाने की साधना सबसे बड़ी उपलब्धि है इसलिए इसे समाधि मरण पंडित, मरण अथवा सन्यास मरण कहते हैं यह जैन साधना आत्म कल्याण की अमर साधना है।

श्री धन्यकुमार जैन सावरमति (गुजरात)

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर सन् 2018 अप्रैल महिने के तीर्थ संरक्षण सम्वर्द्धन विशेषांक की सज्जा और विषय वस्तु देखकर प्रसन्न हुआ। नैनागिर, कुण्डलपुर, जबलपुर मड़िया जी, कोनी जी, नेमावर, रामटेक, बीना बारहा, पटनागंज, मुक्तागिरी, चंद्रगिरी डोंगरगढ, अमरकंटक, थूबौन जी जैसे तीर्थों पर आचार्य श्री की तपोसाधना शिष्य संग्रह, साहित्य सृजना, समाधि सम्पन्नता तथा वर्षायोग, ग्रीष्मयोग और शीतयोग की जानकारियां इस विशेषांक में विशिष्ट रूप से दी गई हैं। जिन्हें पढकर ऐसा लगा जैसे आचार्य श्री की इन साइक्लो पीड़िया तैयार की गई हो। तथा अपने नियमित स्तंभो को भी इस अंक में बखूबी संचालित किया गया है। संस्कार सागर ऐसी पहली पत्रिका है। जिसमें आचार्य श्री के विशेषांको का प्रकाशन करके आचार्य श्री विद्यासागर जी के व्यक्तित्व की समग्रता पाठकों को परोसी है। एतदर्थ में धन्यवाद प्रेषित करता हूँ।

डॉ. अनिल जैन (जयपुर)

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के अप्रैल अंक में तीर्थ सम्वर्द्धन संरक्षण को लेकर आचार्य श्री विद्यासागर जी द्वारा तीर्थों के जीर्णोद्धार एवं नये तीर्थों के उदय को लेकर जो समाज में चर्चा का विषय बना रहता है । उसका समाधान पं. विनोद जी ने बहुत अच्छे तरीके से प्रस्तुत किया है गजरथ जैसे समारोहों का संचित दान का सदुपयोग किसी भी तीर्थ के संरक्षण में करना सर्वप्रकार से उचित सिद्ध किया है । भ्रान्ति यह फैलाई जाती है कि जिस जगह पर दान संचित किया जाए वहीं पर उपयोग होना चाहिए। किन्तु एफ.डी. बनाकर के रखना धन का पाषाण जैसा होना है अथवा समाज में विवादों के सिवाय और कुछ नहीं होता है किन्तु नवोदित तीर्थ शिक्षा के क्षेत्र में दान राशि का निवेश करने से विवाद से समाज बच जाता है। मैं विद्वान लेखक के विचार से पूर्ण सहमत हूँ।

श्री अशोक जैन जमादार (दिल्ली)

भक्ति तरंग
जिनवाणी

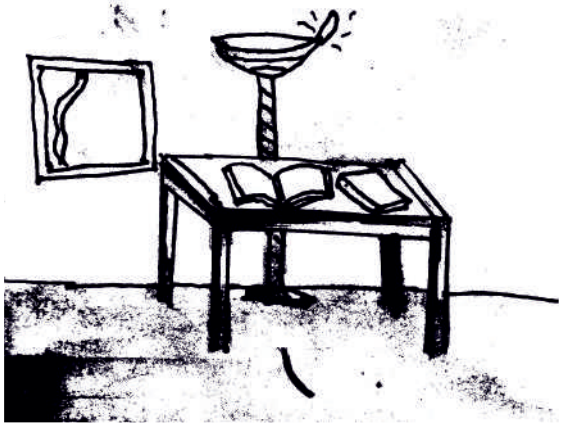

तैं ना जानी, तोहि उपयोग हि देत दिखानी ।।
ज्यौं फूलन में बास बसत है, त्यौं तू, तन में ज्ञानी ।। तै.।।
ये तेरे कबहूँ मति मानै, क्रोध लोभ छल मानी ।। तै.।।
जैसे राजत सिद्ध मुकति में, ऐसा तू प्रानी ।। तै.।।
या जानै बिन गति भीतर, दुख पाये तू रानी ।। तै.।।
बुधजन औसर अजब मिल्यो है, धरि सरधा जिनवानी ।। जै.।।

हे जीव ! तू अपना स्वरूप नहीं जानता। तुझे अपने स्वरूप को / अपने उपयोग को देखना है।

जैसे फूलों में सुगंध बसी रहती है, हे ज्ञानी ! वैसे ही तू इस तन में देह में व्याप्त है। (जैसे फूल में सुगंध दिखाई नही देती वैसे ही तू (आत्मा) भी दिखाई नही देती।)

क्रोध लोभ माया और मान ये कषायें तेरी कभी भी नहीं है। तू उनको अपना मत मान।

हे प्राणी ! जैसे मोक्ष में सुशोभित। विराजित सिद्ध का स्वरूप है। वैसा ही तेरा स्वरूप है अर्थात् स्वरूप से तू (स्वयं) भी सिद्ध के समान है।

इस तथ्य को, अपने स्वरूप को न जानने के कारण तूने चारों गतियों में भटक भटककर बहुत दुख पाए है।

बुधजन कहते है कि अब यह मनुष्य भव और जैनकुल के रूप में तुझको एक अपूर्व अवसर मिला है। इसलिए अब तू जिनवाणी पर श्रद्धान कर ले।

संस्कार प्रवाह

आयोजन करते नहीं होते रहें है

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का 50वाँ संयम स्वर्ण महोत्सव का आयोजन संपूर्ण देश में उत्साह के साथ समायोजित किया जा रहा है। विविध प्रकार के आयोजनों में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज स्वयं कोई भी रूचि नहीं लेते है फिर भी आश्चर्य की बात यह है कि उनके नाम पर आज तक कोई भी आयोजन असफल नहीं हुआ है। पूज्य आचार्य श्री के सानिध्य में जितने भी आयोजन हुए हैं वे सब गरिमापूर्ण एवं अनूठे ही हुए हैं। बुन्देलखण्ड की माटी पर जब से आचार्य श्री के चरण स्पर्श को प्राप्त हुए हैं तब से अभी तक लगभग 63 गजरथ महोत्सव उनके पावन सानिध्य में सम्पन्न हुए हैं। 25 फरवरी सन् 1977 से आचार्य श्री ने द्रोणगिरि तीर्थक्षेत्र पर प्रथम गजरथ महोत्सव सम्पन्न हुआ था। प्रायः सभी गजरथ महोत्सवों में आ.मा. विद्वत परिषद् के सम्मेलन होते हैं। कई गजरथों में दीक्षायें भी हुई हैं। इनमें नैनागिर के गजरथ में फरवरी सन् 1987 में 11 आर्यिका दीक्षा व 12 क्षुल्लक दीक्षा सम्पन्न हुई थीं।

सन् 1993 में 25 जनवरी को 25 आर्यिका दीक्षायें तप कल्याणक के दिन हुई थी। सन् 1990 नरसिंहपुर में 7 आर्यिकायें दीक्षायें हुई। युवा सम्मेलन का सर्वप्रथम प्रयोग 2015 गढ़ाकोटा के गजरथ में हुआ। इस युवा सम्मेलन में लगभग 5 हजार युवकों ने उत्साह पूर्वक उपस्थिति प्रदान की। तथा सन् 1993 सागर के गजरथ में तीर्थ रक्षा सम्मेलन भी अनूठे तरीके से आयोजित हुआ था।

पूज्य आचार्य श्री ने सदैव प्रदर्शन : की भावना से दूर रहकर धर्म संस्कृति एवं समाज की हित के लिए आयोजन किये है चाहे वह मुक्तागिरि का विधिवेत्ता सम्मेलन हो चाहे कोई मण्डल विधान हो इन सबके पीछे श्रमण परम्परा की पहचान को उल्लेखित करने का प्रयास किया है आचार्य श्री ने सिर्फ भीड़ इकट्ठी करने के लिए कार्य नहीं किया किन्तु संयोग की बात है कि आचार्य श्री के आयोजनों में भीड़ भारी भरकम रही है किसी भी आयोजन में आचार्य श्री ने केवल बाहर नहीं बोला है अपितु उन्होंने भीतर डूब कर अपनी बात रखी है सरलमन से रखी हुई बात किसी भी वर्ग को झकझोरने के लिए काफी होती है। जब भी कोई अभियान देश समाज व व्यक्ति के हित के लिए चलाया जाता है तो वह सदैव सफल होता है।

पूज्य आचार्य श्री पचास वर्ष की साधना में उनके द्वारा चलाये गये हर अभियान को समाज ने अपने सर माथे लेते हुए उसके पीछे चलने का प्रयास किया है। परम प्रभावक आयोजनों का लक्ष्य स्वयश कामना नहीं रहा है। अपितु संस्कृति अत्थान की परम भावना अंतरंग में होने से आचार्य श्री का हर आयोजन नील का पत्थर बना है और हर आयोजन ने कीर्तिमान स्थापित किये है अतः आचार्य के आयोजन समायोजन को आदर्श मानकर यदि भविष्य में भी अनुकरण किया जायेगा तो श्रमण संस्कृति चिरस्थायी होगी। धन्यवाद

आचार्य विद्यासागर जी के चिन्तन में ''पुण्य'' हेय कब ? और क्यों ?

❊ एलक सिद्धांत सागर महाराज ❊

जो आत्मा को पवित्र करता है या जिससे आत्मा पवित्र होता है वह पुण्य है । **पुनात्यात्मानं पूयतेऽनेनेति वा पुण्यम् । सवार्थ सिद्धि एवं राज वार्तिक 6/314** आचार्य जयसेन जी के शब्दो में दान पूजा षडावश्यकादि रूप जीव के शुभ परिणाम भाव पुण्य हैं तथा प्रवचन सार की 181 वी. गाथा में **शुभ परिणामों पुण्णं** शुभ परिणाम को पुण्य कहा है। धर्म परीक्षा के 114 श्लोक में पूजा, भक्ति, दया, दानादि शुभ क्रिया रूप व्यवहार धर्म पुण्य है। इन सभी ग्रन्थों में पुण्य का लक्षण, पूजा, दान आदि षडकर्मों को सुनिश्चित किया है इनके माध्यम से जीव शुभ भाव को प्राप्त होकर भाव पुण्य की ओर अग्रसर होता है । परमार्थ की दृष्टि से पुण्य और पाप समान हैं क्योंकि इन दोनों में राग भाव प्रशस्त और अप्रशस्त रूप से होता है दोनों की समानता बताने के लिए आचार्य कुन्द कुन्द देव ने पुण्य को सोने की बेड़ी और पाप को लोहे की बेड़ी कहा है।

सोवण्णियं पि णियलं बंधदि कालायसं पिजह पुरिसं।
बंधदि एवं जीवं सुहमसुहं वा कदं कम्मं ॥146॥ समयसार

इसी आशय का प्रकरण योगसागर की 72 वी. गाथा और प्रवचन सार की 77 वी. गाथा में प्राप्त होता है तथा पुण्य और पाप दोनों से ही कर्म का बन्ध शुभाशुभ के रूप में होता है तथा दोनों का हेय मानने का कारण राग परिणाम है। परन्तु श्रमण और श्रावक की निचली अवस्था में आर्त्त रौद्र ध्यान से बचने के लिए एवं विषय कषायों से विरक्ति पाने के लिए पुण्य का अनुसरण करना कथञ्चिज इष्ट होता है। पुण्य के लिए कथञ्चित इष्ट मानते हुए कई आचार्यों ने पुरुषार्थ पूर्वक पुण्यार्जन की प्रेरणा दी है।

पुण्यार्जन की प्रेरणा जिन आचार्यों ने दी है उनमें स्वामी कार्तिकेय, शिवकोटि आर्य, जयसेनाचार्य, ब्रह्मदेव सूरि, आचार्य पद्मनन्दि, आचार्य गुणभद्र, मुख्य रूप से हैं । तथा कुरलकाव्य में भी पुण्य की प्रेरणा देने का सफल प्रयास किया है। आत्मानुशासन के 23,31, 37 इन तीन काव्यों के माध्यम से कहा गया है कि विद्वान मनुष्य आत्म परिणाम को ही पुण्य और पाप का कारण बतलाते हैं इसलिए अपने निर्मल परिणाम के द्वारा पूर्वोपार्जित पाप की निर्जरा, नवीन पाप का निरोध और पुण्य का उपार्जन करना चाहिए। हे भव्य जीव ! तू पुण्य कार्य को कर क्योंकि पुण्यवान् प्राणी के ऊपर असाधारण उपद्रव भी कोई प्रभाव नहीं डाल सकता है । उल्टा ही वह उपद्रव उसके लिए सम्पत्ति का साधन बन जाता है इसलिए योग्य अयोग्य कार्य का विचार करने वाले श्रेष्ठ जन भले प्रकार से विचार करके इस लोक सम्बन्धी कार्य के विषय में विशेष प्रयत्न नहीं करते हैं किन्तु आगामी भवों को सुन्दर बनाने के लिए ही वे निरन्तर प्रीति पूर्वक अतिशय प्रयत्न करते हैं।

स्वामी कार्तिकेय अनुप्रेक्षा में (437 गाथा) कहा है प्राणियों में धर्म और अधर्म का अनेक प्रकार का माहात्म्य प्रत्यक्ष देखकर धर्म का आचरण करो और पाप से दूर ही रहों

इय पच्चक्खं पेच्छइ धम्माहम्माण विविहमाहप्पं।
धम्मं आयरह सया पावं दूरेण परिहरई॥ 437॥

भोग मूलक पुण्य का निषेध आचार्य श्री ने किया है किन्तु योग मूलक पुण्य का निषेध पूज्य श्री ने कभी नहीं किया हैं । एकान्त से क्योंकि पुण्य का निषेध करने वालों को एक बार पुनः विचार करना होगा कि सातावेदनीय का निषेध 13वें गुणस्थानवर्ति केवलज्ञानी के भी नहीं होता है। सातिशय पुण्य प्रशस्त राग वालें जीवों

को ही प्राप्त होता है इस पुण्य के कारण जीव इन्द्र चक्रवर्ती आदि का वैभव प्राप्त करके योग के साथ महाव्रत धारण करके मोक्ष को प्राप्त करता है। इसलिए पुण्य मोक्षमार्ग में एकान्त से बाधक नहीं है अपितु मोक्षमार्ग में साधक ही बनता है यह बात अलग है कि सम्पूर्ण कर्म क्षय -रूप मोक्ष प्राप्त करने में पुण्य बाधक है।

पुण्य चार प्रकार का होता है 1. पुण्य कर्म प्रकृति 2. पुण्य का फल 3. आवश्यक क्रिया रूप पुण्य 4. भाव पुण्य (प्रशस्त राग रूप पुण्य)

प्रकृति रूप पुण्य का आश्रव 13 वे गुणस्थान तक होता है तथा सातिशय पुण्य का अश्राव तो चतुर्थ गुणस्थान से प्रारम्भ होता है। इस पुण्याश्रव को बुद्धि पूर्वक गुणस्थान क्रम से कोई भी रोकने में सक्षम नहीं है । किन्तु शुद्धापयोगी जीवों के भी सातिशय पुण्य का बंध चतुस्थानीय रूप होता है।

पुण्य का फल भोग रूप होता है। मोह के साथ जो पुण्य के फल को भोगता है वह मोक्षमार्ग से च्युत होता है किन्तु जो पुण्य का फल योगरूप होता है वह अरहन्त अवस्था को प्राप्त करता है । इसलिए आचार्य कुन्द कुन्द देव प्रवचन सार ग्रन्थ में गाथा 45 में **पुण्यफला अरहन्ता** कहा है । आचार्य जयसेन जी ने इसकी व्याख्या करते हुए कहा है। **पंच महाकल्याणक पूजा जनकं त्रैलोक्यविजयकरं थत्तीर्थकरनाम पुण्यकर्म तत्फलभूता अर्हन्तो भवन्ति ।** पंचमहाकल्याणक पूजा के जनक तीन लोक के विजय करने वाली तीर्थंकर नाम जो पुण्यकर्म है उसका फल अरहन्त होता है।

देवपूजा आदि आवश्यक कर्म सम्यक्तव वर्धिनी क्रिया के अन्तर्गत आते हैं । इनसे सम्यक्तव की उत्पत्ति एवं वृद्धि होती है और इससे ही मोक्षमार्ग का प्रारम्भ होता है । नियमसार में कुन्दकुन्द देव ने कहा है जो आवश्यकों की उपेक्षा करता है वह बहिरात्मा होता है कहा है-

आवासएण जुत्तो समणो सो होदि अंतरंगप्पा।
आवासयपरिहीणो समणो सो होदि बहिरप्पा॥ 149॥

जो आवश्यकों से युक्त होता है वह श्रमण अन्तरात्मा होता है तथा आवश्यक से रहित श्रमण बहिरात्मा होता है। श्स गा. के आधार पर यह कहा जा सकता है कि क्रियारूप पुण्य या पुण्य की क्रिया हो हेय नहीं कहा जा सकता है।

प्रशस्त राग रूप पुण्य निचली भूमिका में बुद्धि पूर्वक त्याग नहीं किया जा सकता है । प्रशस्त राग रूप पुण्य का त्याग किया नहीं जाता है अपितु शुद्धोपयोग में पहुँचने के बाद स्वयमेव ही छूट जाता है।

अब इन चार प्रकार के पुण्यों की निष्पक्ष समीक्षा करने के बाद हम इस निर्णय पर स्थिर होते हैं कि पुण्य फल का त्याग करने वाला आवश्यक कर्म अर्थात् क्रिया रूप पुण्य में लीन हो जाता है तथा ज्ञान और वैराग्य के पथ पर चल पड़ता है और वह पीछे मुड़कर नहीं देखता है कि कौन सी पुण्य प्रकृति का बंध हो रहा है और कौन सी पुण्य प्रकृति का बंध नही हो रहा है। अपितु वह तो निर्विकल्प समाधि में लीन होकर भावपुण्य रूप प्रशस्त राग से अपना नाता तोड़ लेता है।

पुण्य हेय की मीमांसा करते समय हमें यह याद रखना होगा कि प्रशस्त राग रूप भाव पुण्य एवं फल के भोगने की आकांक्षा को सर्वज्ञ प्रथम हेय जानकर उनसे नाता तोड़ना होगा। किन्तु क्रियारूप पुण्य एवं पुण्य प्रकृति रूप, द्रव्य पुण्य के प्रति माध्यस्थता बनानी होगी । मैत्री, प्रेम, करूणा, और समता रूप पुण्य के भाव को सदैव अपनाना होगा। यदि हम इससे विपरीत क्रिया रूप पुण्य और पुण्य की भावना को हेय मानेंगे तो निश्चित तौर पर मोक्षमार्ग से विपरीत चले जायेगें।

अतः हम कह सकते है कि पुण्य हेय के विषय में सर्वप्रथम पुण्य के फल को हेय मानना होगा तथा साधना के क्रम में आगे बढ़ते हुए प्रशस्त राग को रूचि पूर्वक, निर्वाहित करना होगा। यह प्रशस्त राग स्वतः ही साधना के स्तर बढ़ने पर हेय हो जायेगा।

आचार्य विद्यासागर जी के चिन्तन में शुभोपयोग औदयिक भाव नहीं

❊ ब्र. सविता दीदी (पिपरई) ❊

कर्म के उदय से होने वाले भाव या परिणाम को औदयिक भाव कहते हैं, कर्म का उदय जीव के परिणामों पर प्रभाव डालता है। शुभोपयोग और अशुभोपयोग का सम्बन्ध कर्म के क्षयोपशम और उदय से है। शुभोपयोग, अशुभोपयोग का निर्धारण मोहनीय कर्म के क्षयोपशम और उदय से होता है । मोहनीय कर्म की विशिष्ट क्षयोपशम दशा में जब अरहन्तादि पंच परमेष्ठी के प्रति भक्ति और दया, करूणा का परिणाम होता है तब जीव के शुभोपयोग रूप परिणाम होते हैं । एवं मोह कर्म के विशेष उदय से पांच इन्द्रियों के विषय एवं कषाय के प्रति अवगाढ़ता होने से एवं दुष्ट गोष्ठियों के साथ, दुःश्रुतियों का समावेश होने से उग्र और उन्मार्गी हो जाने पर अशुभोपयोग होता है। यह अशुभोपयोग और शुभोपयोग की स्थिति मोह की धारा से ही नियन्त्रित होती है अर्थात् मिथ्यात्व के उदय के साथ जो कुछ भी क्रियायें की जाती हैं वे सब अशुभोपयोग रूप होती हैं। भले ही वे क्रियायें शुभ क्यों न हों ? परन्तु वे अशुभोपयोग के खाते में ही आती हैं। तथा सम्यक्त्व के साथ मिथ्यात्व के उपशम, क्षय, क्षयोपशम के साथ जो भी क्रियायें होती हैं वे सब शुभोपयोग के खाते में समायोजित हो जाती हैं।

शुभोपयोग में दान-पूजादि की क्रिया मुख्य होती है अतः यह सोचना होगा कि पूजन-दानादि, के पुण्य भाव जो उत्पन्न हुए हैं वे किसी पुण्य कर्म की प्रकृति के उदय से यदि उत्पन्न हो तो उन्हें औदयिक भाव कहा जायेगा, अव यदि कोई कहे पूजनादि का भाव अन्तराय कर्म के उदय से होता है, औदयिक कहा जायेगा किन्तु दानादि की क्रिया तो अन्तराय कर्म के क्षयोपशम से ही सम्भव होती है। पुण्यकर्म की प्रकृतियों के उदय यदि शुभोपयोग रूप परिणाम उत्पन्न होते माना जाये तो वह कौन सी प्रकृति होगी जिसके उदय से दानादि के भाव जीव में उत्पन्न हों। यदि साता वेदनीय के उदय से पूजनादि का भाव उत्पन्न होना माना जाये तो साता वेदनीय का उदय दान-पूजादि के भाव का नियामक कारण नहीं है। साता वेदनीय के उदय में विपरीत परिणाम भी देखे जाते हैं अब वह हमें पुण्य कर्म की प्रकृति खोजना होगी जिसके उदय में दान पूजा आदि के भाव उत्पन्न हों। यदि समस्त शोध के उपरान्त भी निर्बाध रूप से कोई भी पुण्यकर्म की प्रकृति दान-पूजादि भाव को

उत्पन्न करने मे समर्थ नजर नहीं आती है तो फिर शुभोपयोग को औदयिक भाव कहना कैसे सम्भव होगा ?

पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी ने शुभोपयोग को क्षयोपशम भाव निरूपित करते हुए सदैव प्रवचन सार के द्वितीय अध्याय की 65वी गाथा की तत्त्व प्रदीपिका को विद्वानों के सामने प्रस्तुत की है जिसमें कहा गया है जिस जीव के दर्शन मोहनीय अथवा चारित्र मोहनीय कर्म की विशेषता रूप क्षयोपशम अवस्था हुई हो और शुभ राग का उदय हो, उस जीव के जो भक्ति पूर्वक पंच परमेष्ठी के देखने, जानने, श्रद्धा करने रूप परिणाम होवें , तथा सब जीवों में दयाभाव हो यही शुभोपयोग का लक्षण जानना चाहिये।

विशिष्टक्षयोपशम दशाविश्रान्त दर्शन चारित्र मोहनीय पुद्गलानुवृत्ति परत्वेन परिग्रहीत शोभनोप रागत्वात् परम भट्टारक महादेवाधि देव परमेश्वरार्हत्सिद्ध साधु श्रद्धाने समस्त भूत ग्रामानुकम्पाचरणे च प्रवत्ताः शुभ उपयोगः ॥65॥

उक्त संस्कृत टीका के अनुवाद में दो धारायें उपलब्ध हुई हैं एक धारा ने जिसका अनुवाद पं. परमेष्ठी दास जैन ने किया है तथा सोनगढ़ से इसका प्रकाशन हुआ है इसके अनुवाद में शुभोपयोग को क्षयोपशम भाव स्वीकार दिया गया है किन्तु श्रीमद रायचन्द्र ग्रन्थमाला से प्रकाशित प्रवचन सार में क्षयोपशम दशा न होने पर लिखा है इससे यह सिद्ध होता है कि क्षयोपशम दशा विश्रान्त का सन्धि विग्रट दशा अविश्रान्त कर दिया है जबकि विशिष्ट क्षयोपशम दशा-विश्रान्त का संधिविग्रह दशा+विश्रान्त के रूप में होना चाहिए। इससे शुभोपयोग क्षयोपशम भाव सिद्ध होता है। शुभोपयोग को औदयिक भाव मानना एक बहुत बड़ी मूल भरा निर्णय है। परीक्षा करने पर किसी भी तर्क अथवा आगम प्रमाण से शुभापयोग औदयिक भाव सिद्ध नहीं होता है। तथा शुभोपयोग चतुर्थ गुणस्थान से प्रारम्भ होने के कारण इस शुभोपयोग को औदयिक भाव किसी रूप में नहीं माना जा सकता है। तथा शुभोपयोग मोह के उदय से कभी नहीं होता है । शुभोपयोग तो मोह से परे भाव का नाम हैं क्योंकि दर्शन मोह की सर्वधाती प्रकृति के उदय होने पर अशुभोपयोगी ही होता है और शुभोपयोग दर्शन मोहनीय एवं चारित्र मोहनीय के क्षयोपशम से ही होता है।

कई विद्वानों की विचार धारा परिवर्तन की अपेक्षा रखती है जो शुभोपयोग को औदयिक भाव मानते हैं। मुझे विश्वास है आचार्य विद्यासागर जी के इस चिन्तन का सम्मान करते हुए वे अपनी धारणा अवश्य बदलेंगे।

संयम स्वास्थ्य योग

छोटी इलायची
Elettaria Cardamoman

पर्याय नाम- **हिन्दी-** इलायची, ऐला
गुजराती- इलायची, लाची, एलची
संस्कृत- सुचमेला, उपकुंचिका, वयःस्था, त्रुटि, कोरंगी
मराठी- वेलिची, बेल दोड़ा
अंग्रेजी- दिलेसर, काडमाम Thelesser Cardamom
लेटिन- ऐलोटेरिमा कार्डमोमस् Mk Elettaria Cardomoman

उत्पत्ति स्थान- दक्षिण भारत के मलावार, पश्चिमी घाट की पहाड़ी तरी उपजाऊजमीन में कुर्ग, कर्नाटक ट्रावन कोर, कोचीन, मदुरई, मैसूर एवं श्रीलंका के उपजाऊ जंगलों में स्वंय होती है। मलावार में इलायची सबसे अधिक होती है। रबर एवं चाय के प्रान्तों में इसकी खेती की जाती है। दार्जलिंग के पास कोलिंग पोंग में चार हजार फुट की ऊंचाई पर कालिंग पोंग में इसकी खेती ही जाती है। ब्रह्मदेश के जंगलों में भी होती है।जहां की जमीन तर एवं छायादार होती है एवं जमीन में पानी अच्छा होता है वहाँ पर इसकी उपज अच्छी होती है। पौधे अदरक के समान छोटे होते हैं। मलावार में कुहरा एवं समुद्र की शीतल वायु होने से इचालयी के पौधे बहुत पनपते हैं। अषाढ़ एवं सावन मास में यह फलती है। डोंडे हरे रंग के गुच्छों में लगते हैं। तीन मास पर्यन्त डोडे जब पक कर पीले रंग के हो जाते हैं तो इनके गुच्छे तोड़कर सुखा लिये जाते है। एवं सूखने पर मसल कर अलग अलग कर लिए जाते हैं।

उपयोगी अंग- बीज, तैल

गुण धर्म - इसका रस एवं विपाक कटु होता है यह शीतवीर्य, मधुर, हृदय, रूचिकर, सुगंधित, दीपन, लघु (हल्की) है। यह वमन, मूत्रकृच्छ, श्वांस, कास, क्षय, मंदाग्नि, तृषा, थूल, कोष्ठवद्धता, अर्श अश्मरी, हृदय रोग एवं हैजा में हितकर है। किन्तु कफ सर्दी एवं वातज रोगों में इसका प्रयोग नहीं करना चाहिए।

औषधीय प्रयोग- 1. इलायची का चूर्ण 300 मिली. ग्राम, हींग 100 मिली ग्राम, घी 10 मिली ग्राम, दूध 200 ग्राम, मिलाकर पीने से सभी तरह के हृ दय रोग, रोग श्वांस रोग, श्वेत प्रदर, एवं रक्त प्रदर, अम्ल पित्त आदि रोगों में लाभ होता है। यह प्रयोग एक मास या इससे भी अधिक समय तक लगातार करें।

यह प्रयोग तबियत को ठीक कर मन को प्रफुल्लित करती है। यह कंठस्भ एवं उदस्थ वायु प्रकोप का पाचन कर मस्तिष्क एवं हृदय को बल पहुंचाती है।

2. वमन (उल्टियाँ होने पर) इलायची का फांट या अवलेह उत्तम कार्य करता है। इसकी क्रिया आमाशय एवं उदान वायु दोनों पर ही कार्य करती है। कफ प्रधान वमन में छिलके सहित इलायची को जलाकर उसकी मस्म 50 मिली ग्राम चासनी साथ चांटने से शीघ्र लाभ होता है।

3. मूत्र की रूकावट एवं पेट के अफारा को दूर कर आमाशय के दोषों को दूर कर डकार लाती है भूख बढ़ाती है। सभी औषधी उपयोगों में बड़ी इलायची की अपेक्षा छोटी इलायची अधिक लाभ प्रद है।

4. इलायची बीजों के चूर्ण को अनार के रस के साथ देने से वमन (उल्टियों) एवं हैजा में लाभ होता है।

5. 5 इलायची छिलके सहित तरबूज बीज 10 ग्राम पीसकर 200 ग्राम दूध में उबाल कर (मंद

आंचने) ठंडा होने पर सेवन करें। यह पेशाब की जलन में लाभप्रद है। यह मूत्रवह स्त्रोतों का शोधन कर समस्त मूत्र रोगों में लाभप्रद है।

6. इलायची चूर्ण 3 ग्राम बंसलोशन चूर्ण 5 ग्राम (कपड़धान किया हुआ) सुबह शाम दूध के साथ सेवन करने से अस्थियों (हड्डियों) Bones की कमजोरी दूर होती है। दूध एवं वंशलोशन दोनों में प्रचुर मात्रा में कैलशियम होता है। अतः यह अस्थियों (Bones) के कैलशियम की कमी को दूर करता है एवं सुदृढ़ बनाता है। उत्तम टानिक है। गर्भावस्था में लाभप्रद है।

7. इलायची को छिलके सहित चबाकर खाने से, दांत एवं मसूडे मजबूत होते हैं, एवं मुख की दुर्गन्ध दूर होती है।

8. इलायची को पीसकर जोर से सूंघने (नस्य लेने)से वातजन्य सिर की पीड़ा दूर होती है। यह अपस्मार एवं मूर्च्छा में भी लाभप्रद है।

9. इलायची, दालचीनी एवं तेजपत्र को समभाग लेकर चूर्ण करें 1-1 ग्राम दिन में 3-4 बार चांटने पर सभी प्रकार की वमन में लाभ होता है। गर्भावस्था में लाभप्रद है।

10. इलायची, सुगंधवाला एवं नागर मोंथा को समभाग चूर्ण कर चासनी के साथ चांटने चाहिए। यह बच्चों को अतिसार वमन एवं दंतोदमव की पीड़ा में लाभदायक है। दंतोदमव के समय यह चूर्ण घी में मिलाकर मसूड़ों पर मालिश करने से दांत आसानी से निकल आते हैं। पीड़ा कम होती है। मात्रा 25 मिली ग्राम दिन में 3-4 बार बच्चों को चांटना चाहिए।

11. इलायची 500 मिली ग्राम खसखस 250 मिली ग्राम जावित्री 100 मिलीग्राम बादाम 5 नग को महीन पीसकर नित्य सुबह शाम दूध के साथ सेवन करें। यह वलवीर्य वर्धक है। प्रयोग 2 माह तक लगातार करें। इससे मस्तिष्क एवं नेत्रों की उष्णता दूर होती है। नेत्र ज्योति बढ़ती है। उत्तम टानिक है।

12. सूखी खांसी पर-वायु वृद्धि शुष्क कास हो जाए तो इलायची छिलके सहित जलाकर उसकी मस्म करें। इस मस्म को घी एवं चासनी मिलाकर बार बार चांटकर खाने से शीघ्र लाभ होता है। जब जब खांसी का ठसका लगे उसी समय इस का सेवन अति लाभप्रद है ।

13. श्वांस एवं कफ जन्य खांसी पर - इलायची चूर्ण में समभाग सोंठ का चूर्ण मिलाकर लेने से लाभ होता है। इससे कफ बाहर निकल लाता है। इससे कफ बाहर निकल जाता है। एवं खांसी के वेग कम हो जाते हैं । श्वांस मार्ग में बात प्रकोप होने से प्राण वह स्त्रोतों का संकुचन या निरोध होने से लगता है। तब इलायची चूर्ण अपने श्वांस हर एवं वातशामक प्रभाव से कार्य कर रोगी को शीघ्र लाभ पहुँचाता है। गर्भावस्था प्रसूतिका के लिए भी लाभप्रद है।

14. इलायची, तेजपत्र, सोंठ, खस, छोटी पीपल, (लेड़ी पीपल) मारंगी, तुलसी, अगर, चन्दन समभाग ले महीन चूर्ण करें। समभाग मिश्री मिलाकर जल या दूध के साथ सेवन करें। शीघ्र लाभ होता है।

15. इलायची, पीपलमूल एवं पटोल पत्र समभाग लेकर चूर्ण करें। 300 से 500 मिली ग्राम तक घी के साथ सेवन करने से लाभ होता है। यह प्रयोग भी श्वांस, कास, ज्वर आदि में लाभप्रद है। ज्वर आंत्रिक ज्वर आदि के बाद की कमजोरी दूर करता है।

इलायची तेल- 1. सिरदर्द में इस तैल की मालिश करने से सिरदर्द ठीक होता है। 2. कान में डालने से कान दर्द ठीक होता है। 3. आंखों में आंजने से रतौंधी दूर होती है, नेत्र ज्योति बढ़ती है।

विशिष्ठ योग :- एलादि चूर्ण एवं एलादि वटी श्वांस कास में लाभप्रद, एलादि मोदक एवं एलादि पाक वलवीर्य वर्धक

आचार्य विद्यासागर के सानिध्य में युवा सम्मेलन

❊ ब्र. जिनेश मलैया इन्दौर ❊

आचार्य विद्यासागर महाराज एक ऐसे संत है जिनके पीछे युवा समाज सदैव उत्साह के साथ चला है पूज्य आचार्य विद्यासागर जी ने युवा शक्ति के लिए खूब प्रोत्साहन दिया उन्होंने समय समय पर युवाओं का मार्गदर्शन किया तथा संस्कृति रक्षा एवं राष्ट्र की स्थिति को संस्कृति सापेक्ष बनाने के लिए युवा शक्ति के लिए संबोधित किया युवाओं को नौकर बनने की अपेक्षा मालिक बनने की सलाह दी तथा युवतियों को नौकरानी बनने की अपेक्षा बहुरानी बनने का सूत्र वाक्य दिया पूज्य आचार्य श्री ने भारतीय संस्कृति के स्तंभ स्वभाषा एवं मातृ भाषा को अपने प्रयोग में लाने के लिए तथा मातृ भाषा स्वभाषा से अहिंसा संस्कृति की रक्षा करने के लिए आधार माना । उन्होंने कहा कि लोकतंत्र की रक्षा स्वभाषा से भी हो सकती है। स्वभाषा के बिना राष्ट्र की स्वतंत्रता हमेशा खतरे में होती है विदेशी भाषाओं के माध्यम से हमारी पीढ़ी भटक जाती है प्रेम और करूणा जैसे मानवता के आधार स्वभाषा के बिना मजबूत नहीं हो सकते हैं।

5 नवम्बर सन् 1990 मुक्तागिरि में पूज्य आचार्य श्री के सानिध्य मे एक युवा सम्मेलन हुआ जिस युवा सम्मेलन में तीर्थ रक्षा की पवित्र भावना एवं दिगम्बरत्व के रक्षार्थ आह्वान किया गया परिणाम स्वरूप दिगम्बर जैन युवक संघ का गठन ब्रह्मचारी सुमन के माध्यम से हुआ । दिगम्बर जैन युवक संघ सक्रिय हुआ तथा जाति पंथ मिशन की भावना से ऊपर उठकर युवा शक्ति को संगठित करने का महान कार्य हुआ। युवा सम्मेलन का क्रम आचार्य श्री के सानिध्य में गतिशील रहा सन् 1993 में सागर ही पवित्र भूमि पर तीर्थ रक्षा हेतु विशाल युवा सम्मेलन किया गया इस सम्मेलन में दिगम्बर तीर्थों पर होते निरन्तर आक्रमणों के प्रति युवाओं को जागरूक किया गया तथा इससे पहले नागपुर के चिटनीस पार्क में हजारों युवकों को सम्बोधित करते हुए पूज्य श्री ने दिगम्बर जैन संस्कृति के मूल्य को रेखांकित किया तथा युवको के मन और मस्तिष्क में दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति के प्रति हो रहे आघातों का कारण सोती हुई युवा शक्ति को परिलक्षित किया एवं युवा वर्ग के लिए अपनी शक्ति पहचानने के लिए आह्वान किया

सन् 2015 में 2 दिसम्बर की दोपहर को अमर शहीद साबूलाल जैन की जन्मभूमि गढ़ाकोटा मे विशाल युवा सम्मेलन आयोजित किया गया जिसे आचार्य श्री ने सम्बोधित करते हुए कहा हमारे युवाओं को स्वरोजगारी बनना चाहिए। एवं अपने आचरण से सादगी और स्वदेशी पना सिद्ध करना चाहिए।

कृषि को अपनाकर हथकरघा जैसे स्वरोजगार मूलक आजीवका के संसाधनों का लक्ष्य बनाना चाहिए जैन धर्म की अहिंसा को व्यवहारिक रूप से समझना चाहिए। भगवान आदिनाथ के द्वारा बताये गये अजीवका उपार्जन के साधनों में कृषि वाणिज्य शिल्पकला मुख्य है इस संवदेन को विश्वहिन्दु परिषद् के अंतराष्ट्रीय उपाध्यक्ष हुकुमचंद्र सांवला ने अपने सम्बोधन में कहा हमारे युवको को भी गम्भीर बनना चाहिए तथा सेनापति आबू की कहानी सुनाकर यह बताया की हमें अहिंसा के नाम पर कायन नहीं बनना चाहिए सदैव ईमानदार जिम्मेदार और बहादुर बनना चाहिए। ऐलक श्री सिद्धांत सागर जी ने इस युवा सम्मेलन को प्रमुखता से संबोधित किया उन्होंने अपने संबोधन के माध्यम से युवाओं के विवाह न होने की समस्या को प्रमुखता से उठाया तथा नौकरी और शहर की बढ़ती रूचि को युवाओं की गम्भीर समस्या बताया।

विभिन्न युवा सम्मेलनों के माध्यम से इन विषय पर गम्भीर विचार किया गया । पाठकों की दृष्टि में हम उन विषयों को भी रखना चाहते है। जिन पर सदैव ऊहापोह होता रहा है वे विषय इस प्रकार है।

1. युवा वर्ग व्यसन मुक्ति आवश्यकता
2. कैसे बनता है युवा व्यसनी
3. क्यों बनें युवा समाज सेवी
4. परिवार समाज राष्ट्र और युवा
5. आधुनिकता की परिभाषा और व्यापकता
6. पाश्चात्य सांस्कृति विकृति क्यों अपनायें हम
7. व्यक्तित्व युवा वर्ग में आवश्यकता
8. राष्ट्र भक्ति और युवा
9. संस्कृति रक्षा और युवा वर्ग
10. संस्कार निर्माण में युवा वर्ग की भूमिका
11. बेब साइट्स और युवा वर्ग में बढ़ते अपराध
12. युवा वर्ग और रोजगार की समस्या
13. आसामाजिक तत्व और धर्म समाज रक्षा की समस्या
14. युवा मन के प्रवेश अभक्ष्य आहार
15. जैनत्व के आधारभूत नियम
16. जैन दर्शन का न्यूनतम पाठ्यक्रम की युवा वर्ग में आवश्यकता
17. फैशन पहनावा और युवा वर्ग
18. वीडियोगेम से मानसिक विकृतियां
19. युवा कैसे बनता है अपराधी
20. बहादुर ईमानदार जिम्मेदार युवा कैसे बने
21. देव दर्शन से दूर खड़ा होता युवा
22. युवा वर्ग में विवाह की समस्या और समाधान
23. युवा वर्ग में बढ़ती विवाह विच्छेद की बीमारी
24. महिला वर्ग के प्रति युवा वर्ग का कैसा हो सोच
25. कैसे आये संकट सहने की क्षमता
26. कैसे आये युवा वर्ग में सदभावनाएँ
27. जैन युवा कौन सा अपनाये करियर
28. युवा वर्ग कैसे करे करियर का चुनाव
29. तीर्थ रक्षा और युवा वर्ग
30. युवा वर्ग में स्वाध्याय की आवश्यकता
31. युवा वर्ग और सकरात्मक सोच
32. क्यों बनता है विद्रोही युवा
33. त्याग और बलिदान युवा मन की प्रकृति
34. क्यों होता है धर्मशून्य युवा
35. धर्म उत्थान में युवा वर्ग की भूमिका
36. युवा वर्ग के उत्थान के आधार
37. कैसा हेा आदर्श युवा
38. जोश होश का समन्वय करे युवा
39. राष्ट्र शक्ति युवा शक्ति
40. युक्ति शक्ति भक्ति मय बनें युवक
41. युवा वर्ग और अनुशासन की समस्या
42. कैसे करें युवा वर्ग समय प्रबंधन
43. कैसे हो अंधविश्वास से मुक्त युवा समाज
44. समझदार युवा
45. वृद्ध सम्मान युवा समग्र उन्नति का आधार
46. शक्ति संचय सूत्र परिवार भावना
47. युवा वर्ग की पहचान समझौता
48. आत्म विश्वास की निहित युवा वर्ग की सफलता
49. सदिश उड़ान युवा की पहचान

युवा सम्मेलन के माध्यम से श्रमण संस्कृति की रक्षा का अभियान पूज्य आचार्य श्री की चिरस्थायी देन है जिसे कई युगों तक भुलाया नहीं जा सकता है।

कविता

बेचारा ! बड़ी स्पीड से चला गया

रचियताः वीरेन्द्र भूपत (कठाली बाजार, सिरोंज)

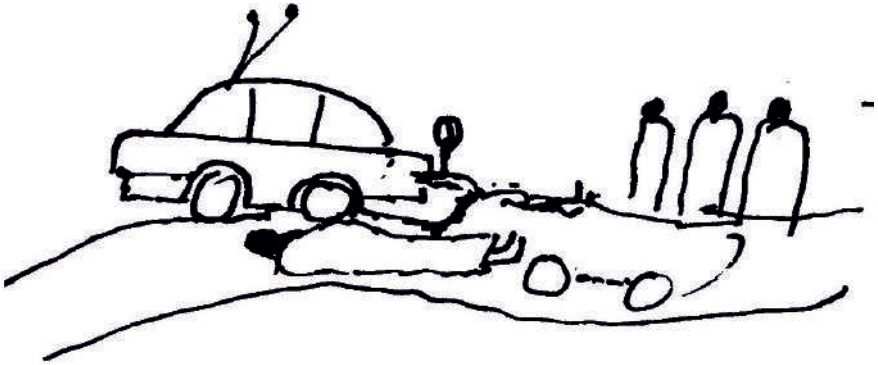

मैं सड़क किनारे जा रहा था।
बाईक सवार बड़ी तेजी से मेरे पास से निकल गया।।
स्पीड से अपने गन्तव्य की ओर।।

दुबारा फिर मुझे वह मिला।
मैंने उसे रोका पूछा इतनी तेज कहाँ जा रहे हो ?
वह बोला आपको क्या आप तो पैदल चलने वाले हो।
मैंने कहा हाँ और वह चला गया।

तीसरी बार जब वह मिला तो मैंने पूछा क्या करते हो ? वह बोला
हम तेज चलने वाले लोग है आपकी और हमारी बराबरी कहाँ है।
मैंने कहा हाँ ..... और वह उसी स्पीड में चला गया।

जब मैं अपने गंतव्य की और पहुँचा
तो भीड़ देख पूछा क्या हुआ ?
तब मालूम पड़ा बड़ी स्पीड में था।
बेचारा स्पीड से चला गया।

वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली और उसके साइड इफेक्ट

❊ डॉ. मुकेश जैन विमल (दिल्ली) ❊

किसी भी देश के नागरिकों का शिक्षित होना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शिक्षा के अभाव में न तो व्यक्तिगत विकास का होना सम्भव है और न ही देश के विकास की कल्पना की जा सकती है।

भारत एक बहुत बड़ा देश है। इसको स्वतन्त्र हुये लगभग 70 वर्ष पूण हो चुके हैं, किन्तु शिक्षा की जो वर्तमान में दशा है वह प्रायः अंग्रेज सरकार की नीतियों का ही अनुसरण कर रही है। यही कारण है कि भारत देश का युवा वर्ग नौकरी की खोज में यत्र तत्र भटक रहा है और नौकरी के लिए उसे विदेश जाने में भी कोई परेज नहीं है। इस अर्थप्रधान युग में जब प्रायः सभी लोगों के लिए रुपया-पैसा किंवा -धन -दौलत ही प्रधान हो गई हैं। आवश्यकतानुसार न्यायपूर्वक धनोपार्जन करना बुरा नहीं है। न्यायपूर्वक धनोपार्जन के लिए धर्म भी कहीं बाधक नहीं है। कोई भी व्रती त्यागी आवश्यकतानुसार न्यायपूर्वक धनोपार्जन कर सकता है, किन्तु वर्तमान काल में छल-कपट, छीना झपटी, और चोरी-डकैती के माध्यम से धन का संचय किया जा रहा है तथा धन जिस प्रकार अन्याय और हिंसा आदि के माध्यम से आ रहा है। वैसे ही खोटे/गन्दे कार्यों में उसका व्यय भी हो रहा है। खोटे साधनों के द्वारा धन-दौलत कमाकर खोटे कार्यों में उसका दुरुपयोग करना आम बात है। इससे व्यक्ति का नैतिक पतन होता जा रहा है और आधुनिकता के बहाव में हमारी युवा पीढ़ी भटक रही है , खान-पान में बदलाव आ गया है। धर्म के प्रति आस्था शनैः-शनैः समाप्त होती जा रही है। धर्म गुरुओं की बातें उन्हें कपोल कल्पित उतीत हो रही हैं। मानसिक तनाव बढ़ता जा रहा हैं। और लोग आत्म हत्या के लिए बाध्य हो रहे हैं। यद्यपि आत्महत्या मानसिक तनाव का निदान नहीं है तथापि उचित मार्गदर्शन के अभाव में युवावर्ग निराश होता जा रहा है। कुंठा से ग्रस्त है और आत्म हत्या के लिए जाने अनजाने कदम उठा रहा है। यह सब देश की वर्तमान शिक्षा नीति का ही दुष्परिणाम है।

देश को शिक्षा नीति ऐसी होनी चाहिए, जिससे प्रत्येक युवा को / प्रत्येक हाथ को काम मिल सके। महात्मा गांधी कुटीर उद्योगों के पक्षपाती थे। वे कुटीर उद्योगों के माध्यम से गरीब और अमीर की खाई को मारना चाहते थे, जिससे गांवो में खुशहाली लौट सके। वे ऐसी शिक्षा चाहते थे कि हर परिवार को रोटी, कपड़ा और मकान सहज उपलब्ध हो सके।

विविध धर्मों, विविध भाषाओं विविध परम्पराओं और विविध संस्कृतियों से समाचित हमारा भारत देश टूट रहा है। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ हमारा बृहत् भारत अपनी सांस्कृतिक विरासत को शनैः शनैः खो रहा है। जहाँ अतिथि द्वारा पानी मांगने पर दूध दिया जाता

था, वहा अब मुंहमांगा पैसा देने पर भी दूध की जगह पानी मिल रहा है। और दूध के नाम पर न जाने क्या क्या मिल रहा है। मरने के लिए शुद्ध जहर भी अब देश मे उपलब्ध नहीं है। देश में मिलावट का साम्राज्य फैल गया है। कालाबाजारी ने अपने पंख फैला लिये हैं। वस्तुओं के कृत्रिम अभाव के नाम पर जनता से अनाप सनाप पैसा ऐंठा जा रहा है। गरीब और अधिक गरीब होजा जा रहा है। सत्यता और ईमानदारी जैसे शब्द अब शब्दकोशों की शोभा बढ़ा रहे हैं। शास्त्रों की बातें केवल तत्कालीन मनः बदलाव का साधन बनती जा रही हैं।

उपर्युक्त सभी समस्याओं का एक मात्र समाधान है हमारी आध्यात्मिक चेतना का उत्थान, हमारी आत्मिक चेतना का विकास। और यह तभी सम्भव है जब हम इस देश की शिक्षा नीति इस प्रकार निर्धारित करें कि जिससे सबको शिक्षा और सबको काम का अधिकार मिल सके।

आज भारत देश की वर्तमान स्थिति को देखकर अनेक वीतरागी सन्त भी चिन्तित हैं कि इस देश को क्या हो गया है ? जिस भारत देश में ऋषियों, मुनियों, आचार्यों द्वारा लिखे गये नैतिक ग्रन्थों की भरमार है वही देश आज पतन के कगार पर खडा है। सर्वत्र मार-काट , लूटपाट और हिंसा का बोलबाल है। हमारे नीति निर्धारक नेता अपनी प्रतिष्ठा बचायें रखने के लिए चारों और से आंखे मूंदकर बैठे हैं और चिन्तित हैं तो केवल और केवल अपने और अपने वर्ग विशेष के लिए।

वर्ग विशेष का प्रमुख कैसे बनें ? इसके लिए चारों और हाथ-पैर मार रहे हैं। अनैतिकता उनका जीवन धर्म बन गया है। सत्त्वेषु व मैत्री का नारा कहीं खो गया है। वसु देव कुटुम्बकम की भावना विस्मृत हो गयी है। और अब कहीं है भी तो केवल शास्त्रों में। शास्त्रों से हम निरन्तर दूरी बनाये हुये हैं। भौतिकता का ऐसा जादू फैल गया है कि लोग अब उसी में जीना और उसी में मरना पसन्द कर रहे हैं। नैतिकता अब हमारे जीवन से पलायन कर रही है।

जैन धर्म भौतिकता को विरोधी नहीं है। जैनधर्म स्वयं स्वीकार करता है कि प्रत्येक अणु में अनन्त शक्ति है और उस शक्ति का लाभ जन सामान्य को मिलना ही चाहिए। नई नई टेक्नोलॉजी के माध्यम से लोगों को जो भौतिक सुख-सुविधायें उपलब्ध हो रही हैं उनका न केवल प्रचार-प्रसार होना चाहिए अपिक जनजन को मिलनी ही चाहिए। हाँ। भौतिकता के नाम पर जो वासनाओं का प्रचार-प्रसार हो रहा है , उसे रूकना चाहिए, रोका जाना चाहिए, जितना बाह्य प्रदूषण शरीर के लिए हानिकारक है उससे अधिक मानसिक प्रदूषण जन सामान्य के लिए हानिकारक है। आज इसी मानसिक प्रदूषण के कारण बलात्कार जैसी घटनायें दिनों दिन बढ़ती जा रही हैं। यह सब भौतिकता और पाश्चात्य संस्कृति का ही प्रभाव है।

जिस देश में उम्र के आधर पर माता, बहिन और बेटी का सम्बन्ध निर्धारित होता था वहाँ अब वासना के वशीभूत होकर लोग

उम्र का ख्याल किये बिना केवल स्त्री की दृष्टि से देखते हैं। जो भारतीय संस्कृति के लिये कलङ्क है। जिस देश की संस्कृति में नारी मात्र को पूज्य मानकर उसकी पूजा की जाती थी और नारा किया जाता था कि **-यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः** वहाँ अब नारी को केवल वासना की मूर्ति के रूप में देखा जाता है। और अवसर मिलते ही लोग उस पर अत्याचार करने के लिए टूट पड़ते हैं। आधुनिक भारत में स्त्री को व्यापार का एक अङ्ग मान लिया गया है। और लोगों को विविध प्रकार के विज्ञापनों में उसका दुरुपयोग करके जन सामान्य के लिए अश्लीलता पडोसी जा रही है। और बढ़ती उम्र के साथ ही किशोर उस ओर आकृष्ट हो रहे हैं जो घृणित है, हेय है।

इस देश में साधु सन्तों की कमी नहीं है और न ही सदुपदेश देने वालों की कमी है, किन्तु अब लोग हित की बात सुनना ही नहीं चाहते हैं। जो लोग हित की बात सुनते भी हैं तो वे उसको जीवन में उतारना नहीं चाहते हैं। और ऐसे लोग तो अंगुलियों पर गिनने लायक हैं जो हितकारी उपदेश सुनकर उसको अपने जीवन में उतारने का प्रयास भी करते हैं।

आज जैन साधुओं ने अपने आचार-विचार और नैतिक जीवन के माध्यम से एक माहौल बनाने का प्रयास किया है, किन्तु भारतदेश की जन संख्या को देखते हुये यह माहौल ऊँट के मुँह में जीरा की कहावत को चरितार्थ कर रहा है।

आज अशुद्धता हमारे जीवन का अङ्ग बन गया हैं जिससे चौंका की शुद्धि हमारे जीवन को स्वस्थ बनाने वाली एवं दीर्घायुष्य प्रदान करने वाली थी अब उस चौंके की अशुद्धता के कारण दुग्धपान में ही परम्परा से विविध बीमारियाँ मिल रही है। शिशु नौजवान होते होते विविध बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। माताओं-बहिनों के आलस्य के कारण ताजे नाश्ते के रूप में बाजार के बने सड़े-गले मसालों से तैयार चटपटे एंव जायकेदार खाद्यान्न उपलब्ध हो रहे हैं , जिन्हे फास्ट फूड के नाम से परोसा जा रहा है।

जो माताएँ-बहिने घर की जिम्मेदारी सम्हाल रहीं थी और गृहलक्ष्मी के रूप में प्रतिष्ठित थी वे अब ऑफिस में अपनी जिन्दगी का बहुभाग बिता रही हैं और बास की डाँट और भय से अपना मानसिक सन्तुलन खो रही हैं। असमय में वृद्धत्व का अनुभव कर रहीं है।

दुदमुँहे बच्चे निरक्षर और कूट स्वभाव वाली दाइयों के हवाले कर दिये जाते हैं। उनका बचपना छीन लिया जाता हैं। फलस्वरूप उनसे बचपन से ही माँ-बाप के प्रति एक विशेष प्रकार का आक्रोश पैदा हो जाता है। माँ बाप का कार्य केवल बच्चों को पैदा करना ही नहीं है , अपितु बच्चों की उचित परवरिश करना भी उनका दायित्व है। भौतिकता की चकाचौंध में अपने को खो देना और अपनों को खो देना एक फैदान बन गया है।

आज से दो-तीन दशक पूर्व तक पुरुष

बाहर की जिम्मेदारीयों को सम्हालते थे और माताएँ-बहिने घर की जिम्मेदारियाँ निभाती थी तथा पति-पत्नी और बच्चे खुश रहते थे। किन्तु वर्तमान में आपाधापी के कारण न घर सम्हाल रहा है और न बाहर। और अब धोबी के कुत्ते जैसी स्थिति हो रही है, जो न घर का रहता है और न घाट का। घर भी बिगड़ रहा है और बाहर भी। जिस देश का घर भी बिगड़े और बाहर भी तो उस देश का हश्र क्या होगा ? वह किसी से छिपा नहीं है गृहकलह अपनी चाम सीमा पर है। बच्चे अपने को उपेक्षित मान रहे हैं, और स्वच्छंदता पूर्वक अपना साथी चुन रहे हैं। क्योंकि उस साथी से उसे अपनापन मिलता है तात्कालिन प्यार भी, जो उसे बचपन में माँ-बाप से नहीं मिल पाया है। इससे युवक युवतियों का एकाकीपन भी दूर होता है। यद्यपि वे इसके दूरगामी परिणामों को भूल जातें हैं और जब वे लक्ष्य से भ्रष्ट होते हैं तब पछताते हैं, किन्तु ''अब पछतायें होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।''

आज जो वृद्धाश्रम खोले जा रहे हैं वे प्रायः उन्हीं दम्पतियों के लिए हैं जो अपने बच्चों की उपेक्षा के कारण स्वयं भी बच्चो से उपेक्षित हो रहे हैं। युवा पीढ़ी को दोष देना बहुत आसान है, किन्तु उसके मूल दों उनकी स्वयं की अपनी भूमिका कही न कहीं कारण अवश्य है। क्योंकि कारण के बिना कार्य नहीं होता हैं।

जीवन भी धन-दौलत की चाह न बच्चों को स्नेह दिया और न परिवार के लोगों को। सम्बन्धियों से तो प्रेम व्यवहार की कोई बात ही नही हैं। वे सब तो अजनबी जैसे लगते हैं। मौसी, बुआ, चाची, और कहीं माँ के रिश्ते एक शब्द आँटी में सिमट गये हैं। छोटे बड़े का भेद भुलकर भाभी जी शब्द में सब रिश्ते समाहित हो गये हैं। ताऊ-चाचा आदि शब्द अंकल के पर्यायवाची बन गये हैं। रिश्तों की मिठास शनैः शनैः दिलो दिमाग से पलायन कर रही है।

अब घरों में हम दो हमारे दों के फार्मूले ने मौसी का रिश्ता समाप्त कर दिया और मौसी नहीं तो मौसा कहाँ से आयेगा ? **स एव ज्येष्ठ स एव कनिष्ठ** ने चाचा ताऊ के रिश्तों को दफना दिया है।

दम्पती में से किसी एक के बाहर जाने पर सूनापन महसूस होने लगता है और उसके आने की प्रतीक्षा सदैव बनी रहती है। आकस्मिक स्थिति आने पर सब बिखरा बिखरा प्रतीत होने लगता है और हम अन्तिम साँसे गिनने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली के ये वे साइड इफेक्ट हैं जो हमें घुट घुटकर जीने के लिये बाध्य करते हैं, और हम सनाथ होते हुये भी अनाथ की भूमिका में जीवन जीते हैं।

इन सबके बाबजूद यदि हम जैन धर्म के जीवन मूल्यों पर दृष्टिपात करें और अपने जीवन में उनको उतारने का प्रयास करें तों जीवन की डूबली नैया किनारा मिलने की पूर्ण सम्भावना है। वीतरागी गुरुओं के चरणों में बैठकर हम प्राचीन भारतीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनः भारतीय शिक्षा का आधार बनायें तो वह दिन दूर नहीं जब हम अपनी खोई हुई प्राचीन विरासत को पुनः

चलो देखें यात्रा

अयोध्या

नाम एवं पता :-श्री ऋषभदेव दिगम्बर जैन मंदिर अयोध्या जिला. फैजाबाद 224123 फोनः 05278-232308, प्रबंधकः श्री बसंत जैन मो. 94530-32180 सम्पर्क सूत्र : श्री सरोज कुमार जैन फतेहपुर (05240-222575, मो. 093350-19567)

सुविधायें : सुविधायुक्त 50 कमरे, समान्य 25 हॉल एक है। भोजनशाला नियमित निशुल्क है। धर्मशाला मंदिर एक ही केम्पस मे हैं। बसे व कारें मंदिर तक जाती है। बड़ा मंदिर-रायगंज मोहल्ले में है। श्वेताम्बर मंदिर पेड़ी कटरा मोहल्ले में जहां सर्वसुविधायुक्त धर्मशाला है। भोजनशाला नियमित है। फोन : 05278-232113

मागदर्शनः स्टेशन फैजाबाद एवं अयोध्या है। अयोध्या स्टेशन से क्षेत्र (रायगंग मंदिर) डेढ़ किमी. तथा श्वेताम्बर मंदिर कटरा मोहल्ला में 2 किमी. है। बस स्टेण्ड 2 किमी. है। फैजाबाद 5 किमी. है।

महत्व एवं दर्शनः अयोध्या प्रसिद्ध धार्मिक एवं पर्यटक स्थली है। जैन मान्यता के अनुसार भगवान ऋषभदेव के गर्भ एवं जन्म तथा भगवान अजितनाथ, अभिनंदन नाथ, सुमतिनाथ तथा भगवान अनंतनाथ के चारों कल्याणक यही हुये हैं। इस प्रकार यहां 18 कल्याणक हुये हैं। हिन्दुओं के लिये राम के जन्म स्थान के कारण पावन है। तो जैनियो के लिए शाश्वत नगरी है। मंदिर में 31 फुट की खड़गासन मूर्ति (ऋषभदेव) स्थापित है। चारों अन्य भगवान के मंदिर, टोको का जीर्णोद्धार ऋषभदेव उद्यान का निर्माण, गणिनी प्रमुख आर्यिका ज्ञानमति माताजी की प्रेरणा से किया गया है। अयोध्या में 7 जैन मंदिर है। पूरे दर्शन एवं श्रमण हेतु मंदिर से गाईड लेना चाहिए।

अयोध्या तीर्थ में नवनिर्माण हुये है। गणिनी प्रमुण ज्ञानमति माताजी की प्रेरणा से भगवान अजितनाथ टोंक पर मंदिर निर्माण हो गया है। इसमें भगवान अजितनाथ की 5 फुट पद्मासन प्रतिमा विराजित की दी गई है। इसके पूर्व अनंतनाथ टोंक पर भगवना अनंतनाथ की विशाल प्रतिमा तथा भरत-बाहुवली टोंक पर 24 तीर्थंकरों के चरण स्थापित करके तीन शिखरों वाले जिनालय का निर्माण हुआ है।

अयोध्या पुरुषोत्तम राम की जन्म एवं कर्मस्थली रही है। श्री राम से संबधित कनक भवन (1.5 किमी.) राम की पेढ़ी 2 किमी. राम जन्मभूमि 1 किमी. एवं भरत कुंड 12 किमी. प्रमुख आस्था स्थल है।

बाबरी मंदिर ढहाने से राम जन्मभूमि स्थल राजनीतिक चर्चा का विषय हो गया है। हजारो लोग रामलला के दर्शन करने रोजाना आते है।

रतनपुरीः श्री धर्मनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र (कल्याणक) चारों स्थली, ग्राम रतनपुरी पो. रोनाही जि. फेजाबाद (224182)

क्षेत्र फैजाबादः लखनऊ रोड़ पर अयोध्या से 30 किमी. रोनाही थाने से गांव के अंदर मंदिर एवं धर्मशाला एक ही केम्पस में है।
सम्पर्क : सुनील जैन -99352-23185
श्री टीकम चन्द्र- 94539-52081
(12 कमरे, भोजन अनुरोध पर उपलब्ध)

आचार्य विद्यासागर जी और गजरथ पंचकल्याणक समायोजन

❊ ब्र. जिनेश मलैया (इन्दौर) ❊

पंचकल्याणक गजरथ की परम्परा बुंदेलखण्ड की अपनी देन है गजरथ की परम्परा ऊँचाईयों पर जब पहुँची जब पूज्य आचार्य विद्यासागर जी महाराज का सानिध्य बुंदेलखण्ड वासियों को प्राप्त हुआ यद्यपि आचार्य श्री ने कोई भी गजरथ का सामायोजन नहीं कराया किन्तु गजरथ पंचकल्याणक के आयोजक पूज्य आचार्य के सानिध्य प्राप्त करने के लिए सदैव लालायित रहे। गजरथ की परम्परा बुंदलेखण्ड से ही आगे बढ़ी आचार्य श्री के सानिध्य के बाद गजरथ के समारोह में एक नई दिशा जुड़ गई। समारोह का लक्ष्य मात्र गजरथ परिक्रमा तक सीमित नहीं रहा अपितु नये नये विचारों के साथ गजरथ मंच का सदोपयोग हुआ पूज्य आचार्य श्री ने गजरथ की बचत राशि का उपयोग तीर्थ क्षेत्रों की जीर्णोद्धार विकास एवं शिक्षा के क्षेत्र में योजनाबद्ध तरीके से किया गया इस विनियोजन की उपलब्धि यह हुई कि तीर्थ क्षेत्रों का विकास होने लगा एवं समाज का धन बैंको में स्कंध निधि नहीं बन पाया यह आचार्य श्री की अद्वितीय सोच का परिणाम है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी के सानिध्य में सर्वप्रथम गजरथ 25 फरवरी से 2 मार्च सन् 1977 द्रोणागिरि पावन तीर्थ पर हुआ यह गजरथ समायोजन की यात्रा आगे बढ़ी और आचार्य के पावन सानिध्य में 61 गजरथ पंचकल्याणक सम्पन्न हुए जिनकी सूची निम्न अनुसार है।

क्र.	आयोजन स्थान	दिनांक/सन्	माता/पिता	सौधर्म इन्द्र इन्द्राणी
1.	द्रोणागिरी जिला छतरपुर (म.प्र.)	25 फरवरी से 2 मार्च 1977	श्रीमति शांतिबाई श्री पन्नालाल जैन	श्री कोमलचन्द्र, श्रीमति शांतिबाई जैन धुवारा वाले
2.	बीना बारह जिला सागर (म.प्र.)	1 मार्च से 6 मार्च 1978	श्रीमति सुदंर बाई श्री नन्हें लाल जैन	श्री गुलाबचंद श्रीमति रामा बाई जैन
3.	मुरैना (म.प्र.)	28 फरवरी से 5 मार्च 1979	श्रीमति संतोष बाई श्री शांतिलाल जैन	श्री छोटेलाल श्रीमति रेवती बाई जैन
4.	मदनगंज किशनगंज जिला अजमेर	27 से 31 मई 1979	श्रीमति सोहनीदेवी श्री दीपचंद चौधरी	श्री मूलचंद श्रीमति जीवन देवी लुहाड़िया
5.	खजुराहो जिला छतरपुर (म.प्र.)	20 से 26 जनवरी 1981	श्रीमति चमेलीदेवी श्री शांतिलाल जैन	श्री रतनचंद श्रीमति सरोज जैन
6.	कोनी जी जिला जबलपुर (म.प्र.)	21 से 21 फरवरी 1982	श्रीमति नौनी बाई श्री रतनचंद जैन बजाज	श्री खूबचंद श्रीमति पुत्ती बाई जैन
7.	शहपुरा भिटोनी जिला जबलपुर (म.प्र.)	22 से 27 जनवरी 1985	श्रीमति बंसती बाई श्री पूरन चंद जैन	श्री मोतीलाल श्रीमति कांति बाई जैन
8.	गंजबासौदा जिला विदिशा (म.प्र.)	8 से 14 फरवरी 1985	श्रीमति गुलाब बाई श्री भगवान दास जैन	श्री मन्नूलाल श्रीमति सोना बाई जैन

क्र.	आयोजन स्थान	दिनांक/सन्	माता/पिता	सौधर्म इन्द्र इन्द्राणी
9.	केसली जिला सागर (म.प्र.)	7 से 11 मार्च 1986	श्रीमति सुमत रानी श्री चुन्नी लाल जैन	श्री सुखदयाल श्रीमति संतोष रानी जैन
10.	नैनागिरि जिला छतरपुर (म.प्र.)	8 से 12 फरवरी 1987	श्रीमति गेंदाबाई श्री नाथूराम जैन	श्री बाबूलाल श्रीमति स्नेहलता जैन
11.	गोटेगांव जिला नरसिंहपुर	11 से 2016 फरवरी 1989	श्रीमति परमी देवी श्री छिकौड़ीलाल जैन	श्री नेमीचन्द्र श्रीमति सुमतरानी जैन
12.	सिंरोज जिला विदिशा	8 से 13 दिसम्बर 1989	श्रीमति कंचन बाई श्री लखमीचंद जैन	श्री श्रेयमल श्रीमति पुष्पा देवी जैन
13.	नरसिंहपुर	17 से 22 फरवरी 1990	श्रीमति कस्तूरी बाई श्री स्वरूप चद जैन	श्री अनिल कुमार जैन श्रीमति रेखा जैन
14.	पथरिया जिला दमोह	4 से 8 मार्च 1990	श्रीमति खिलौना बाई श्री कन्छेदी प्रसाद जैन	श्री मोती लाल श्रीमति सुषमा जैन गोयल
15.	सिद्ध क्षेत्र मुक्तागिरि जिला बैतूल	5 से 7 अक्टूबर 1990	(लघु पंचकल्याणक)	(लघु पंचकल्याणक)
16.	सिवनी	25 से 30 जनवरी 1991	श्रीमति कमला श्री नेमीचंद जैन	श्री श्रेयांस कुमार श्रीमति शांती बाई जैन
17.	पिसनहारी मढ़िया जी जबलपुर	23 से 27 जनवरी 1993	श्रीमति मणि श्री कोमलचंद जैन	श्री अरविंद कुमार श्रीमति कल्पना जैन
18.	देवरी जिला सागर	10 से 16 फरवरी 1993	श्री मति यशोदा बाई श्री नन्हें लाल जैन	श्री राजेन्द्र कुमार श्रीमति विमला जैन
19.	सागर	20 से 26 फरवरी 1993	श्रीमति कलावती श्री कोमल जैन	श्री ऋषभ कुमार श्रीमति कमला जैन
20.	रामटेक जिला नागपुर	17 से 19 सितम्बर1993	(लघु पंचकल्याणक)	(लघु पंचकल्याणक)
21.	बीना बारह जिला सागर	3 से 6 दिसम्बर1995	(लघु पंचकल्याणक)	(लघु पंचकल्याणक)
22.	आहुरा नगर जिला सूरत (गुजरात)	6 से 10 फरवरी	श्रीमति रंजना बेन श्री दिलीप साकलचंद	श्री कचरालाल श्रीमति तिमंगला बेन, जैन
23.	सागर (म.प्र.)	29 अप्रैल से 7 मई 1998	श्रीमति सुनीता श्री हुकुमचंद जैन	श्री अजित कुमार श्रीमति पुष्पा देवी जैन

क्र.	आयोजन स्थान	दिनांक/सन्	माता/पिता	सौधर्म इन्द्र इन्द्राणी
24.	करेली (म.प्र.)	14 से 21 फरवरी 2000	श्रीमति संतोष रानी श्री स्वदेश जैन	श्री केवलचंद श्रीमति संतोष रानी जैन
25.	छिंदवाड़ा (म.प्र.)	6 से 13 मार्च 2000	श्रीमति सरोज श्री प्रकाशचंद जैन	श्री अरूण कुमार श्रीमति प्रमिला (पाटनी) जैन
26.	कुण्डलपुर जिला दमोह(म.प्र.)	21 से 27 फरवरी 2001	श्रीमति चैना बाई श्री कस्तूरचंद जैन	श्री अशोक श्रीमति सुशीला (पाटनी)जैन
27.	छपारा (म.प्र.)	16 से 21 जनवरी 2002	श्रीमति सोना बाई श्री विमलचंद जैन	श्री जिनेश कुमार श्रीमति राजुल जैन
28.	वण्डा बेलई जिला सागर (म.प्र.)	22 से 27 फरवरी 2002	श्रीमति माया श्री संतोष कुमार जैन	श्री टेकचंद श्रीमति भावना जैन
29.	भोपाल (म.प्र.)	19 से 25 जनवरी 2003	श्रीमति पुष्पा श्री रमेश चंद जैन	श्री प्रकाश चंद श्रीमति दिव्या जैन
30.	सागर (म.प्र.)	16 से 21 फरवरी 2003	श्रीमति कांता श्री रमेशचंद जैन	श्री राजकुमार श्रीमति कमला बाई जैन
31.	बिलास पुर छत्तीसगढ़	20 से 25 जनवरी 2004	श्रीमति शकुन श्री प्रवीण कुमार जैन	श्री विनोद कुमार श्रीमति रंजना जैन
32.	कुण्डलपुर जिला दमोह (म.प्र.)	17 से 19 जनवरी 2006	(लघु पंचकल्याणक)	(लघु पंचकल्याणक)
33.	जबलपुर (म.प्र.)	25 से 1 फरवरी 2007	श्रीमति संध्या श्री अजय कुमार जैन	श्री संतोष जैन श्रीमति आशा जैन
34.	सागर	19 से 25 फरवरी 2007	श्रीमति विमला देवी श्री छोटेलाल जैन	श्री मुकेश जैन श्रीमति पूजा जैन
35.	पथरिया जिला दमोह (म.प्र.)	4 से 9 मार्च 2007	श्रीमति अंगूरी बाई श्री मनोहर लाल जैन	श्री प्रमोद कुमार श्रीमति कीर्ति जैन
36.	बेगमगंज जिला रायसेन	20 से 27 जनवरी 2008	श्रीमति सुलोचना श्री विपत जैन	श्री पदमचंद श्रीमति दया बाई जैन
37	गंजबासौदा जिला विदिशा	11 से 18 फरवरी 2008	श्रीमति चंदा श्री श्रेयमल जैन	श्री अनिल कुमार श्रीमति मंजूलता जैन
38.	विदिशा (म.प्र.)	15 से 21 अप्रैल 2008	श्रीमति इंदु श्री अशोक कुमार जैन	श्री अशोक सिंघई श्रीमति ज्योति जैन

क्र.	आयोजन स्थान	दिनांक/सन्	माता/पिता	सौधर्म इन्द्र इन्द्राणी
39.	नागपुर (महाराष्ट्र)	3 से 9 दिसम्बर 2008	श्रीमति ज्योति श्री मुकेश जैन	श्री संतोष कुमार श्रीमति प्रमिला जैन
40.	रामटेक नागपुर (महाराष्ट्र)	13 से 15 दिसम्बर 2008	(लघु पंचकल्याणक)	(लघु पंचकल्याणक)
41.	जबलपुर (म.प्र.)	22 फरवरी से 1 मार्च 2009	श्रीमति सुषमा श्री विजय कुमार जैन	श्री आशीष श्रीमति प्रिंसी जैन
42.	सागर (म.प्र.)	2 से 7 मई 2009	श्रीमति छाया श्री मुन्नालाल जैन	श्री महेश कुमार श्रीमति उषा जैन
43.	शहडोल	23 से 28 नवम्बर 2009	श्रीमति बबीता श्री दिलीप जैन नायक	श्री संतोष श्रीमति सविता जैन
44.	सतना (म.प्र.)	16 से 21 जनवरी 2010	श्रीमति रश्मि श्री विजय कुमार जैन	श्री देवेन्द्र कुमार श्रीमति राजमति जैन
45.	बीना बारहा जिला सागर	14 से 16 अगस्त 2010	(लघु पंचकल्याणक)	(लघु पंचकल्याणक)
46.	महाराजपुर जिला सागर	22 से 27 नवम्बर 2010	श्रीमति अनीता श्री राजीव जैन	श्री राजेन्द्र श्रीमति उर्मिला जैन
47.	दुर्ग (छत्तीसगढ़)	24 से 29 दिसम्बर 2012	श्रीमति अनीता श्री अनिल कुमार जैन	श्रीमति संगीता जैन श्री राजेश कुमार जैन
48.	रामटेक जिला नागपुर	25 फरवरी से 21 मार्च 2012	श्रीमति प्रमिला श्री संतोष कुमार जैन	श्री विमल कुमार डेवडिया श्रीमति चन्द्रकला जैन
49.	अमरकंटक जिला अनूपपुर	13 से 17 मई 2013	श्रीमति मीना श्री अमृतलाल जैन	श्री मुकेश जैन श्रीमति संगीता जैन
50.	खातेगांव जिला देवास	18 से 24 जनवरी	श्रीमति कांता श्री महेन्द्र कुमार जैन	श्री कुशल कुमार श्रीमति मधु जैन
51.	गौरझामर जिला सागर	6 से 12 मार्च 2015	श्रीमति वीणा श्री संतोष कुमार जैन	श्री ऋषभ कुमार श्रीमति ममता जैन
52.	गढ़ाकोटा जिला सागर	30 से 6 दिसम्बर 2015	श्रीमति माया श्री जितेश कुमार जैन	श्री राकेश कुमार श्रीमति अंजू जैन
53.	रहली जिला सागर	8 से 14 दिसम्बर 2015	श्रीमति अंजना जैन श्री वीरेन्द्र कुमार जैन	श्री राजकुमार श्रीमति प्रभा जैन

क्र.	आयोजन स्थान	दिनांक/सन्	माता/पिता	सौधर्म इन्द्र इन्द्राणी
54.	तारादेही जिला दमोह	15 से 20 जनवरी 2016	श्रीमति कान्ता श्री देवेन्द्र कुमार जैन	श्री अरविन्द कुमार श्रीमति मधु जैन
55.	कटंगी जिला जबलपुर	17 से 23 मार्च 2016	श्रीमति माला श्री श्रेयांस कुमार जैन	डॉ. श्री निर्मल कुमार श्रीमति विशल्या जैन
56.	भानपुर भोपाल	29 नबम्बर से 5 दिसम्बर	श्रीमति शीलरानी श्री संतोष जैन	श्री अशोक श्रीमति आशा जैन
57.	सिलवानी जिला रायसेन	13 से 18 जनवरी 2017	श्री देवेन्द्र जैन श्रीमति कांता जैन	श्री अमित जैन श्रीमति श्वेता जैन
58.	टड़ा जिला सागर	3 से 8 फरवरी	श्रीमति कुमुद मोदी श्री जिनेन्द्र कुमार मोदी	श्री विनीत मोदी श्रीमति प्रियंका मोदी जैन
59.	डोंगरगांव जिला राजनाद गांव	9 से 15 नवम्बर 2017	श्रीमति ममता श्री सुनील जैन	श्री संदीप जैन श्रीमति श्वेता जैन
60.	रोजदा छत्तीसगढ़	22 से 27 जनवरी 2018	श्रीमति सोनल श्री मनीष जैन	श्री राजीव जैन (पप्पू जी) श्रीमति उषा जैन
61.	रायपुर छत्तीसगढ़	11 से 18 फरवरी 2018	श्रीमति रिचा जैन श्री अमित जैन	श्री विनोद बड़जात्या श्रीमति संजना देवी
62.	डिंडोरी म.प्र.	23 से 29 मार्च 2017	श्रीमति मीना जैन श्री प्रवीण कुमार	डॉ. सुनील जैन श्रीमति रेखा जैन

जैनोदय का शुद्ध घी

विभिन्न लोगों की विभिन्न रूचि को देखते हुए अब घी 3 प्रकार की विविधताओं में उपलब्ध हैं।

1. देशी गिर गाय के दूध के माखन से (बिलो कर) बनाया हुआ घी -1200/- रूपये प्रतिकिलो।
2. (गाय भैंस का) माखन से (बिलो कर) बनाया हुआ घी 700/- रूपये प्रतिकिलो।
3. भैंस के दूध की क्रीम से बनाया हुआ घी 450/- रूपये प्रतिकिलो

आप आवश्यकता अनुसार मंगा सकते हैं।

मध्यप्रदेश की गौ संवर्धन योजना से आर्थिक मदद प्राप्त कर 80 परिवार गाय-भैंस का पालन कर प्रतिदिन शुद्ध घी तैयार करते हैं एवं परिवारों में से 12 परिवार सीमित मात्रा में सोले का घी तैयार करते हैं। यह घी हम व्यापारिक दृष्टि या सोच के आधार पर विक्रय नहीं करते अपतु

सम्पर्क करें : 7999646061

कविता

हम नाचत ताल बजायें

❊ सुभाष चंन्द्र सरल (अशोक नगर म.प्र.)❊

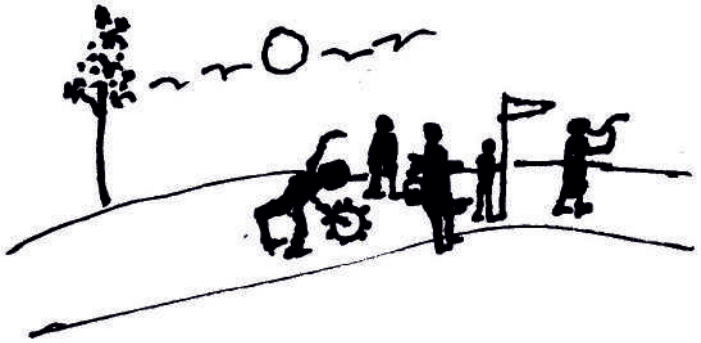

गुरुवर म्हारे, नगर पधारे,
हर्षित मन उमगाये, हम नाचत ताल बजायें।
गुरुवर म्हारे .....

चरण कमल जिनके चन्दन हैं
कोटि-कोटि इनका वन्दन है।
सत्य अहिंसा पथ, दिग्दर्शक,
गिरि पुष्पों सा पावन तन है।

रत्नत्रय के धारक गुरु के, चरणनशीश झुकायें।
हम नाचत ताल बजायें .....

आतम कल्याण में, तो नित रत हैं
हर पल ध्यान करते आतम हित है।
जिनकी वाणी, मधुर सयाणी,
पल-पल झरती, बस जिनवाणी।

स्तुती गाकर, शीश नवाकर, चरणन पुष्प चढ़ायें।
हम नाचत ताल बजायें .....

सिद्धालय के सत श्री राही
संसार विभूति पग ठुकराई।
आतम हित की बस अभिलाषा
त्यागी, सब संसार की आशा।

मोक्ष पथिक के श्री चरणों में, मंगल अर्घ चढ़ायें।
हम नाचत ताल बजायें.....

आगम दर्शन

मोक्ष मार्ग प्रदर्शक मोक्ष पाहुड

आचार्य कुन्द कुन्द की अनुपम कृति मोक्ष पाहुड एक सौ छह प्राकृत गाथाओं का अनूठा ग्रंथ है। यह ग्रंथ अध्यात्मिकों के पंथ को लिए मोक्ष की अनुपम प्रेरणा देने वाला है। प्रस्तुत ग्रंथ के मंगलाचरण में परद्रव्य को छोड़कर जिन्होंने द्रव्यकर्म भावकर्म और नौ कर्मों को नष्ट कर दिया है। निर्मल ज्ञानमय आत्मा को प्राप्त कर लिया है, ऐसे देव को हमारा नमास्कार हो तथा अनन्तज्ञान दर्शन सुख परम पद परमात्मा को प्राप्त हुये योगियों को नमस्कार करके इस ग्रंथ के कथन करने की प्रतिज्ञा आचार्य कुंदकुंद देव ने मंगलाचरण में की है। परमात्मा को जानकर जब योगी ध्यान में स्थिर हो जाता है तब वह परमात्मा का अनुभव करके निर्वाण को प्राप्त होता है। यह निर्वाण अनुपम अदभुत और अनन्त अव्यावाद्य रूप है।

प्रस्तुत ग्रंथ में आत्मा को तीन प्रकार से माना है। बहिरात्मा अंतरात्मा और परमात्मा बहिरात्मा इन्द्रिय आदि बाह्य पदार्थो में जुडा रहता है। अंतर आत्मा आत्मा के अनुभव गोचर होता है। परमात्मा का स्वरूप अनेक विश्लेषणों के साथ बताते हुए बहिरात्मा की प्रवृन्ति एवं बहि आत्मा की श्रद्धान में हुई विकृति को भी बताया है। स्वद्रव्य में रत सम्यक दृष्टि होता है एवं कर्मो का नाश करता है। परद्रव्य में रत मिथ्या दृष्टि होता है। वह दुरगति को प्राप्त होता है। आत्मास्वभाव को निजद्रव्य कहा है। तथा इसके ध्यान से ही निर्वाण प्राप्त होता है। ध्यान से मोक्ष प्राप्त होता है। अवृन्त को श्रेष्ठ नहीं माना है। क्योंकि यह नरक का कारण होता है। आत्म ध्यान की विधि बताते हुये आश्रव निरोध का कारण ध्यान बताया है। व्यवहार में जागरूक और निश्चय में सोते हुए व्यक्ति को ध्यान नहीं होता है। ध्यान और अध्ययन की प्रवृत्ति साधक को मुख्य होती है। रत्नत्रय की अराधना करने वाला सही मायने में अराधक है। शुद्ध आत्मा ही केवलज्ञान है और आत्मा ही रत्नत्रय है।

सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान व सम्यक चारित्र का स्वरूप बताते हुये रत्नत्रय का स्वरूप बताया है। ध्यानी मुनि परमात्मा का ध्यान करते हैं। निर्लोभी योगी परमात्मा का ध्यान करने में सफल होते हैं। ध्यान सम्यक् ज्ञानी को ही होता है। राग द्वेष करने वाला अज्ञानी होता है। अज्ञानी जीव आत्मा के स्वरूप को नहीं जानता है और जिनमत के प्रतिकूल चलता है। सम्यक्त्व रहित सम्पूर्ण साधना निरर्थक होती है। अचेतन को चेतन मानने वाला अज्ञानी होता है। तप रहित ज्ञान और ज्ञान रहित तप दोनों व्यर्थ होते हैं। बाह्य लिंग सहित और अभयन्तर लिंग रहित मोक्ष मार्ग का नाश करते हैं।आहार निद्रा और आसन को जीतने वाला ही आत्मा का ध्यान करता है। विषयों में प्रवृत होने वाले को आत्मा का ध्यान नहीं होता है। भावना बिना आत्मध्यान संभव नहीं है। परद्रव्य में लेश मात्र राग करने वाला अज्ञानी होता है। समता भाव को चारित्र कहा है। पंचम काल में भी आत्म ध्यान होता है। जो ऐषा नहीं मानता है वह मिथ्यादृष्टि होता है। जो पंचमकाल में आत्मा ध्यान नहीं मानते वह मोक्ष मार्गी नहीं हो सकते। पांच प्रकार के वस्त्रों को धारण करने वाला परिग्रही, याचनाशील, अधाकर्म सहित मोक्ष मार्ग से च्युत होता है। मोक्षमार्ग की प्रवृति बताते हुए आत्मा आत्मा में लीन हो जाने को निश्चय ध्यान कहा है। श्रावकों का कर्तव्य बताते हुये सबसे पहले उसका सम्यक् दृष्टि होता अनिवार्य कहा है। समर्ग साधना सम्यक् दर्शन से ही सार्थक होती है। मिथ्यादृष्टि के लक्षण एवं मिथ्यादृष्टि के संसार परिभ्रमण का कारण बताया है।

मिथ्यादृष्टि के सम्पूर्ण बाह्य भेष बनाना कुछ भी लाभ का कारण नहीं है। मूलगुणों को नष्ट करके कोई भी सफल नहीं हो सकता है। वैराग्य से युक्त साधक ही सच्चा साधु है। सवोत्तम पदार्थ आत्मा को बताया है। आत्मा में ही अरिहंत आदि पंचपरमेष्ठी होते हैं। चार अराधना भी आत्मा में ही हैं। इसलिए आत्मा ही शरण है। मोक्ष पाहुड ग्रंथ को भक्ति भाव से पढ़ने वाला जीव चिन्तन करने वाला और सुनने वाला जीव शाश्वत सुख को प्राप्त करता है।

प्रस्तुत ग्रंथ में बहिरात्मा को त्यागकर अंतर आत्मा को प्राप्त करके परमात्मा का ध्यान करने वाला ही सच्चा साधक होता है। वही मोक्ष को प्राप्त करने से सफल होता है।

कविता

गुरुवर विद्यासागर वंदना

✻ डॉ. अजित चौधरी (बीना म.प्र.)✻

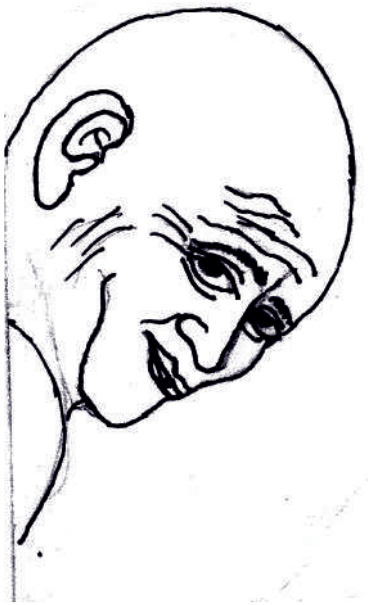

ऐसे संत जिनका वंदन
स्वयं संत ही करते हैं,
जिनके स्पर्श मात्र से
माटी चंदन हो जाती है॥

जिनके दर्शन पाने से
उर के क्रन्दन मिट जाते हैं,
शीतलता मिलती इतनी
तनमन तन्मय हो जाता है॥

गुरु से गुरु की दीक्षा पा
अंक्षु से धरती वंदन करते हैं
ऐसे गुरु का वंदन करते करते
महावीर का वंदन हो जाता है॥

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
अप्रैल 2018

लो अब चला

प्रथम-मंजिल मेरी अब बहुत दूर है
मुझे शिखर पर जाना है।
दुनिया के सारे रोड़ो को आर-पार कर भीतर जाना है।
रोक नही पाया कोई मैं तो खुद समझा अपना भला
सुखद छाँव को यही छोड़कर देखो भैया लो अब चला

श्रीमति रजनी जैन राहतगढ़

द्वितीय-गाँव बदल गये, ठाव बदल गये आना जाना जीवन मेरा।
अनियत-साधु सुन्दर, यही साधना की है कला।
मैं योगी रूक नही सकता, लो अब चला।

श्रीमति रश्मि जैन सागर

तृतीय- विश्राम यहाँ था, कुछ पल का मन नहीं लगता, एक पल का।
रूक जाऊँ तो, सूरज ढला,
दूर हैं मंजिल, लो अब चला

पल्लवी जैन गंजबासौदा

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा
मार्च 2018 के विजेता

प्रथम : सौ. रजनी विमलचंद जी जटाले (महराष्ट्र)
द्वितीय : व्रती बी.एल. जैन (नई दिल्ली)
तृतीय : हीरामणि सम्पतलाल छाबड़ा (कोलकाता)

वर्ग पहेली क्र. 225
मार्च 2018 के विजेता

प्रथम : इन्दु बड़जात्या (बाकानेर)
द्वितीय : श्रीमति कमला जैन (खरगोन म.प्र.)
तृतीय : श्रीमति पारस जैन (इन्दौर)

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : अप्रैल 2018 का हल

01 संकर
02 शोध
03 सिद्ध
04 वचन
05 अहिंसा
06 वृत्ति
07 नहीं
08 मूकमाटी
09 मानवीकरण
10 पाप
11 निराकुलता
12 सुख
13 इति
14 कविता
15 अभ्यास
16 आलस्य
17 क्षीर
18 संकर
19 कषाय
20 धन
21 आध्यात्मिक
22 शब्दों
23 मुक्ता
24 अन्तर
25 जिलाना
26 सहयोग
27 ध्यान
28 धर्म
29 प्राण
30 परमार्थ
31 सुसंस्कार
32 मोक्ष का
33 रोचक
34 अध्यात्म का
35 मूकमाटी
36 तीर
37 आतंकवाद
38 परीक्षा में
39 काव्य में
40 सफल
41 पुत्र
42 अनादि
43 असमी
44 विचार
45 मूकमाटी
46 शुचिता
47 आध्यात्मिकता
48 भी
49 भीतरी
50 माटी

पुराण प्रेरणा

मोक्ष इच्छा

सुखं दुखानुबन्धीदं सदा सनिधनं धनम्।
संयोगा विप्रयोगान्ता विपदन्ताश्च संपदः॥
यह सांसारिक सुख दुख को उत्पन्न करने वाला है धन विनाश से सहित है , संयोग के बाद वियोग अवश्य होता है और सम्पत्तियों के अन्तर विपत्तियाँ आती है।
धुनोति दबथुं स्वान्तात्तनोत्यानन्दथुं परम।
धनोति च मनोवृत्ति महो साधु समागमः॥
अहा ! कैसा आश्चर्य है कि साधु पुरुषों का समागम हृदय से संताप को दूर करता है परम आनन्द को बढ़ता है और मन की वृत्ति को सन्तुष्ट कर देता है।
मुष्णाति दुरितं दूरात्परं पुष्णाति योग्यताम्।
भूयः श्रेयोऽनुबध्नाति प्रायः साधु समागमः॥
प्रायः साधु पुरुषों का समागम दूर से ही पाप को नष्ट कर देता है, उत्कृष्ट योग्यता को पुष्ट करता है ,और अत्यधिक कल्याण को बढ़ाता है।
स्वदुःखे निर्घृणारम्भाः परदुःखेषु दुःखिता।
निर्व्यपेक्षं परार्थेषु बद्धकक्ष्या भुमुक्षवः॥
मोक्ष की इच्छा करने वाले ये साधुजन अपने दुःख को दूर करने के लिए सदा निर्दय रहते हैं अर्थात् अपने दुख को दूर करने के लिए किसी प्रकार का आरम्भ नहीं करते। पर के दुख से सदा दुखी रहते हैं । और दूसरों के कर्म सिद्ध करने के लिए निःस्वार्थ भाव से सदा तैयार रहते हैं ।

(आदि पुराण से)

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों को क्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. त् आ स् इ द् ध् अ ई अ क् अ ए ल् श् र् स् ग् आ अ र् अ ज् ई
2. ए इ व् व् क् आ न् अ द् न् अ ई अ क् अ ए ल् श् र् स् ग् आ अ र् अ ज् ई
3. अ च् इ न् श अ य ई अ क् अ ए ल् श् र् स् ग् आ अ र् अ ज् ई
4. अ द् आ य ई अ क् अ ए ल् श् र् स् ग् आ अ र् अ ज् ई
5. अ स् अ म् प् ण् अ र ई अ क् अ ए ल् श् र् स् ग् आ अ र् अ ज् ई

परिणाम :
अप्रैल 2018: (1) आचार्य श्री विद्यासागर सागर जी (2) आचार्य श्री विद्यानंद जी (3) आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी (4) आचार्य श्री विराग सागर जी (5) आचार्य श्री विवेश सागर जी

वास्तु शिल्प में अवसर

केरियर

वास्तुशिल्प : आवास मानव जाति की प्रथम आवश्यकता है, एक मकान बनाने के कई चरण होते हैं, इस हेतु जब मकान का डिजाइन तैयार किया जाता है तब वास्तु शिल्पी इंजीनियरों तथा ठेकेदारों के साथ कारपेंटर, लोहे का काम करने वाले तथा बहुत से अन्य लोगों की भी आवश्यकता होती है।

वास्तुशास्त्री निर्माण कार्य के नियोजन, डिजाइन तथा सर्वेक्षण कार्य के प्रति उत्तरदायी होता है । वास्तुशास्त्री ग्राहकों से मिलता है, निर्माण का खाका तैयार करता है और भावी इमारत का चित्रांकन करता है।

वास्तुशास्त्री के अतिरिक्त, बहुत से अन्य लोगों की सेवाओं की आवश्यकता भी विनिर्माण व्यवसाय में पड़ती है, भूमि के बेहरतरीन उपयोग के लिए शहरों , महानगरों तथा कॉलोनियों के विकास में ले आउट का डिजाइन तैयार करना तथा समन्वय करना शामिल है । विभिनन पक्षों जैसे वित्तीय संशाधन, रिहायशी इलाकों की अवस्थिति, उद्योग, विद्यालय पार्क इत्यादि का ध्यान नियोजक को रखना चाहिए। अपनी योजना को मॉडल चार्ट अथवा स्कैच रूप में तैयार कर लेना चाहिए।

एक ठेकेदार का कार्य पूरी निर्माण परियोजना का प्रबंधन तथा समय सीमा के भीतर कर्य की समाप्ति तथा ठेके में उल्लेखित लागत के भीतर कार्य पूरा करने का उसका उत्तदायित्व होता है । बिल्डिंग के ठेकेदार बिल्डिंग की मरम्मत निर्माण जोड़ तथा संशोधन के कार्यो की देखभाल करते हैं।

राजमार्ग ठेकेदार सड़क, गलियाँ, पगडंडियाँ, राजमार्ग, पुल इत्यादि जैसे भारी निर्माण करते हैं, और जनोपयोगी ठेकेदार, रेलवे रोड़, सिंचाई बाद नियंत्रण तथा जल ऊर्जा विकास परियोजना बांध, बंदरगाह उद्योग इत्यादि का निर्माण करते हैं।

संरचात्मक परिक्रमण तथा मशीनी/ इलैक्ट्रीकल/ संरचनात्मक कार्य में कारपेंटर, राजगीर, पत्थर तराशने वालों वैल्डिंग करने वालों की आवश्यकता होती हैं।

परिष्करण कार्य करने वालों मे मार्बल, टाइल लगाने वालों, एयर कंडीश्नर मैकेनिक, इलैक्ट्रीशियन, शीटमेटल वर्कर इत्यादि शामिल होते हैं।

निर्माण कार्य के लिए अधिक संख्या में श्रमिकों की आवश्यकता होती है जो कार्यस्थल विभिन्न कार्य जैसे समान चढ़ता और उतारना, मसाला तैयार करना इत्यादि कार्य करते हैं।

शैक्षिक योग्यता : व्यक्ति विशेष को अपने विशेषज्ञ क्षेत्र में औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने की आश्वयकता होती है।

एक शहर व देश नियोजक के लिए किसी मान्यता प्राप्त संस्थान से वास्तु शास्त्र की डिग्री/ डिप्लोमा होना आवश्यक है।

सिबिल इंजीनियर पदों के लिए सिविल/स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री आवश्यक हैं।

भारत में लगभग इक्कीस विश्वविद्यालयों में डिग्री कोर्स उपलब्ध हैं।

रोजगार संभावनायें : लोक निर्माण विभाग, रक्षा मंत्रालय रेल मंत्रालय, डाक तार एवं निजी उद्योग, निजी क्षेत्र की कंपनियां तथा स्थानीय निकायों को भी इसके पर्याप्त अवसर उपलब्ध हैं।

अनुभव प्राप्त वास्तुशास्त्री स्वंय का व्यवसाय, निजी ठेकेदारी अथवा परामर्श सेवा का कार्य भी कर सकता है।

संस्थान: 1. स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर नवरंगपुरा अहमदाबाद
2. साधव इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी एंड साइंस जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)
3. मालवीय रीजनल कॉलेज जयपुर
4.गर्वनमेंट कॉलेज आर्किटेक्चर टेगोर रोड लखनऊ (उ.प्र.)

कविता

अनसुलझी पहेली

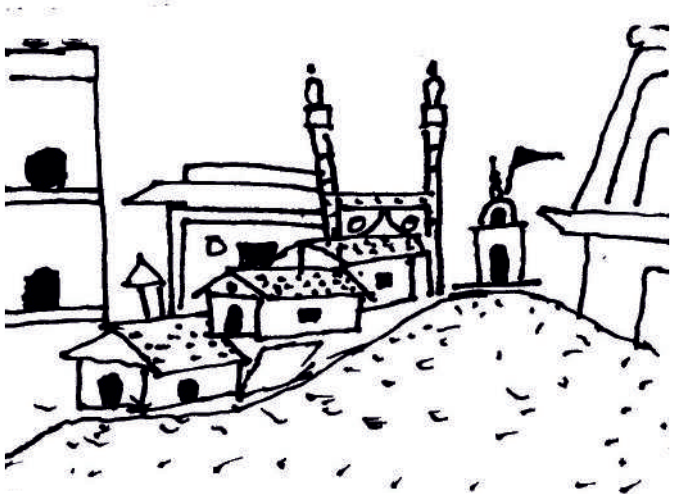

अनबुझी पहेली अटपटी लटेरी
यादों में बस गई नखरीली लटेरी
उधार है लटेरी उदार है लटेरी
धर्म की जिज्ञासु प्यासी है लटेरी
लुटेरों ने बसाई थी कभी लुटेरी
खूब लूटा ज्ञान धन
सचमुच है लुटेरी प्रेम है संत संग है
धर्म की उमंग है सरवर सी लहराती
भक्ति की तरंग है अतिथि सत्कार को
मानवता प्यार को हिमगिरी सी तुग धवान
मन हर है लटेरी धर्म की पताका
शांत अभिलाषा समस्या का समाधान
कुंठित क्यों लटेरी ?

■ 1 मार्च

-ईडी ने मेहुल चोकसी की पी एन बी बैंक घोटाले के मामले में 1217 करोड़ अचल सम्पत्ति जब्त कर ली।

- मद्रास हाईकोर्ट की मुदरे पीठ ने राजीव गाँधी हत्याकांड के अभियुक्त रविचंद्रन को पैरोल पर रिहा किया

- जॉर्डन के शाह सलमान अब्दुल्ला अलहुसैन और भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बीच भारत जॉर्डन बीच 12 समझौते पर हस्ताक्षर हुए।

■ 2 मार्च

- दिल्ली- मुरादाबाद रेलमार्ग पर परता पुर रेलवे फास्ट पर ट्रेन ट्रक की भिडंत हुई।

- अफ्रिका देश बार्किता फासो में दोहरे आंतकी हमले में 8 मरे सेना के मुख्यालय और फ्रां स के दूतावास को निशाना बनाया गया।

- ब्रिटेन में शत्रुहन सिन्हा को लाइफ टाइम अचीवमेन्ट पुरस्कार मिला।

■ 3 मार्च

- त्रिपुरा विधानसभा चुनाव परिणाम भाजपा ने दो तिहाई सीटें जीती।

- प्रधान नरेन्द्र मोदी और वियतनाम के राष्ट्रपति जान दाई क्वांग ने चीन को सीधे संदेश दिये।

-रियादः सऊ दी अरब में पहली बार महिला मैराथन दौड हुई मिजना अलनसर विजेता रहीं।

■ 4 मार्च

- पाकिस्तान में दलित महिला कृष्णा कुमारी कोलही पाक संसद के उच्च सदन सीनेट का चुनाव जीता

-पहाड़ी (चित्रकूट) पहाड़ी थाना क्षेत्र के ग्राम दरसेड़ा में युवक टिल्लू/राजू मेहतर ने देवी मंदिर में अपनी बलि चढाई।

■ 5 मार्च

- जम्मू-कश्मीर के शोपियाँ फायरिंग मामले में सुप्रीम कोर्ट में जांच पर रोक लगाई जिससे मेजर आदित्य को बड़ी राहत मिली।

-हिमांशु भारद्वाज को सड़क दुर्घटना में घायल होने के बाद छिंदवाड़ा जिला अस्पताल में पोस्टमार्टम के लिए भेजा परंतु अचानक नब्ज चलने लगी फिर नागपुर रेफर किया गया।

- जयपुर : विधानसभा को धत्ता बताकर बसपा के विधायक मनोजन्यांगली पिस्टल लेकर विधानसभा सदन में गये।

■ 6 मार्च

- त्रिपुरा चुनाव के बाद भाजपा माकपा के बीच हिंसक झड़प हुई 1539 घरों में आगजनी हुई दक्षिण त्रिपुरा के बेलोनिया में

लेनिन की प्रतिमा गिराई।

- कोलम्बो : मुस्लिम बौद्ध के बीच हुई हिंसा के बाद श्रीलंका में 16 दिन के लिए आपात काल लागू किया गया।

- रतलाम पूर्व विधायक पारस सकलेचा काँग्रेस में शामिल हुऐ।

■ 7 मार्च

- कोलकाता में श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं मेरठ में भीमराव अम्बेड़कर प्रमिमा तोड़ी गई।

-कर्नाटक के लोकायुक्त पी. विश्वनाथ सेट्टी पर तेजस शमी नाम के युवक ने चाकू से हमला उनके आफिस में किया।

-लाहौर हाईकोर्ट ने जमात उद-दावा के प्रमुख और 2008 मुम्बई आंतकी हमले के मास्टर माईण्ड हाफिज सईद की गिरफ्तारी पर रोक लगाई।

■ 8 मार्च

- केन्द्रीय जाँच ब्यूरों 1993 मुम्बई धमाकों के आरोपी और दाऊ द केकरीबी फारूख टकला को दुबई से गिरफ्तार कर मुम्बई लायी।

- मशूहर आर्किटेक्चर बालकृष्णा दोशी को नोबेल के बराबर माने जाने वाला प्रित्जकर सम्मान की घोषणा हुई।

-बिलापुर बीना ट्रेन को लोको पायलट नूतन और संगीता ने चलाई गार्ड वन्दना चर्तुवेदी थी।

■ 9 मार्च

- त्रिपुरा मे मुख्यमंत्री पद की शपथ विल्पब देव ने ली

- सुप्रीम कोर्ट ने ऐतिहासिक फैसले में कहा कि कोमा में जा चुके मौत की कगार पर पहुँच लोगों को वसीयत के आधार पर इच्छा मृत्यु की मंजूरी दी जा सकती है।

- अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने उत्तर कोरिया के तानाशाह किमजोग उनका बातचीत का न्योता स्वीकार किया।

■ 10 मार्च

- भैय्या जी जोशी चौथी बार राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरकार्यबाह चुने गये।

- भारत फ्रांस के बीच रक्षा परमाणु ऊर्जा हिन्द प्रशान्त सागर क्षेत्र में सहयोग बढाने लगाने जैसे 14 अहं समझौते हुए।

-शिवपुरी : कक्षा 12वीं का अंग्रेजी का पेपर पर वाट्सप पर वायरल हुआ।

■ 11 मार्च

- चीन की संसद ने राष्ट्रपति की 2 कार्य काल की बाध्यता को हराया विरोध मात्र गिरे एन.पी. सी में कुल 2964 वोट है।

- लाहौर : पूर्व प्रधान मंत्री नवाज शरीफ पर तलहा मुलवार ने जुता फेंका।

- नासिक से मुम्बई तक किसानों ने मोर्चा निकाला जिसमें 45000 किसान शामिल हुए।

■ 12 मार्च

- तमिलनाडु के तेनी जिले के कुरंगनी पहाड़ियों के जंगल में आग लगी 10 ट्रैकर्स की मौत हुई।

-काटमांडूः त्रिभूवन कुवाई अड्डे पर

एस. बांगला एयर लाइंस का विमान लेंडिंग के समय गिरा 49 लोगों की मौत हुई।

- सपा महासचिव नरेश अग्रवाल भाजपा में शामिल हुए।

■ 13 मार्च

- जगदलपुर : सुकमा के किस्टा राम क्षेत्र के 4 लोडिंग में नक्सालियों ने सुरंग बारूदी सुरंग रोधी। वाहन को विस्फोट से उडाया 9 जवान शहीद हुए

- सीधी : मड़वास में ग्रामीण मंध्याचल बैंक की तिजोरी काट कर चोर 15 लाख रूपये ले उड़े।

■ 14 मार्च

- उत्तरप्रदेश की फूलपुर और गौरखपुर लोकसभा सीटें समाजवादी पार्टी ने जीतीं।

- स्टीवन हॉफिंग वैज्ञानिक का निधन हुआ वे 76 साल के थे।

गुजरात विधान सभा के सदन लात घूँसे चले तीन काँग्रेसी विधायक निलंबित किये गये।

■ 15 मार्च

- पाकिस्तान ने अपने उच्चायुक्त सुहैल महमूद को वापिस बुलाया भारत ने इसे सामान्य बात कहा।

-हरियाणा में 12 साल मे कम उम्र की बच्चियों के साथ दुष्कर्म करने वाले सजा ए मौत का विधेयक विधान सभा में पारित हुआ

-बांदरी (सागर) 15 वर्षीय छात्रा मे आग लगा कर खुदकुशी कर ली वह दुष्कर्म से पीड़ित थी मौठी गाँव के राजू खान पर मामला कायम हुआ।

■ 16 मार्च

-आँध्रप्रदेश को विशेष राज्य का दर्जा नहीं दिया जाने से नाराज तेजुगुदेशम पार्टी राजग से अलग हुई

- पटिथाला के एक कोर्ट ने पंजाबी गायक दलेर मेहंदी मानव तस्करी के आरोप में 2 वर्ष की सजा सुनाई

-टाटा संस के मुख्य आचार नीति अफ्सर मुंकुद राजन ने इस्तीफा दिया।

■ 17 मार्च

- म.प्र. शासन मंत्री रामपाल सिहं की बहू प्रीति रघुवंशी ने आत्म हत्या की।

-रूस ने ब्रिटेन के 23 राजनायिकों को अपने देश से निष्कासित किया।

-शीजिनपिंग चीन के दूसरी बार राष्ट्रपति चुने गये।

■ 18 मार्च

- पाकिस्तान ने हिन्दू नव वर्ष पर जम्मू कश्मीर के पुँछ जिले के देवता सारगामून अकारण गोलाबारी से एक परिवार 5 सदस्य मरे।

■ 19 मार्च

- बालिद मीर पुतिन रूस के चौथी बार राष्ट्रपति चुने गये।

-रूंची जेल में सजा काट रहे राज सुप्रीमों लालू प्रसाद यादव चौथे चारा घोटाले मामले में दोषी घोषित हुए जगन्नाथ

मिश्र बरी हुए।

-कर्नाटक सरकार ने लिंगायत-वीरशैव को अप्लसंख्यक घोषित किया।

■ 20 मार्च

- इराक में जून 2014 में खूँखार संगठन आइ एस ने 39 भारतीयों का अगवा किया उनके शव मिले 38 की शिनाखात हुई।

- एस सी, एस टी एक्ट के दुरुपयोग को देखते हुए ततकाल एफ आई आर और गिरफ्तारी की व्यवस्था की सुप्रीम कोर्ट ने बदला अब ए.एस.पी की जाँच के बाद ही एफ आई आर होगी।

- फ्रांस के पूर्व राष्ट्रपति निकोलस सरकोजी की लीबिया से धन लेने के मामले में गिरफ्तारी हुई।

■ 21 मार्च

- म्यांमार के राष्ट्रपति टिन क्याव ने अचानक इस्तीफा दिया।

-काबुल : में शिया दरगाह के पास आत्मघाती हमला हुआ 29 मरे 50 घायल हुये।

■ 23 मार्च

- दिल्ली : हाईकोर्ट ने आय के 20 विधायक को बहाल किया आयोग्यता रद्द किया।

-यू.पी.ए.की अध्यक्ष सोनिया गाँधी की तबीयत बिगड़ी शिमला से लौटी।

- फ्रांस में सुपर मार्किट में आइ.एस.में आतंकी घुसा दो लोग मरे 3 घायल हुए।

■ 24 मार्च

- राजद नेता लालू प्रसाद यादव को चारा घोटाले में सी.बी.आई की विशेष अदालत ने 14 साल की सजा ओर 60 लाख रूपया जुर्माना।

-मुरैना : बरबाई गांव में स्कूल बस से बच्ची के अपहरण प्रयास के बाद माहौल बिगड़ा ग्रामीणों ने पुलिस पर हमला किया।

- नीरव मोदी के समुद्र महल से 10 करोड़ की हीरा जड़ी अंगूठी मिली ईडी ने 36 करोड़ की सम्पत्ति जब्त की।

■ 25 मार्च

- धार जिले के मनावर थाना क्षेत्र में आज सुबह बस और बाइक की टक्कर में में बस में आग लगी हादसें में बाइक सवार चार लोगों की मौत

-भोपाल 25 मार्च राजधानी भोपाल में बैंक परीक्षा की तैयारी कर रही एक छात्रा का किडनैप कर सामूहिक दुष्कर्म।

- गोरखपुर 25 मार्च आतंकवादियों को धन मुहैया कराने के मामले में यूपी एटीएस ने राजधानी लखनऊ समेत राज्य के कई जिलों में छापा मारकर 10 लोगों को गिरफ्तार किया।

■ 26 मार्च

- भिण्ड : रेत माफिया पुलिस के गठजोड़ स्टिंग ऑपरेश से उजागर करने वालें युवा पत्रकार संदीप शर्मा की सोमवार को ट्रक से कुचलकर मौत हो गई।

- तीन तलाक की गोरकालूनी घोषित करने के करीब सात माह बाद अब सुप्रीम कोर्ट बहु विवाह और हलाला की सवैधानिकता को जांचेगा।

- रूस के साइबेरिया प्रांत के केमीरोवा शहर के चार मंजिला शापिंग मॉल मे आग लगने से 64 लोगों की मौत हो गई।

■ 27 मार्च

- कर्नाटक विधानसभा चुनावों के लिए चुनाव आयोग ने तारीखों का ऐलान कर दिया 12 मई को विधानसभा चुनाव होंगे व 15 मई को नतीजे आयेंगे।

-बैतूल जिल के घोड़ा डोंगरी में करीब ढ़ाई हजार एकड़ में बहुमूल्य धातु यूरेनियम के पाए जाने की खबर सामने आई है।

- विपक्ष के व्यापक विरोध ओर सदन से बहिंगमन के बीच विधानसभा में उत्तर प्रदेश संगठित अपराध निरोधक विधेयक (यूपीको का) पारित हुआ।

■ 28 मार्च

- सी.बी.एस.ई ने कक्षा 10वीं का गणित और 12 वी अर्थशास्त्र विषयो का पर्चा दोबारा कराने का फैसला किया है।

-धार के विशेष सत्र न्यायाधीश हरिशरण यादव ने खरगोन जिले की अनुसूचित जनजाती की युवती के साथ सामूहिक दुष्कर्म के आरोपितों को घटना के 53वें दिन दोषी करार देकर सजा सुना दी।

- म्यांमार की स्टेट कारंसलर आंग सान सू की करीबी विनमित को बदेश का नया राष्ट्रपति चुना लिया गया।

■ 29 मार्च

- आम आदमी पार्टी के निलंबित सांसद धरमवीर गांधी ने पंजाब मंच बना लिया।

- श्री हरिकोटा (एजेंसी) भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने अपने जिओसिंक्रोनस रॉकेट जी.एस.एल.वी. एफ. 08 से संचार उपग्रह जीसैट ए 6 का सफल प्रक्षेपण कर दिया

-कोलकाता -केन्द्रीय मंत्री व आसन सोल के भाजपा सांसद बाबुल सुप्रियो को असानसोल में प्रवेश करने से पुलिस ने रोका।

■ 30 मार्च

- भोपाल : प्रदेश के सरकारी कर्मचारी अब 62 वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त होगें।

-कैलिफोनिया के एक कोर्ट ने कॉफी के कप पर भी कैंसर से खतरे की चेतावनी देने का आदेश दिया है।

- अलगावादी नेता सैयद अली शाह गिलानी पर से शुक्रवार को नजरबंदी हट गई।

■ 31 मार्च

- भोपाल प्रदेश के सरकारी कर्मचारियों को सेवानिवृत्ति उम्र 60 से 62 साल करने के फैसले के 24 घंटे के भीतर सी एम शिवराज सिंह ने इसके आदेश जारी कर दिए।

- झुंझुनूं कुंभाराम लिफ्ट केनाल मलसीमर में बना बांध टूट गया परियोजना कार्यालय में पानी भर गया।

इस्लामाबाद : नोबेल पुरुस्कार विजेता मलाला युसुफ जई पाँच साल बाद स्वात घाटी मे स्थित अपने घर पहुँची।

कविता

दर्शन पूजन करों प्रभु के

❊ रचयिताः कांति कुमार जैन करूण खिमलासा ❊

दर्शन पूज्य करो प्रभु के, इनके गुण महिमा गाओ।
सुख पाओगे जीवन में अब, निज में अबसमता लाओ।।
प्रभु ने मोक्ष नगर पाया है,
पाया है सुख शाश्वत जीवन।
नहीं लौटकर आयेंगे अब,
हुआ प्रभु का मन पावन।।

यह संसार असार जानकर, मेष दिगम्बर घर लाओ।
दर्शन पूजन करो प्रभु के, उनके गुण महिमा गाओ।
त्यागा वैभव परिवार सभी कुछ,
त्याग दयी मिथ्यात दशा।
गुरुवर बने जगत के स्वामी,
जीवन सफल किया है अतः ।।

नहीं रहा यह राग द्वेष भी, सुख का जीवन अपनाओ।
दर्शन पूजन करो प्रभु के, इनके गुण महिमा गाओ।।
संयम भाव बनाओं प्रभुवर,
संसार से पाये मुक्ति हम।
बहुत सहे दुख जीवन में अब,
करें साधना युक्ति हम।।

क्षण क्षण में दुख भोग रहे हम, कर्म का बंधन अरे मिटाओ।
दर्शन पूजन करो प्रभु के, इनके गुण महिमा गाओं ।।
आये चरण शरण में प्रभु के,
तुम्ही हमारे, स्वामी हो।
तुम्हीं जगाओं ज्ञान दिखाओं ,
प्रभुवर तुम शिव गायी हो।

करूण आया है शरण तुम्हारें, रत्नत्रय निधि हमें दिखाओं।
दर्शन पूजन करो प्रभु के, इनके गुण महिमा गाओं ।।

इसे भी जानिये

विश्व के प्रसिद्ध मरुस्थल

क्र.	रेगिस्तान	क्षेत्र (किमी.)	विस्तार क्षेत्र
1.	सहारा	84,00,000	अल्लीरिया, चाड, लीबिया, माली मारितानिया, नारजर, सूडान ट्यूनीरिया,मिस्त्र और मोरक्को।
2.	आस्ट्रेलियन	15,50,000	ग्रेट सैन्ड्री, ग्रेट विक्टोरिया, सिम्प्सन, गिप्सन तथा स्टुअर्ट रेगिस्तानी क्षेत्र इसमें सम्मिलित है।
3.	अरेबियन	13,00,000	दक्षिण अरब, सऊदी अरब, यमन सीरिया खाली क्षेत्र एवं नाफुद क्षेत्र के रेगिस्तान सम्मिलित है।
4.	गोबी	10,40,000	मंगोलिया और चीन
5.	कालाहारी	5,20,000	वोत्सवाना (अफ्रीका मध्य)
6.	टाकला माकन	3,20,000	सीक्यांग (चीन)
7.	सोनोरेन	3,10,000	एरीजोना एवं कैलीकोर्निया (यू.एस.ए. तथा मैक्सिको)
8.	नामिष	3,10,000	दक्षिण अफ्रीका (नामीषिया)
9.	कराक्रम	2,70,000	तुर्क मेनिस्तान
10.	यार	2,60,000	उत्तरी-पश्चिमी भारत और पाकिस्तान
11	सोमाली	2,60,000	सोमालिया (अफ्रीका)
12.	अतकामा	1,80,000	उत्तरी चिली (दक्षिणी अमेरिकी)
13.	काजिलकुम	1,80,000	उज्वेकिस्तान, कजाकिस्तान
14.	दस्ते-ए-लुट	52,000	पूर्वी ईरान
15.	मोजाब	35,000	दक्षिणी कैलीफोर्निया (सं. रा. अमेरिका)
16.	द सितो डे सेचूरा	26,0000	उत्तरी पश्चिमी पेरू (दक्षिणी अमेरिका)

दिशा बोध

शिक्षा की उपेक्षा

1. पर्याप्त ज्ञान के बिना सभा मंच पर जाना वैसा ही है, जैसा कि बिना चौपड़ के पाँसे खेलना।
2. उस अनपढ़ व्यक्ति को देखो, जो प्रभावशाली वक्ता बनने की वांछा कर रहा है। उसकी वांछा वैसी ही है, जैसे कि बिना उरोज वाली स्त्री का पुरुषों को आकर्षित करने की इच्छा करना।
3. विद्वानों के सामने यदि अपने को मौन बनाये रख सकें, तो मूर्ख आदमी भी बुद्धिमान् गिना जायेगा।
4. अनपढ़ व्यक्ति चाहे जितना बुद्धिमान् हो, विज्ञजन उसकी सलाह को कोई महत्व नहीं देंगे।
5. उस व्यक्ति को देखो, जिसने शिक्षा की अवहेलना की है और जो अपने ही मन में बड़ा बुद्धिमान है, सभा-गोष्ठी में वह अपना भाषण देते ही लज्जित हो जायेगा।
6. अनपढ़ व्यक्ति की दशा उस ऊसर भूमि के समान है, जो खेती के लिए अयोग्य है। लोग उसके बारेमें केवल यही कह सकते हैं, कि वह जीवित है, अधिक कुछ नहीं।
7. विद्वान का दरिद्र होना निस्सन्देह बहुत बुरा है, किन्तु मूर्ख के अधिकार में सम्पत्ति का होना तो इससे भी अधिक बुरा है।
8. सूक्ष्म तथा शुभ तत्वों में जिसकी बुद्धि का प्रवेश नहीं, उसकी सुन्दर देह मिट्टी की अलंकृत मूर्ति के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।
9. उच्चकुल में जन्म लेने वाले मूर्ख का उतना आदर नहीं होता, जितना निम्न कुल में जन्मे विद्वान् का।
10. मनुष्य पशुओं से जितना उच्च है, अशिक्षितों से शिक्षित भी उतना ही श्रेष्ठ है।

जैन पौराणिक साहित्य में संस्कार विधि

* साहित्याचार्य पं. मंयक शास्त्री (टीकमगढ़ म.प्र.)*

अनादि निधन जैन धर्म और संस्कृति की अजस परम्परा में अनेकों महापुरुषों ने अपने जीवन को संस्कारों से पवित्र कर मोक्षमहल को प्राप्त किया। तथा कुसंस्कारों के वश होकर संसारी प्राणियों ने अधः पतन भी प्राप्त किया।

व्यक्ति के जीवन की सम्पूर्ण शुभ और अशुभवृत्ति उसके संस्कारों के अधीन है, जिनमें से कुछ वह पूर्व भव से अपने साथ लाता है, और कुछ इसी भव में संगति व शिक्षा आदि के प्रभाव से उत्पन्न करता है। इसलिए गर्भ में आने के पूर्व से ही बालक में विशुद्ध संस्कार उत्पन्न करने के लिए विधान बताया गया है। गर्भावतरण से लेकर निर्वाण पर्यन्त यथावसर जिनेन्द्र पूजन व मंत्र विधान सहित 53 क्रियाओं का विधान है, जिनसे बालक के संस्कार उत्तरोत्तर विशुद्ध होते हुये एक दिन वह निर्वाण का भाजन बन जाता है।

चूंकि विधेय विषय जैन पौराणिक साहित्य में संस्कारविधि है अतः तदानुसार सर्वमान्य संस्कारों का वर्णन आचार्य श्री जिनसेन स्वामी प्रणीत आदिपुराण में श्रावक की 53 क्रियाओं के रूप में मिलता है।

जैनाचार्यों के मनुष्य की दशा के सुधारने का मार्ग प्रशस्त करते हुये उत्तम श्रावक बनने के लिए त्रेपन 53 प्रकार के संस्कार अर्थात् 53 क्रियायें करना आवश्यक बताया है। ये त्रेपन क्रियायें स्वयं अपने आप ऐसे संस्कार हैं। जिनकी प्राप्ति से यह मनुष्य भव सुसंस्कारित हो अत्युच्च ऐसे अनंत सुखों की प्राप्ति की तरफ अग्रसर हो पाता है। समीचीन संस्कारों से ही वह जितेन्द्रिय का पालक बन सकता है। जितेन्द्रिय द्वारा कथित जिनधर्म सुनने का अधिकार भी ऐसे जीवों को प्राप्त होता है जो संस्कारों से युक्त हों।

श्रद्धा, विवेक और क्रिया द्वारा अपने मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने वाला जैन श्रावक अपने बालक-बालिकाओं को सुसंस्कारित और सुशिक्षित किस प्रकार करे इसके लिये जैनाचार्यों ने श्रावक की 53 क्रियाओं का बहुत ही सुंदर निरूपण किया है।

प्रथम तो माता-पिता के रजवीर्य से बनने वाला पिण्ड, जहाँ जीव आता है, उस पर माता पिता के जीवन का प्रभाव पड़ता है। गर्भाधान के पश्चात् माता के सदविचार आचार एवं आहार-विहार के प्रभाव से बालक की शक्तियाँ दृढ़ होती है। जिस प्रकार खान से निकाले गये सोने को तपाकर अग्नि के संस्कार से शुद्ध किया जाता है उसी प्रकार एक व्यक्ति को भी पूजायोग्य सुसंस्कारों की अनेकों सीढ़ियाँ से मनुष्य योनि में आने से पूर्व से ही संस्कारित किया जाना आवश्यक है।

भोगभूमि में उपलब्ध सामग्री के अभाव में कर्मभूमि के प्रारंभ में हुए प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ ने असि,मसि, कृषि, शिल्प, सेवा वाणिल्य के उपदेश के साथ देवपूजा, गुरुपास्ति, स्वाध्याय, संयम, तप और दान इन गृहस्थ जीवन के दैनिक षट्कर्मों का जनता को उपदेश दिया और अपने प्रथम पुत्र भरत चक्रवर्ती को सुसंस्कृत

किया और स्वयं ने भी विवाह संस्कार द्वारा गृहस्थ जीवन के बाद का आदर्श प्रस्तुत करते हुये दिगम्बर मुनि की जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर मोक्ष का द्वार उद्घाटित किया।

तत्पश्चात् षट्खण्ड के विजय के उपरांत भारतवर्ष को अपने नाम से सार्थक बनाने वाले भरत चक्रवर्ती ने जिनेन्द्र देव की महामहपूजा अंतर्गत जनता को जिनागम को आधार से इज्जा, वार्ता, दत्ति, स्वाध्याय, संयम और तप का निर्देश करते हुये क्षत्रिय और वैश्य वर्ण में जिन संस्कार विधि का प्रचार प्रसार किया। उसका आचार्य जिनसेन स्वामी के आदिपुराण ग्रंथ के अनुसार जो कि श्रावक की 53 क्रियायें (संस्कार) नाम से प्रसिद्ध हैं उसका विचार यहा किया जा रहा है।

क्रिया यें (संस्कार) तीन प्रकार की बतायीं हैं-

गर्भान्वयक्रिया श्चैव तथा दीक्षान्वयक्रियाः।
कर्त्रन्वयक्रियाश्चेति तास्त्रिधैवं बुधैर्मताः
।।51।।आदिपुराण 38 पर्व

1. गर्भान्वय क्रिया संस्कार 2. दीक्षान्वय क्रिया 3. कर्त्रन्वय क्रिया

आधानाद्यास्त्रिपंचाशत्ज्ञेया गर्भान्वयक्रियाः।
चत्वारिंशदथाष्टौ च स्मृता दीक्षान्वयक्रियाः
।।52।।
कर्त्रन्वयक्रियाश्चैव सप्त तज्ज्ञैः समुंचिताः।
तासांयथाक्रमंनाम निर्देशोऽयमनूद्यते।।53।।
अंगानां सप्तमादंगाद् दुस्तरादर्णवादपि।
श्लोकैरष्टभिरून्नेष्ये प्राप्तं ज्ञानलवंमया।।54।।

गर्भान्वय क्रिया (संस्कार) आधानादि 53 जाननी चाहिये और दीक्षान्वय क्रियायें 48 समझना चाहिये इसके अतिरिक्त इस विषय के जानकर लोगों ने कर्त्रन्वय क्रियायें सात संग्रह की हैं।

1. गर्भाधान संस्कारः-आधानं नाम गर्भादौ संस्कारो मंत्रपूर्वकः।
पत्नीमृतुमतीं स्नातां पुरस्कृत्यार्हदिज्यया
।।71।। आदिपुराण पु.पु. 38

स्नान की हुई स्त्री को मुख्य कर गर्भाधान के पूर्व अरहंतदेव की पूजा और मंत्रपूर्वक जो पूजा संस्कार किया जाता है। उसे आधान क्रिया कहते हैं।

विवाह केवल विषयाभिलाषा की पूर्ति हेतु नहीं अपितु पुत्रोत्पत्ति एवं गृहस्थ जीवन द्वारा सदाचरण, लोक सेवा तथा आत्मोन्नति के उद्देश्य से किया जाता है।

गर्भ में आने वाले बालक को मानसिक और शारीरिक शक्तियों की दृढ़ता और कमलोरी माता द्वारा प्राप्त होती हैं। माता के मन, वचन और काय की क्रिया का असर बालक पर पड़ता हैं अतः माता को विवेकशील और धर्मात्मा होना चाहिये।

स्त्री मासिक धर्म के 4 दिन बार पांचवे दिन स्नानादि से शुद्ध होकर मंदिर जाकर जिनेन्द्र देव की पूजा स्वाध्याय आदि करना चाहिये।

आयुर्वेद और ज्योतिष के अनुसार मासिक धर्म के पाँचवे दिन से समरात्रि 6,8,10 जैसी रात्रि में पत्नि-पत्नि सहवास करे तो पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है और विषम रात्रि में सहवास से कन्या प्राप्ति होती है।इस प्रकार के संस्कार विधि से गर्भ में आने वाले आत्मा पर अच्छा प्रभाव डालना गर्भाधान क्रिया है।

2. प्रीति क्रियाः- गर्भाधान के पश्चात् तीसरे महिने में यह संस्कार किया

जाता है। इस क्रिया में भी पूर्वोक्त विधि से अरहंत पूजन करना चाहिये। दरवाजे पर तोरण बांधना चाहिये। पूजन के साथ ही 112 आहुतियों से हवन, पुण्याहवाचन, शांतिपाठ, समाधिपाठ, विसर्जन करना चाहिये। पति पत्नि पर पुष्पक्षेपण करते हुये नीचे लिखा मंत्र कहे।

त्रैलोक्यनाथो भव, त्रैकाल्यज्ञाती भव, त्रिरत्नस्वामी भव,

तदन्तर ऊँ कं ठ व्हः अ सि आ ऊ सा गर्भोमेंकं प्रमोदेन स्वाहा यह मंत्र तीन बार पढ़कर गर्भवती के उदर पर पति द्वारा जलसिंचन करावें।

प्रथम गर्भाधान क्रिया में भी पूजन हवनोपरांत नीचे लिखा मंत्र पढ़कर पति-पत्नि पर पुष्पक्षेपण करना चाहिये।

सज्जातिभागी भव, मुनिन्द्रभागी भव, सुरेन्द्रभागी भव, परामज्यभागी भव, अरहंत भागी भव, परमनिर्वाणभागी भव।

3. सुप्रीति क्रिया :- गर्भाधान से पांचवे महिने में यह संस्कार किया जाता हैं। इसमें पूर्ववत् पूजा, हवन, पुण्याहवाचन आदि करके निम्न प्रकार खास मंत्रों से आहुति व पुष्पों से आशीर्वाद देवे- **अवतार कल्याणभागी भव, मन्दरेन्द्राभिषेक कल्याणभावि भव, निष्कांति कल्याणभागी भव, अर्हन्त कल्याणभागी भव, परम निर्वाण कल्याणभागी भव।**

इस समय पति पत्नि के सिर की मांग में सिंदूर और 108 जौ के दानों की पहिले से तैयार कराई गई माला ऊँ, झं, वं, क्ष्वीं हं सः कान्तागले यवमालां क्षिपामी झौं स्वाहा मंत्र पढ़कर पत्नी के गले में पहनावें। पत्नी अपने आंखो में अंजन लगावे।

4. धृति या सीमंतोन्नयन संस्कारः- यह क्रिया सातवें माह में करे। इसका दूसरा नाम है खोल .....भरना। इसमें भी पूर्ववत अरहंत पूजा, हवन, पुण्याहवाचन आदि करें। नीचे लिखे मंत्रों से आहुती व आशीर्वाद देवें -

सज्जातिदातृभागी भव, सदगृहस्थदातृ भागी भव, मुनीन्द्रदातृ भव, सुरेन्द्रदातृभागी भव, परमराज्यदातृ भागी भव, आर्हन्त्यदातृ भागी भव, परमनिर्वाणदातृ भागी भव।

अनन्तर पुत्रवाली सौभाग्यवती स्त्री द्वारा तेल व सिंदूर में डूबोंकर शमी सोना वृक्ष की समिधा (सींक) से गर्भणी पत्नी के केशों की मांग भरी जावें। इसी दिन खोल में श्रीफल, मेवा, फल आदि भराकर पति पत्नि जिन मंदिर जावे, साथ में महिलाएँ भी गीत गाती जावें।

5. मोद संस्कार :- गर्भ से नौवें महीने में यह संस्कार किया जाता है। इसमें पूर्ववत अर्हन्त पूजा, यंत्रपूजा, हवन करे। साथ ही नीचे लिखे मंत्रों से आहुती व दम्पत्ति को आशीर्वाद देवें -

सज्जातिकल्याणभागी भव, सदगृहस्थ कल्याणभागी भव, वैवाहक्कल्याणभागी भव, मुनीन्द्रकल्याणभागीभव, सुरेन्द्रक ल्याणभागीभव, मन्दराभिषेक कल्याण भागी भव, यौवनराज्य कल्याणभागी भव।

पुण्याहवाचन शांति पाठ के बाद द्विज विद्वान या स्वयं पति गर्भणी के शरीर पर गात्रिका बांध मंत्रपूर्वक बीजाक्षर लिखते हैं

और मंगलाचार करके आभूषण पहनाकर उसकी रक्षा के लिए कंकण सूत्र बांधते हैं।

गर्भणी महिला को प्रतिदिन अँ हीं अर्हं असिआउसा नमः इस मंत्र का जाप (एक माला 108) करना चाहिए। ब्रह्मचर्यपूर्वक रहें, सादा भोजन करें। जिनवाणी के स्वाध्या में अधिक समय लगावें। हाथ चक्की से आटा पीसने का अभ्यास रखें।

6. प्रियोद्भ क्रिया :- बालक के जन्म के बाद यह क्रिया की जाती हैं, जन्म का 10 दिन का सूतक होने गृहस्थाचार्य या जिनको सूतक न लगे, वे जिन मंदिर में पूजा विधान करें। हवन में दिव्य नेमिविजयाय स्वाहा, परम नेमिविजयाय स्वाहा, अर्हन्त नेमिविजयाय स्वाहा, घातिजयों भव, श्री आदि देव्यः क्रिया कुर्वन्तु, मंदराभिषेकार्हो भवतु इन मंत्रों से आहुति देवें। पिता आदि भी पुत्र को देखकर यह आशीर्वाद देवें। बाजे आदि बजवावें।

7. नाम कर्म संस्कार :- जन्म से 12, 16 या 32 वें दिन शुभ नक्षत्र में यह संस्कार करें। इसमें भी अर्हन्त देव की पूजन आदि पूर्ववत् किया जाता हैं। 10 दिन का सूतक होने से जिनाभिषेक, पूजा, शास्त्र का स्पर्श नहीं है। मुनिराज भी यहाँ आहार नहीं लेते। अतः उपर्युक्त पूजन किया जाता हैं। घर का प्रसूति स्थान 45 दिन तक अशुद्ध रहता हैं। 45वें दिन नवजात शिशु को जिन मंदिर ले जावें। वह जिनेन्द्रप्रतिमा के सामने शिशु को माता नीचे सुला देवे और गृहस्थाचार्य या अन्य कोई व्यक्ति नव वार णमोकार मंत्र उसके कानों में सुनावें। बालक को उसी समय अष्ट मूलगुण (पांच उदम्बर और तीन मकार का स्थूल रूप से त्याग) धारण करा देवें और जैन बनावें। इस त्याग की जिम्मेदारी बालक के विवेकवान होते तक उसकी माता पिता की है। जिस घर में मद्य, मांस, मधु का भी त्याग न हो वह जैन घर कैसे माना जावें।

नामकर्म के लिये जन्मपत्रिका बनवाकर जिस राशि का नाम आवें उसके अनुसार 1008 जिन सहस्त्रनामों में से कोई भी अनुकूल नाम रख कर देंवे। कन्या का नाम पुराणों में प्रसिद्ध महिलाओं के अनुकूल रखें।

दिव्याष्टसहस्त्रनामभागी, विजयाष्टसहस्त्रनाम भागी भव, परमाष्टसहस्त्रनामभागी भव,

इन मंत्रो से आशीर्वाद किया जावे।

नाम घोषित करते समय ओं हीं श्रीं क्लीं अर्हं अमुक बालकस्य नाम करण करोमि। अयं आयुरारोग्यैश्वर्यवान् भवतु भवतु झौं झौं अ सि आ उ सा स्वाहा मंत्र पढ़ा जावें।

8. बहिर्यान क्रिया :- जन्म के बाद दूसरे-तीसने महिने में मंगल क्रिया वाद्यपूर्वक बालक को प्रसूति गृह से बाहर निकालना बहिर्यान क्रिया हैं। इसके आशीर्वाद मंत्र नीचे लिखे अनुसार हैं -

उपनयनिष्क्रांतिभागी भव, वैवाह निष्क्रांतिभागी भव, मुनीन्द्र निष्क्रांति भागी भव, सुरेन्द्रनिष्क्रांतिभागी भव, मंदराभिषेक निष्क्रांतिभागी भव, यौवराज्यनिष्क्रांतिभागी भव, महाराज्य निष्क्रांतिभागी भव, परमराज्य निष्क्रांति भागी भव, आर्हन्त्य निष्क्रांतिभागी भव

बालक को जिनालय में दर्शन करते समय ओ नमोर्हते भगवते जिनभास्कराय जिनेन्द्र प्रतिमा दर्शने बालकस्य दीर्घायुष्यं

आतादर्शन च यह मंत्र पढ़े।

9. निषद्या क्रिया :- जन्म से पांचवे माह में बालक को बैठाने की क्रिया की जाती है। उस समय पूर्व मुख कर सुखासन से बैठावें नीचे लिखे आशीर्वाद सूचक खास मंत्र पढ़े-

दिव्यासिंहासनभागी भव, विजय सिंहासनभागी भव, परम सिंहासनभागी भव।

10. अन्नप्राशन क्रिया:- जन्म से 7,8 या 9 माह बीत जीने पर अर्हन्त भगवन की पूजा पूर्वक बालक को अन्न आहार खिलाना अन्नप्राशन क्रिया है। इसका मंत्र है।

दिव्यामृतभागी भव, विजयामृतभागी भव, अक्षीणामृतभागी भव।

11. वर्ष-वर्धन (व्युष्टि) संस्कार क्रिया :- यह क्रिया बालक के एक वर्ष का होने पर करें । इस दिन जिन मंदिर में पूजा विधान करावें। बालक को भी जिन मंदिर भेजें। उसका जन्म दिवस मनावें। नीचे लिखे मंत्र से बालक को आशीर्वाद देवें -

उपनयन जन्म वर्ष वर्धनभोगीभव, वैवाहनिष्ठवर्धनभोगी भव, मुनीन्द्र जन्म वर्ष वर्धनभोगी भव, सुरेन्द्रवर्षवर्धनभोगी भव, मन्दराभिषेकवर्धनभोगी भव, यौवराज्यवर्ष वर्धनभोगी भव, महाराज्य वर्षवर्धनभोगी भव, परमराज्यवर्ष वर्धन भोगीभव, अर्हत्यराज्यवर्ष वर्धनभोगी भव।

12. चौल संस्कार (केशवाप क्रिया):- बालक के पाँच वर्ष होने पर यह क्रिया की जाती है। यूँ ता दो-तीन वर्ष में भी यह क्रिया की जा सकती है। जिनेन्द्रपूजन के बाद बालक का मूंडन करना चौल क्रिया है। इसका मंत्र इस प्रकार है:-

उपनयनमुँडभागी भव, निर्ग्रंथमुँड़भागी भव निष्क्रांतिमुँड़भागी भव, परमनिस्तारकेश भागीभव, सुरेन्द्रकेशभागी भव, परमराज्य केशभागी भव, अर्हन्त्यकेशभागी भव।

केश निकल जाने पर चोटी के स्थान पर केशर से स्वस्तिक बनावें, पुष्पक्षेपण करें। इसी समय कर्ण, नासिका वेध क्रिया भी करते है।

13. लिपि संख्यात क्रिया :- बालक के पाचवें वर्ष होने पर घर में पाठशाला में अक्षरों का दर्शन करने के लिए यह संस्कार किया जाता है। जिन मंदिर में या घर पर पूजा के बाद यह क्रिया करें। सर्वप्रथम ऊँ और ऊँ नमः सिद्धेभ्य बालक से पट्टी पर लिखावें और इनका उच्चारण करावें। इस समय आशीर्वाद सूचक निम्न मंत्र पढ़े-

शब्दपारगामीभव, अर्थपारगामी भव, शब्दार्थपारगामीभव। बालक को लिपि पुस्तक दी जावें।

14. उपनीति संस्कार क्रिया :- गर्भ से आठवें वर्ष में बालक पर यह उपनीति या यज्ञोपवित संस्कार किया जाता है। रक्षाबंधन के त्यौहार पर भी क्रिया सम्पन्न की जा सकती है। इसका मंत्र इस प्रकार है -

परमनिस्तारकलिंगभागी भव, परमर्षिलिंग भावी भव, परमेन्द्रिलिंग भागी भव, परमराज्यलिंगभागीभव, परमार्हन्त्यलिंग भागी भव, परम निर्वाणलिंग भागी भव।

यज्ञोपवीत पहनने का मंत्र-

ऊँ नमः परमशान्ताय शांतिकराय पवित्रीकरणांह रत्नत्रय यज्ञोपवीतम् दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

यज्ञोपवीत पहनने से अष्टमूलगुणों का स्थूलरूप से पालन हो जाता है। रात्रि भोजन त्याग भी करना होता है।

15. व्रतचर्या क्रिया: - करधनी, श्वेतधोती, उरेलिंग जनेऊ और शिरोलिंग-चोटी इन ब्रह्चर्य व्रत के योग्य चिन्हों को धारण करना व्रतचर्या क्रिया होती है। अध्ययन पूर्ण होने तक इन व्रतों का पालन करना चाहिए। इस अवधि मे पलंग पर सोना, उबटन लगाना आदि त्याज्य है। पांच अणुव्रत आदि व्रत पालन चाहिए। विद्याध्ययन होने तक ब्रह्मचर्यपूर्वक गुरुमुख से उपासका चार पढ़कर अध्यात्मशास्त्र, व्याकरण, न्याय, ज्योतिष, छंद अलंकार कोष, गणित आदि पढ़ने चाहिये। लौकिक शिक्षा प्राप्ति में भी उपर्युक्त संस्कारों से युक्त रहने से बहुत भी लाभ होते हैं।

16. व्रतावरण संस्कार क्रिया :- विद्याम्यास समाप्त होने पर यज्ञोपवीत, पांच अणुव्रत, अष्टमूलगुण आदि व्रतो के सिवाय शेष सभी जैसे पृथ्वी पर शयन करना, आभूषण त्याग आदि व्रतों को बारह या सौलह वर्ष बाद त्याग कर देना व्रतावरण क्रिया है। इस क्रिया के बाद गुरु की आज्ञा से वस्त्र, माला, आभूषण ग्रहण किये जाते हैं।

17. विवाह संस्कार क्रिया:- गुरु आज्ञापूर्वक सुकुल सज्जाति में उत्पन्न कन्या के साथ विधिवत् विवाह होना विवाह क्रिया है। मंगलाष्टक, अर्हन्तपूजा, हवन, पुण्याहवाचन, शांतिपाठ, विसर्जन आदि से यह क्रिया होती है।

18. वर्णलाभ क्रिया:- पिता की आज्ञानुसार धन धान्य संपदा लेकर अलग रहना यह वर्णलाभ क्रिया है।

19. कुलचर्या क्रिया:- पिता के द्वारा स्वतंत्रता प्राप्त कर विशुद्धि रीति से जीविका चलाना और देवपूजा आदि षटकर्म करना कुलचर्या क्रिया है।

20. गृहीशिता क्रिया:- गृहस्थाचार्य बनने योग्य क्रियाएँ करते हुए इस क्रिया को प्राप्त होना चाहिये।

21. प्रशांति क्रिया :- अनन्तर अपने पुत्र पर गृहभार छोड़कर स्वाध्याय उपवास आदि करते हुए अत्यंत शांति प्राप्त करना प्रशांति क्रिया है।

22. गृहत्याग क्रिया:- गृह आदि छोड़ने को उद्यत होना गृहत्याग क्रिया है।

23. दीक्षाद्य क्रिया :- दिगम्बर मुनिराज के पास जाकर क्षुल्लक दीक्षा लेना दीक्षाद्य क्रिया है।

24. जिनरुपता क्रिया :- दिगम्बर जैनेश्वरी दीक्षा जैनेश्वरी याने दिगम्बर मुनि की दीक्षा ग्रहण करना जिनरुपता क्रिया है।

25. मौनाध्ययनवृत्तित्व क्रिया :- साधु के शास्त्रज्ञान की समाप्ति होने तक मौनपूर्वक अध्ययन करना यह मौनाध्ययन वृत्तित्व क्रिया है।

26. तीर्थकृद्भावना क्रिया :- तीर्थंकर पद के कारणभूत सोलह कारण भावनाओं का चिन्तवन करना तीर्थकृद्भावना क्रिया है।

27. गुरुस्थानाभ्युपगम क्रिया :- गुरु के आचार्य पद के प्राप्त करने योग्य होकर आचार्य पद प्राप्त करना गुरुस्थानाभ्युपगम क्रिया है।

28. गणोपग्रहण क्रिया :- चतुर्विध

संघ के पालन करने में तत्पर होना गणोपग्रहण क्रिया है।

29. स्वगुरु-स्थानावाप्ति क्रिया :- अपने योग्य शिष्य को आचार्य पद भार समर्पण करना स्वगुरु-स्थानावाप्ति क्रिया है।

30. निःसङ्गत्वात्मभावना क्रियाः- शिष्य, पुस्तक आदि का ममत्व छोड़कर निःसंग होकर आत्माभावना में लीन होना निःसङ्गत्वात्म भावना क्रिया हैं ।

31. योगनिर्वाणसंप्राप्ति क्रियाः- मोक्ष में अपनी बुद्धि स्थापन कर ध्यान में तत्पर होना योगनिर्वाणसंप्राप्ति क्रिया है।

32. योगनिर्वाण साधन क्रियाः- चतुराहार त्याग कर शरीर के छोड़ने में उद्यत होना योगनिर्वाणसाधन क्रिया है।

33. इंद्रोपपाद क्रिया :- मन, वचन और काय के योगों की समाधि लगाकर प्राणों का त्याग कर इन्द्र पद में उत्पन्न होना इन्द्रोपपाद क्रिया है।

34. इन्द्राभिषेक क्रिया :- इन्द्रपद में जन्म होने के बाद देवगण मिलकर उस इंद्र का अभिषेक करते हैं वह इन्द्राभिषेक क्रिया है।

35. विधिदान क्रिया :- तदन्तर नम्रीभूत हुए देवों को उन उनके पद पर नियुक्त करना विधिदान क्रिया है।

36. सुखोदय क्रिया :- देवों से वेष्टित इन्द्रबहुत काल तक स्वर्ग सुख का अनुभव करता है वह सुखोदय नाम की क्रिया है।

37. इन्द्रपदत्याग क्रिया :- इन्द्र जब अपनी आयु की स्थिति थोड़ी रहने पर अपना स्वर्ग से च्युत होना जान लेता है तब वह देवों का समझाकर इन्द्रपद का त्याग करता है। उसे इन्द्रपद त्याग क्रिया कहते हैं ।

38. इन्द्रावतार क्रियाः- गर्भ में आने छः महीने पहले माता को सोलह स्वप्न होना, रत्नों की वर्षा आदि होना। पुनः वहाँ से च्युत होकर माता के गर्भ में आना इन्द्रावता क्रिया है।

39. हिरण्योत्कृष्ट जन्मता क्रिया :- हिरण्यगर्भ भगवान हिरण्यात्कृष्ट जन्म धारण करते हुए इस प्रकार गर्भ में ही मति, श्रुति, अवधि ज्ञान के धारक भगवान की यह हिरण्योत्कृष्ट जन्मता क्रिया है।

40. मन्दराभिषेक क्रिया :- भगवान का जन्म होने पर इन्द्रगण आकर सुमेरु पर लेजाकर अभिषेक करते है यह मंदराभिषेक क्रिया है।

41. गुरुपूजन क्रिया :- बिना किसी के शिष्य बने भगवान ही सबके गुरु है अतः इन्द्र आकर सर्व जगत के गुरु का पूजन करता है यह गुरुपूजन क्रिया है।

42. यौवराज्य क्रिया :- कुमार काल प्राप्त होने पर भगवान का युवराज पद का पट्ट बंध किया जाता है यौवराज्य क्रिया है।

43. सम्राटपद क्रियाः- सम्राट पद पर अभिषिक्त होना सम्राट पद क्रिया है।

44. चक्रलाभ क्रिया :- चक्ररत्न की प्राप्ति होने पर यह चक्रलाभ क्रिया होती है।

45. दिशांजय क्रिया :- चक्ररतन को आगे कर दिशाओं को जीतना दिशांजय क्रिया है।

46. चक्राभिषेक क्रियाः- दिग्विजय पूर्ण कर अपने नगर में प्रवेश करके पर चक्राभिषेक नाम की क्रिया होती है।

47. साम्राज्य क्रिया :- साम्राज्य पद पर अभिषिक्त हाने पर भगवान अनेक राजाओं

को शिक्षा देकर न्याय नीति बतलाते है यहा साम्राज्य क्रिया हैं।

48. निष्क्रांति क्रियाः- राज्य से विरक्त होने पर भगवान अनेक राजाओं को शिक्षा देकर न्याय नीति बतलाते हैं यह साम्राज्य क्रिया है।

49. योगसम्मह क्रिया :- भगवान बाह्य अंतरंग परिग्रह छोड़कर ध्यान में लीन होते हैं तब केवल ज्ञान तेज प्रगट हो जाता है वह योग सम्मह क्रिया है।

50. आर्हन्त्य क्रियाः- केवलज्ञान उत्पन्न होने पर समवशरण की रचना होती है वह आर्हन्त्य क्रिया है।

51. बिहार क्रिया :- धर्मचक्र को आगे कर भगवान का विहार होता है वह विहार क्रिया है।

52. योगनिरोध क्रिया :- विहार समाप्त होकर समवशरण विघटित हो जाने पर भगवान का योग निरोध होता है। वह योग निरोध क्रिया है।

53. अग्रनिवृत्ति क्रिया :- अघातिया कर्मों का नाश हो जाने से मोक्ष से स्थान पर पहुँच जाने पर अग्रनिवृत्ति क्रिया होती है।

इस प्रकार गर्भाधान से लेकर निर्वाण याने मोक्ष पर्यंत मिलाकर त्रेपन क्रियायें होती है। भव्य जीवों को उनका सदा अनुष्ठान करना चाहिए।

दीक्षान्वय सामान्य लक्षण :- वृत्त को धारण करने के सम्मुख व्यक्ति विशेष की प्रवृत्ति से संबंध रखने वाली क्रियाओं को दीक्षान्वय क्रियायें कहते हैं।

1. अवतार :- मिथ्यात्व से दूषित होकर कोई भव समीचीन मार्ग को ग्रहण करने के सम्मुख हो तो किन्हीं मुनिराज अथवा गृहस्थाचार्य के पास जाकर यथार्थ देवशास्त्र, गुर व धर्म के संबध में योग उपदेश प्राप्त करके मिथ्या मार्ग से प्रेम हटाता है। और समीचीन मार्ग में बुद्धि लगाता है। गुरु की उस समय पिता है। और तत्वज्ञान रूप संस्कार ही गर्भ है। यहाँ यह प्राणी अवतार ग्रहण करता है।

3. वृत्तलाभ :- गुरु के द्वारा प्रदत्त वृत्तों को धारण कर देना चाहिये।

3. स्थान लाभः- गृहस्थाचार्य उसके हाथ से मंदिर जी में जिनेन्द्र भगवान के समवशरण की पूजा करावें तदनंतर उसका मस्तिष्क स्पर्श करके उसे श्रावक की दीक्षा दें। तत्पश्चात विधिपूर्वक पंच नमस्कार मंत्र प्रदान करें।

4. गण ग्रहण :- मिथ्या देवताओं को शांतिपूर्वक विर्सजन करता हुआ अपने घर से हटाकर किसी अन्य स्थान में पहुँचाना।

5. पूजाराध्यः- जिनेन्द्र देव की पूजा करते हुए द्वादशांग का अर्थ ज्ञानी जनों के मुख से सुनना।

6. पुण्ययक्ष :- साधर्मी पुरुषों के साथ पुण्य वृद्धि के कारण भूत 14 पूर्व विद्याओं का सुनना।

7. दृढ़चर्या :- शास्त्र के अर्थ का अवधारण करके स्वमत में दृढ़ता रखना।

8. उपयोगता :- पर्व के दिन में उपवास में अर्थात् रात्रि के समय प्रतिमा योग धारण करके ध्यान करना।

इन आठ क्रियाओं साथ गर्भान्वय क्रियाओं में से उपनीति नाम की 14वी क्रिया से अग्रनिवृत्ति नाम की 53वीं क्रिया तक की 40 क्रिया मिलाकर कुल 48 दीक्षान्वय

क्रियायें कहलाती हैं।

कंर्त्रन्वयादि 7 क्रियायें :- कर्त्रन्वय क्रियायें वे हैं जो कि पुण्य करने वाले लोगों को प्राप्त हो सकती हैं और जो समीचीन मार्ग की अराधना करने के फलस्वरूप होती हैं।

1. सज्जाति- रत्नत्रय की प्राप्ति का कारण भूत मनुष्य जन्म उसमें भी पिता का उत्तम कुल और माता की जाति में उत्पन्न हुआ कोई भव्य जिस समय यज्ञोपवीत आदि संस्कारों को पाकर पर ब्रह्म को प्राप्त होता है, तब आयोनिज दिव्य ज्ञानरूपी गर्भ से उत्पन्न हुआ होने के कारण सज्जाति को धारण करने वाला समझा जाता है।

2. सदगृहित्व :- गृहस्थ योग्य असि मसि आदि षटकर्मों का पालन करता हुआ, पृथ्वी तल पर ब्रह्म तेज के वेद या शास्त्र ज्ञान हो स्वयं पढ़ता हुआ और दूसरों को पढ़ाता हुआ वह प्रशंसनीय देव-ब्राह्माणत्व को प्राप्त होता हैं अर्हन्त उसके पिता है रत्नत्रय रूप संस्कार उनकी उत्पत्ति की अगर्भज योनि है। जिनेन्द्र देवरुप ब्रह्मा की संतान है, इसलिए व देव ब्राह्माण है। उत्तम चारित्र को धारण करने के कारण वर्णोत्तम है, ऐसा सच्चा जैन श्रावक ही सच्चा द्विज व ब्राह्मणोत्तम है। मैत्री, प्रमोद, कारुण्य व माध्यस्थ्यादि पक्ष तथा चर्या व प्रायश्चित्तादि साधन के कारण उनसे उद्योग संगंधी हिंसा का भी स्पर्श नहीं होता। इस प्रकार के गुणों के द्वारा अपने श्रावक आत्मा की वृद्धि करना सदगृहित्व किया है।

3. परिव्राज्य :- गृहस्थ धर्म का पालन कर घर के निवास से विरक्त होते हुए पुरुष का जो दीक्षा ग्रहण करना है उसे परिव्रज्या कहते हैं। ममत्व भाव को छोड़कर दिगम्बर रूप धारण करना यह पारिव्राज्य क्रिया है।

4. सुरेन्द्रता :- परिव्राज्य के फलस्वरूप सुरेन्द्र पद की प्राप्ति।

5. साम्राज्य :- चक्रवर्ती का वैभव व राज्य प्राप्ति।

6. परमार्हन्त्य :- अर्हन्त परमेष्ठी को जो पंचकल्याणक रूप संप्रदाओं की प्राप्ति होती है, उसे आर्हन्त्य क्रिया जानना चाहिये।

7. परमनिर्वाण :- अंत में सर्वकर्म विमुक्त सिद्ध पद की प्राप्ति।

ये सात स्थान तीनों लोके में उत्कृष्ट माने गये हैं और ये सातों ही अर्हन्त भगवान के वचनरूपी अमृत के आस्वादन से जीवों को प्राप्त हो सकते हैं। आचार्यों ने इन क्रियाओं का अनेक प्रकार माना है। परंतु यहाँ विस्तार छोड़कर संक्षिप्त वर्णन किया गया है।

आदिपुराण के रचयिता भगवज्जिन सेनाचार्य ने गर्भाधान आदि समस्त क्रियाओं का संस्कार विधि का महत्वपूर्ण प्रभाव बताते हुए कहा है कि जिस प्रकार विशुद्ध खान से उत्पन्न हुआ मणि संस्कार विधि से अत्यंत उज्जवल व कांतिशाली हो जाता है, उसी प्रकार यह आत्मा भी गर्भाधान आदि संस्कार व मंत्रों के संस्कार से उज्जवल, अत्यंत निर्मल व विशुद्ध हो जाता है। एवं जिस प्रकार सुवर्ण पाषाण उत्तम संस्कार क्रिया (छेदन, भेदन व आग्रपुटपाक आदि) से शुद्ध हो जाता है, उसी प्रकार भव्य पुरुष भी उत्तम क्रियाओं -संस्कारों को प्राप्त हुआ विशुद्ध हो जाता है। यह संस्कार धार्मिकज्ञान से उत्पन्न होता है और सम्यग्ज्ञान सर्वोत्तम है।

आओ सीखे : जैन न्याय

ज्ञानान्तर ज्ञानवेद (नैयायिक)

नैयायिक मत की सबसे बड़ी धारणा है कि ज्ञान स्व संवेदित नहीं होता, ज्ञान को तो दूसरा ज्ञान ही जानता है। जैसे- घट आदि प्रमेय होने से ज्ञान के द्वारा ही जाने जाते हैं उसी प्रकार ज्ञान भी ज्ञान के द्वारा जाना जाता है, ज्ञान भी प्रमेय है, अगर कोई आपत्ति देता है कि ईश्वर का ज्ञान प्रमेय है तो उस ज्ञान को ईश्वर दूसरे ज्ञान से नहीं जानता है तो ये आपका कथन दोष युक्त हो जायेगा किन्तु ऐसा कहना ठीक हैं कि ईश्वर का ज्ञान हम लोगों के ज्ञान से विशिष्ट होता है इसलिये ईश्वर के लिये दूसरे ज्ञान की जरूरत नहीं पड़ती है ईश्वर का ज्ञान तो स्वयं ही अपने को जान लेता है किन्तु हमारे ज्ञान को जानने के लिये दूसरे ज्ञान की जरूरत पड़ती है। तर्क -

तर्क 1- अर्थज्ञान और उस पदार्थ का ज्ञान क्रम से उत्पन्न होता है तो उसी क्रम से उसका अनुभव होना चाहिये नैयायिक इस तर्क का खण्डन करते हुये कहते हैं कि जिस तरीके से सौ कमलों के पत्तों को एक साथ रखकर छेद किया जाए तो उसमें समयभेद का अंतर तो रहता है पर प्रतीत नहीं होता है।

तर्क 2 - अर्थज्ञान का प्रत्यक्ष दूसरे ज्ञान से होता है और दूसरे ज्ञान का तीसरे ज्ञान से, तीसरे ज्ञान का चौथे ज्ञान से, इस प्रकार माननेपर अनवस्था दोष उत्पन्न होता है परन्तु वे कहते हैं तीसरे ज्ञान से काम चल जाता है चौथे ज्ञान की आवश्यकता नहीं, इसलिये अनवस्था दोष नहीं आयेगा।

तर्क 3 - अर्थ की जिज्ञासा होने पर अर्थ का ज्ञान होता है और ज्ञान की जिज्ञासा होने पर ज्ञान उत्पन्न होता है यह बात प्रतीति सिद्ध है।

तर्क 4 - नैयायिक मत वाले स्वसंवेदन प्रत्यक्ष का खण्डन करनेके लिये दो विकल्प प्रस्तुत करते हैं कि स्वसंवेदन से मतलब क्या है ? स्व के द्वारा संवेदन अथवा स्वकीय संवेदन। यदि स्वकीय द्वारा संवेदन को स्वसंवेदन कहतेहैं तो नैयायिक कहतेहैं हमें कोई आपत्ति नहीं, क्योंकि कितनी भी तीखी तलवार अपने आप को नहीं काट सकती, कितना भी प्रशिक्षित नट अपने कंधे पर नहीं चढ़ सकता है। उसी प्रकार ज्ञान स्वयं को नहीं जान सकता है। अतः ज्ञान स्वप्रकाशक है क्योंकि वह अर्थ का प्रकाशक है यह कथन उचित नहीं हैं।

नैयायिकों के इस प्रकार सम्पूर्ण तर्कों को सुनने के बाद उनकी आलोचना बिन्दुवार की गई, क्योंकि उनका मत भारतीय दर्शनों के सभी विद्वानों को मान्य नहीं हैं।

1. ईश्वर का ज्ञान स्वसंवेदित है यह बात किस आधार पर कही जाती है किसी युक्ति के आधार पर या यूँ ही। यदि यूँ ही कही जाती है तो नैयायिकों की बात में कोई दम नहीं है।

2. यदि युक्ति के आधार पर ईश्वर के ज्ञान को स्वसंवेदित मानते हो तो वह युक्ति क्या है ? ईश्वर का ज्ञान अर्थ को ग्रहण करता है इसलिये वह स्वसंवेदित है अथवा ज्ञान होने से वह स्वसंवेदित है ये दोनों बातें हम लोगों के ज्ञान में भी पायी जाती है इसलिये ईश्वर का ज्ञान और हमारा ज्ञान स्वसंवेदित हो जायेगा।

3. ईश्वर का ज्ञान हमारे ज्ञान से विशिष्ट है इसलिये वह ज्ञान स्वसंवेदित है हमारा ज्ञान नहीं।

इस नैयायिक मत का खण्डन करते हुये नैयायिक कहते हैं तब तो ज्ञानपना और अर्थ ग्रहण पना भी ईश्वर में पाया जाता है हमारे ज्ञान में उनका भी निषेध करना पड़ेगा।

4. अर्थग्रहपना और ज्ञानपना दोनों के अभाव में ज्ञान, ज्ञान नहीं रह सकता जैसे सूर्य के प्रकाश में तो यह अर्थ ग्रहण पने का स्वभाव हो और दीपक के प्रकाश में न हो तो यह नहीं हो सकता है क्योंकि दीपक और सूर्य स्व-पर प्रकाशक हैं इसलिये ज्ञान पना और अर्थ ग्रहण पने में स्व संवेदनत्व के बिना ज्ञान नहीं हो सकता है।

5. यदि ईश्वर ज्ञान की तरह हम लोगों का ज्ञान भी स्वपर व्यवसायी हो जायेगा तो हम भी ईश्वर की तरह सर्वपदार्थ के ज्ञाता हो जायेंगे, नैयायिक मत के इस आपत्ति कथन का खण्डन करते हुये कहा है कि दीपक-सूर्य की तरह ज्ञान स्वपर प्रकाशक होता है किन्तु वह अपने योग्य, नियत, देशवर्ती पदार्थों में ही प्रकाशन करता है उसी तरह हम लोगों का ज्ञान भी ईश्वर, ज्ञान की तरह स्वपर व्यवसायी तो है किन्तु अपने योग्य पदार्थों को ही जानता है।

6. सब ज्ञानों की योग्यता अपने-अपने ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम के अनुसार होती है।

निष्कर्ष - स्वसंविदित्व के आधार पर ईश्वर ज्ञान और हमारे ज्ञान में कोई अंतर नहीं हैं।

7. अर्थ संवेदन और आत्मसंवेदन एक ही समय में होता है कमलपत्रों का उदाहरण मूर्तिक है वह अमूर्तिक में लागू नहीं होगा।

8. अपना और विषय का प्रकाशन एक समय करने में कोई विरोध नहीं आता है।

9. स्वात्म में क्रिया का विरोध नहीं आता है क्योंकि क्रिया के अर्थ चार रूप में ग्रहण किये जा सकतेहैं।

अ) उत्पत्ति रूप क्रिया

ब) हलन-चलन रूप क्रिया

स) धातु अर्थ रूप क्रिया

द) जानने की क्रिया

यदि उत्पत्ति रूप क्रिया का विरोध है तो होने दो हम नहीं मानते हैं कि ज्ञान स्वयं को उत्पन्न करता है उसकी उत्पत्ति तो अपनी सामग्री से होती है।

10. हलन-चलन रूप क्रिया तो द्रव्य में होती है धात्वर्थ क्रिया सकमर्क-अकर्मक दो रूप में होती है जैसे वृक्ष खड़ा है यह अकर्मक क्रिया है ज्ञान प्रकाशित होता है यहाँ भी प्रतीति होने से कोई विरोध नहीं होना चाहिये।

11. ज्ञान अपने को जानता है यह सकर्मक क्रिया स्वात्म में नहीं हो सकती क्योंकि उसका कर्ता और कर्म अलग होते हैं यह नैयायिक का कथन विरोध को प्राप्त होता है क्योंकि आत्मा अपना घात करता है और दीपक अपना प्रकाशन करता है इसी तरह जानने रूप क्रिया में स्वात्मा में विरोध नहीं आता है अन्यथा दीपक का भी स्वपर प्रकाशत्व रूप अपने स्वभाव के साथ विरोध मानना पड़ेगा।

12. ज्ञान स्व पर व्यवसायी होकर जन्म लेता है।

13. पूर्व ज्ञान को यदि उत्तर ज्ञान जानता है तो ज्ञान को उत्पन्न करनेमें ही मन लगा रहेगा। अतः न कभी पदार्थ का ज्ञान हो पायेगा न अर्थज्ञान का। क्योंकि अर्थज्ञान, ज्ञान के अप्रत्यक्ष होने से अर्थ का भी प्रत्यक्ष नहीं हो सकता है।

अन्यथा दूसरे मनुष्य के ज्ञान से भी अर्थ का प्रत्यक्ष हो जायेगा क्योंकि हमारे लिए जैसा अपना ज्ञान प्रत्यक्ष नहीं है वैसे ही दूसरे का ज्ञान भी प्रत्यक्ष नहीं है।

14. अर्थ की जिज्ञासा होने पर अर्थ का ज्ञान उत्पन्न होता है और ज्ञान की जिज्ञासा होने पर ज्ञान का ज्ञान उत्पन्न होता है इसलिये अनवस्था दोष नहीं आता है। अतः नैयायिक का यह कथन जैन के गले नहीं उतरता क्योंकि जिज्ञासा से ज्ञान की उत्पत्ति नहीं होती। क्योंकि घोड़े के अभाव में घोड़े को देखने की इच्छा होने पर घोड़े के दर्शन नहीं होते और सामने गाय के आ जानेपर गाय के देखने की इच्छा न होने पर भी गाय के दर्शन हो जाते हैं तथा ज्ञान को ज्ञानान्तर के द्वारा ग्राह्य मानने पर ज्ञान अज्ञान हो जायेगा जैसे एक दीपक को जाननेके लिये दूसरे दीपक की जरूरत की तरह।

निष्कर्ष - इसलिये ज्ञान को दूसरे ज्ञान से जानने या ज्ञानान्तर वैद्य न मानकर स्वसंविदित मानना ही उचित है।

कहानी

सम्माननीय सुनीता

नीमच का परेट ग्राउंड जनमेदनी से खचा खच भरा था। चारों तरफ तिरंगे ही तिरंगे दिख रहे थे। पुलिस व सेना के जवान एन सी सी के छात्र अपनी सलामी दे चुके थे। चारों तरफ राष्ट्रीय गीत गूंज रहा था। कही सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्ता हमारा का तराना

गूंज रहा था तो कहीं से गाना सुनाई दे रहा था कर चले हम फिदा जाने वतन साथियो सांस्कृतिक कार्यक्रम मंच पर शुरु हो रहा था हर विद्यालय के बच्चे अपनी अपनी प्रस्तुती दे रहे थे धूमधाम से गणतंत्र दिवस के इस समारोह में जिले की विभूतियों का सम्मान होना था जब सम्मान का दौर शुरु हुआ तब संचालक ने आवाज लगाई सम्मानीय सुनीता मंच पर आये सुनीता का नाम सुनकर कई पत्रकार यह तय नहीं कर पा रहे थे कि आखिर सुनीता के लिय यह सम्मान क्यों दिया जा रहा है पत्रकार विशाल लोड़ा ने अपने कैमरे का फोकस सम्माननीय सुनीता की और बनाने की कोशिश की पर उसे ऐसा नहीं लगा कि सुनीता में कोई ग्लेमर है सादी- सी हरी साड़ी में सांवले रंग की माध्यम कद वाली एक महिला अपने सादे लिवास में मंच की ओर बढ़ रही थी। विशाल लोड़ा अपनी उत्सुक्ताओं को किसी प्रकार से भी रोक नही पा रहा था। वह यह जानना चाह रहा था कि सम्माननीय सुनीता की वह कौन सी कहानी है जिस कारण से पुलिस अधीक्षक महोदय ने 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के समारोह पर इन्हें सम्मानित किया है। हां इतना अवश्य मंच संचालक ने घोषित किया सम्माननीय सुनीता को ईमानदारी के कारण इस सम्मान से नवाजा जा रहा है। विशाल लोड़ा सुनीता को सम्मान मिलने के बाद अपना मूवी कैमरा लेजाकर साक्षात्कार कर लेने का मन बनाया। विशाल लोड़ा अपने सहायकों के साथ जब सुनीता से सम्पर्क करने पहुँच ही रहा था तब तक सुनीता कार्यक्रम स्थल से अपने घर की ओर प्रस्थान कर चुकी थी।

विशाल ने अपनी मोटर साइकित से सुनीता के घर पहुँचने का प्रयास किया है बहुत ज्यादा खोजबीज करने के बाद आखिरकार विशाल उसके घर तक पहुँच गया जिस घर का छप्पर टीन का था और एक मंजिला था छोटा सा दरवाला देखकर विशाल को बड़ा आश्चर्य हुआ कि मुश्किल से दो तीन कमरा वाले मकान में रहने वाली महिला के लिए इतना बड़ा सम्मान दिया गया।

इसकी कहानी निश्चित तौर पर चौकाने वाली होगी मकान के आगे कोई घंटी नहीं लगी थी अन्दर से दरवाजा बन्द था विशाल लोड़ा ने सांकल को बजाया तब थोड़ी देर बाद एक दस

बारह साल का बालक दरवाजा खोलकर के सामने खड़ा हो गया तब विशाल लोड़ा ने कहा क्यों बेटे सुनीता का निवास यही जिनको आज ईमानदारी का सम्मान मिला है। तब उस बालक ने कहा हां विशाल ने कहा क्या आपकी मां घर में है ? तो उस बालक ने हां अभी परेड ग्राउंड से लौटी हैं तब विशाल ने कहा जाओ उनसे बोलो कि इण्डिया चैनल के पत्रकार आपसे कुछ चर्चा करना चाहते हैं। तब मयंक भी थोड़ा उत्साह में आ गया उसने जब देखा मूवी कैमरा लेकर इंडिया टीवी चैनल के तीन लोग खड़े हैं वह दौड़कर भीतर गया और अपनी लेटी हुई मां से बोला मम्मी इंडिया टीवी चैनल के लोग आये हैं वो आपका इंटरव्यु लेना चाहते हैं तब सुनीता ने कहा मयंक उनसे कह दो कि अभी मैं थकी हुई हूँ यदि वो और कभी आ जायें तो अच्छा होगा।

मयंक ने अपनी मां का संदेश विशाल लोड़ा को सुना दिया।

विशाल लोड़ा शाम को फिर से अपनी टीम के साथ सुनीता के निवास स्थान पर पहुँच गया। सुनीता अहीर के घर पहुँ च कर विशाल ने अपनी बात प्रारंभ की। उसने कहा बहिन जी हम आपसे कुछ जानकारी चाहते हैं क्या आप बता पायेंगी कि आपको आज जो गणतंत्र दिवस पर ईमानदारी का सम्मान मिला है उसकी कहानी क्या है। पहले यह बतायें कि घटना कहाँ से प्रारंभ हुई।

सुनीता ने कहा कि मैं चित्तौड़गढ़ का किला देखने गयी थी। क्योंकि अखबार में तो कई बार मैने किले के चित्र देख रखे थे, मन हुआ कि एक बार उसे रूबरू देखे। हम चित्तौड़ गये नीमच एक्सप्रेस से प्रातः 8 बजे चित्तौड़गढ़ की लिए निकल गये वहाँ लगभग एक बजे हम चित्तौड़गढ पहुँचे वहाँ पहुँचने के बाद रेलवे स्टेशन से ऑटो पकड़ कर सीधे किले पहुँचे।

किले का भ्रमण कर हम परिवार सहित कीर्ति स्तंभ को देखा एक पाषाण निर्मित कला युक्त इस स्मारक को देखने के बाद मन में एक सोच आया कि आदमी की कीर्ति उसके कर्म से बनती है। आदमी तो मर जाता है पर उसकी कीर्ति अमर हो जाती है। संसार के जितने भी प्राणी हैं उन प्राणियों में सिर्फ मनुष्य एक ऐसा है जो पैसा कमाता है और वह पेट के लिए नहीं पेटी के लिए कमाता है चोरी चकारी सब कुछ पैसे के लिए करता है। खोटे काम करके पैसा कमा लेता है पर दूसरे का भला करने के लिए दो पैसा खर्च करने में भी सोचता है। पत्थर के ये बुलंद भवन देखकर मेरा मन यह कहने लगा कि जिन्होंने अपनी करनी अच्छी रखी है उनके ही नाम के पत्थर लगाकर लोग उनकी पूजा करते हैं तो हमें उनके पत्थरों को देखकर एक सबक लेना चाहिए हम ऐसा कुछ काम करें जिससे हमारे नाम का भी कोई पत्थर लगाये।

मैं चित्तौड़गढ़ की पूरी चीजें देखकर लौट रही थी और ट्रेन से नीमच के पास लगभग आ चुकी थी कि तभी वाथरूम के पास एक बेग दिखा मयंक ने मुझे आवाज दी बोला मम्मी - मम्मी शिवा अंकल कैसे हैं कुछ समझ में नहीं आता है देखो वो अपना सामान ही छोड़कर उतर गये मैंने मंयक से कहा बेटा शिवा अंकल बहुत जिम्मेदार व ईमानदार अनुशासित व्यक्ति हैं वे कोई भी ऐसा काम नहीं करते हैं जिससे उन पर कोई उगंली उठा सके तुझे ऐसा क्या लगा जो तूम उन पर ऐसी बात कर रहा है ? मयंक ने कहा मम्मी देखो न अंकल जी अपना बेग छोड़कर चले गये मैंने जल्दी में बैग को

हाथ में लिया व दूसरा हाथ मयंक का पकड़ा और ट्रेन से नीचे उतर गई घर आने के बाद मैने शिवाली को फोन लगया और कहा आप आकर अपना बेग ले जायें।

शिवाजी ने घर आने से मना करता हुए कहा मेरा सारा सामान मेरे पास है कोई भी बेग मेरा नहीं छुटा है। यह बात सुनकर मेरी धड़कन बड़ गयी मैने सोचा मैंने यह क्या किया। किसका बैग मैं उठा लाई। क्या पता इसमें क्या होगा क्या नहीं होगा।मुझे शंका हुई कही ऐसा तो नही इसमें कोई आतंकी मामला हो। तब मैंने बैग को खोलकर देखा बैग को खोलने के बाद उमें मैंने देखा नगदी 11 लाख रूपये थे और सोना चांदी का सामान था मै इतना सारा सामान देखकर घबरा गई। मैने सोचा ऐसा न हो कि किसी की शादी विवाह की खरीददारी का सामान हो तभी मैं पूर बैग लेकर एस पी आफिस पहुँच गई।

विशाल लोड़ा ने पूछ सुनीता जी आप एक बात बताईये कि आप पुलिस थाने ना जाकर सीधे एस पी आफिस क्यों पहुँची सुनीता ने कहा मुझे एक बात की शंका थी कि पुलिस थाना जाने से एकतो मुझे परेशानी बढ़ सकती थी दूसरी बात बैग के सामान में हेरा फेरी हो सकती थी इसलिए में थाने नही गई इसके आगे कि बात यह भी थी चूकि मैं बैग खोल चुकी थी इसलिए मेरे उपर भी हेरा फेरी का आरोप आ सकता था अतः मैंने एस पी आफिस जाना ही उचित समझा।

विशाल ने कहा सुनीता जी एक बात बताईये इतनी बड़ी रकम अगर आप खुद रख लेती तो किसको क्या पता लगता सुनीता ने कहा भैया मेरी मां कम पढ़ी लिखी थी पर उसने बचपन से मुझे एक की बात सिखाई थी कि बेटी चोरी और जुआ से आया हुआ धन कभी फलता नहीं है। बल्कि अपने साथ में अपनी मेहनत की कमाई का धन भी ले जाता है आखिरी में आदमी बर्बाद हो जाता है। भैया मेरे पास जितना धन है अथवा जो कुछ भी है वह मेरे लिये पर्याप्त है यदि आदमी के पास तीन लोक का पूरा वैभव भी आ जये और यदि उसके पास संतोष न रहे तो वह भी सुखी नहीं रह सकता है। इसलिए मुझे दूसरे का पत्थर के समान नजर आता है। धूलमिट्टी सा लगता है अतः भैया मैंने पूरा बैग एस पी आफिस में ही जमा कराना उचित समझा बैग में एक बिजीटिंग कार्ड भी निकला था उसमें एक मोबाईल नंबर भी लिखा था। उसके अनुसार हमने सम्पर्क किया अजमेर के वीरेन्द्र गोधा का वह बैग निकला जब उनको पता लगा कि मेरा बैग एस पी आफिस नीमच में सुरक्षित है तब बे अजमेर से नीमच आये और अपना पूरा सामान बैग में पाया तो उन्हें भी बहुत खुशी हुई उन्होंने मुझे कुछ इनाम देना चाहा मैने तुरंत उसे अस्वीकार कर दिया परन्तु आज मुझे सम्मानीय एस पी साहब ने गणतंत्र उत्सव समारोह में बुलाकर जो सम्मान दिया है वह मेरी बहुत बड़ी धरोहर बन गयी है मैं उस समय गदगद हो गयी और मेरी आंखो से आंसू भी बहने लगे जब संचालक महोदय ने मुझ मंच पर बुलाते हुए कहा कि सम्माननीय सुनीता जी मंच पर आयें तब मुझे लगा कि आज मुझे संसार की सम्पूर्ण सम्पदा मिल चुकी है। मेरी नजरों में और कोई सम्पदा कुछ भी महत्व नहीं रखती है क्योंकि सुख सम्पदा से नहीं अपितु आत्मा से मिलता है। सुनीता की बात सुनकर विशाल अभीभूत हुआ और प्रणाम करते हुए आगे बढ़ गया। बस यही सोचता गया आज भी ईमानदारी जिन्दा है।

आचार्य विद्यासागर जी के सपनों का मंदिर

❊ ब्र. समता मारौरा (इन्दौर) ❊

ईसा पूर्व 350 वर्ष मंदिर निर्माण का प्रारम्भ हो गया था गुफा मंदिर के रूप में उदयगिरि खंडगिरि की रानीगुफा एवं हाथी गुफा का निर्माण जैन आगम के अनुकूल हुआ जैन मंदिर की कला का विकास एवं जैन पद्धति से मंदिरों का निर्माण करना उस युग मे सहज कार्य था क्योंकि जैन वास्तुकला का विकसित रूप अनेक प्रकार से सम्पन्न था निषिद्धिकाओं के रूप में जिन आयतनों का प्रचलन था आचार्य नेमीचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती, आचार्य वसुनन्दी, आचार्य जयसेन जैसे महान आचार्यो ने भारतीय संस्कृति के लिए मंदिर मूर्तियों का निर्माण शास्त्रीय पद्धति से कराया था। इन आचार्यों ने जैन वास्तु कला के विकास के लिए अपनी लेखनी भी चलाई।

पूज्य आचार्य विद्यासागर महाराज ने जैन मंदिर के निर्माण के लिये अपना चिंतन पूर्व आचार्यो से समायोजित करते हुए रखा सर्वप्रथम उन्होंने मंदिर संरचना को समझते हुए यह ध्यान दिया कि जैन मंदिर और शैव मंदिरों वैष्णो मंदिरों में वास्तविक अंतर क्या होता है शिखर की शैली यह बता देती है कि यह मंदिर किस परम्परा का है शिखर बनाते समय श्रृंगो की गणना एवं उरु श्रृंगो का विस्तार तथा चैत्यगवाक्ष अमलिकासार ध्वजदण्डस्थान जिनमुख रचना मुख नासा जैसे शिखर की आवश्यक अंगों पर पूज्य श्री ने अपना ध्यान केन्द्रित किया। इन सब अंगों के साथ पूज्य श्री ने शिखर के अनुपातिक रचना पर अपनी सूक्ष्म दृष्टि केन्द्रित की मूलरेखा के साथ शिखर की फलियों कर्णिकाओं एवं उसके विस्तार और ऊँचाई के अनुपात को सुंदर ढंग से समावेशित करने का पूर्ण प्रयास किया।

आचार्य विद्यासागर जी और मंदिर निर्माण

❊ ब्र. विजया दीदी (इन्दौर) ❊

प्रचलित अवधारणा एवं पद्धति को स्मूल परिवर्तित कर दिया सुविधा और सरलता केा ध्यान में रखकर प्रायः मंदिर का निर्माण सीमेंट गिट्टी एवं लोहे धातु की क्षत्र से हो रहा था तथा सीधा हाल बनाकर वेदी स्थापित की जाती थी श्रावकगण यह भूल जाते थे कि आर.सी.सी के निर्माण कार्य की आयु अधिकतम 50 वर्ष है आचार्य श्री ने समाज को सूत्र दिया कि **सस्ता रोवे बार-बार महंगा रोवे एक बार** अतः पाषाण से निर्मित मंदिरों की योजना को आचार्य श्री ने कार्य रूप दिया जिन्होंने भी आचार्य श्री के सामने मंदिर निर्माण की प्रस्तावना आचार्य श्री से समक्ष रखी उन सबके लिए आचार्य श्री पाषाण निर्मित मंदिर का ही निर्देश दिया। और आचार्य श्री का यह निर्देश समाज ने आदेश समझकर

शिरोधार्य किया पूज्य आचार्य श्री ने सर्वप्रथम अमरकण्टक से ही पाषाण निर्माण का कार्य कराया तदोपरांत रामटेक नेमावर कुण्डलपुर बीनाबारहा जैसे तीर्थों पर अद्वितीय पाषाण निर्मित सुंदर कला सम्पन्न सम्पूर्ण अंगों से युक्त मंदिरों का निर्माण कराके दिगम्बर जैन संस्कृति को युगों युगों तक के लिए उच्च स्थान पर स्थातिप किया आचार्य श्री का ऐसा मानना है कि मंदिर की भव्यता समाज को भव्य बना देती है।जिस नगर का मंदिर भव्य और दोषों से मुक्त होता है। उस समाज का आर्थिक विकास भी दिन दूना रात चौगुना बढ़ता है। निर्दोष जिनालय के माध्यम से ही श्रावक धर्म की पूर्णता मानी जाती है। जिन आयतन सम्यक धर्म की आधार शिला स्थापित करता है तथा धर्म समाज की आधार शिला स्थापित और सहजता को पूर्ण करता है। जिनालय ही श्रमण साधना का केन्द्र बनता है।

जिनालय का निर्माण करने/ कराने वाला

❊ अभिनंदन सांधेलिया (पाटन) ❊

जिनालय का निर्माण करने-कराने अथवा करने की प्रेरणा देने वाले को उस जिनालय में बैठकर सामायिक स्वाध्याय पूजनादि उपासना की जितनी साधना होती है, उसके अर्जित पुण्य का दशांश पुण्य उसे भी उपलब्ध होता है, जो मंदिर का निर्माण कराता है। मंदिर के श्रृंगार चौकी, मत्तावर्ण, नृत्यमंडप, रंगमंडप विविध प्रकार की शैलियों के होते हैं इन मंडपों के अंत में गर्भ ग्रह रहता है। गर्भ ग्रह की मर्यादा जितनी सुरक्षित रखी जाती है , उतने ही जिनालय में अतिशय प्रगट होते है। अतिशयों का नाश श्रावक गण स्वयं कर देते हैं। वे जब गर्भ ग्रह में अशुद्ध वस्त्र पहनकर प्रवेश होने लगता है तब जिनालय के भक्त देवगण स्वयं पलायन कर जाते हैं और जिनमंदिर का अतिशय क्षीण हो जाता है।

जिनबिम्ब और जिनालय ऐसा होना चाहिए जिसके दर्शन से निद्धित निकाचित कर्मों का नाश हो सके तथा मिथ्यात्व का अंधेरा छटकर सम्यक्त्व का दिव्य प्रकाश प्रकट हो सके। जिनालय की रचना जितनी मनोज्ञ होगी उतने ही विशुद्धि परिणामों का संवर्धन होता है। विशुद्धि परिणाम से साता वेदनीय का कर्म बन्ध होता है और असाता वेदनीय कर्म के स्थितिकाण्डक अनुभाग काण्डक का घात होता है तथा असाता वेदनीय के संपूर्ण कर्म परमाणुओं का संक्रमण साता वेदनीय के रूप में हो जाता है। वस इसी कर्म की बदली हुई परिस्थिति से जिनालय और जिनबिम्ब में चमत्कार पैदा हो जाता है। अतः निर्दोष भव्य कलापूर्ण मंदिर बनवाना ही श्रेयस्कार है।

भक्ति के प्रमुख आलम्बनः देव, शास्त्र और गुरु

❊ पं. महेन्द्र कुमार जैन शास्त्री (मुरैना) ❊

भक्ति का लक्षण करते हुए कहा गया है कि पूज्य पुरुषों का आदर-बहुमान, गुणगान आदि करना भक्ति कहलाती है- **पूज्यष्वादरों भक्तिः** । भगवती अराधना के टीकाकार अपराजितसूरि ने भक्ति की परिभाषा करते हुए लिखा है- **अर्हदादिगुणानुरागो भक्तिः** 1. अर्थात् अरहन्त परमेष्ठी आदि के गुणों में अनुराग (प्रेम)भक्ति है। भजन भक्ति के अनुसार भक्ति का अर्थ है तन्मयता। भक्ति में व्यक्ति अपने आराध्य या उपास्य के स्वरूप से एकाकार स्थापित कर लेता है, भक्ति करने वाला आराध्य के गुणों में तन्मय हो जाता है। वह अपने मन, वचन, काय के व्यापार को ध्येय पर केन्द्रित कर देता है, जिससे ध्यान की स्थिति बनती है और कर्मो की असंख्य गुणी निर्जरा होती है।

भक्ति शब्द भज धातु में क्तिन प्रत्यय लगाकर बनता हैं। जिसका अर्थ अनुराग श्रद्धा सम्मान सेवा तन्मयता । अपने उपास्य के स्वरूप में एकाकार होना, गुणसाम्य की उपलब्धि हेतु इष्टदेव के प्रति पूर्ण समर्पण उत्कृष्ट भक्ति है।

भक्ति के तीन सोपान - भक्ति के प्रथमचरण में भक्त कहता है कि हे प्रभू ! मैं आपका दास बनकर आपका आश्रय चाहता हूँ। पूजा के नारियल के समान मैं आपे चरणधूल में पड़ा रहना चाहता हूँ। आपके गुणों को न पहिचानने के कारण मैं नरक निगोदादि पर्यायों में भटकता रहा, अब मैंने आपके चरणाम्बुजों को अपने नेत्रों से निहारा हैं।

भक्ति की दूसरी स्थिति सोऽहं है :- इस स्थिति मे भक्त स्वयं को अनंतज्ञान दर्शन सुख और शक्ति का भण्डार मानकर स्वयं के अनन्तचतुष्टय की आराधना करता है। अब वह याचना नहीं करता, कोई इच्छा नहीं करता। वह **समयः सर्वत्र सुंदरो** अर्थात् संसार में सब से सुन्दर आत्मा का चहेता बन जाता है।

भक्ति की तीसरी स्थिति में :- भक्त का वास्ता अपनी आत्मानुभूति से हो जाता है तब ध्यान, ध्याता, ध्येय, साध्य, साधन और साधना का विकल्प नहीं रह जाता है।

भक्ति के विषय में संभवतः सर्वाधिक प्राचीन सन्दर्भ तत्वार्थसूत्र में मिलता है। वहाँ पर शुभनाम कर्म के आस्रव के कारणों की चर्चा के प्रसंग के निर्देश है कि तीर्थकर नाम कर्म के 16 आस्रव के कारण है। उनमे अरहंत, आचार्य, बहुश्रुत और प्रवचन भक्ति ये चार स्वतंत्र कारण है । 2. वृत्तिकार पूज्यवाद देवनन्दि स्वामी ने सूत्र की वृत्ति में स्पष्ट किया है कि **अर्हदाचार्येषु बहुश्रुतेषु प्रवचने च भावविशुद्धियुक्तोऽनुरागो भक्तिः** अर्थात् अरहंत, आचार्य बहुश्रुत और प्रवचन में भावों की विशुद्धि के साथ अनुराग रखना भक्ति कहलाती है। इस सन्दर्भ में विशेष यह है कि समुदाय रूप में तो उक्त सोलह तीर्थंकर नामकर्म के आश्रव के कारण हैं ही, यदि इनका अलग-अलग भी चिन्तन किया जाता है तो भी ये तीर्थंकर नामकर्म के आश्रव के कारण बनते हैं । 4 तत्त्वार्थ सूत्र में अरहंत , आचार्य, बहुश्रुत (उपाध्याय) और प्रवचन, ये चार उपास्य या आराध्य बताए हैं। बहुत संभव है कि कालान्तर में उनमें से आचार्य और बहुश्रुत अर्थात् उपाध्याय को एकत्र अन्तर्भाव करके देव, शास्त्र और अथवा देव, गुरु और धर्म

(प्रवचन) इन तीन के रूप में प्रसिद्ध किया गया है।

वस्तुतः न केवल जैन दर्शन का अपितु समस्त भारतीय दर्शनों का चरम व परम लक्ष्य है - **मोक्ष** अर्थात् कर्मबन्ध से मुक्ति। चूंकि संसार का प्रत्येक प्राणी स्वकृत कर्मों के अधीन होकर ही जन्म-मरण और सांसारिक सुख-दुख का अनुभव करता है । अतः कर्मबन्ध से मुक्ति प्राप्त करने के लिए भक्ति भी एक प्रमुख उपाय मानी गई है, क्योंकि भक्ति परम्परा मोक्ष प्राप्ति का हेतु है।

पूजा-भक्ति किसकी और क्यों :- प्रश्न उपस्थित होता है पूजा-भक्ति के योग्य कौन है ? पूजा-भक्ति किसकी करना चाहिए ? इसका समाधान यही है कि- **गुणाः पूजा स्थानम्** अर्थात गुण ही पूजा और भक्ति के स्थान हैं अतः प्रकृष्ट गुणों से युक्त देवों तथा गुरुओं की ही पूजा भक्ति करना उचित है । चूंकि जैन परंपरा में देव, शास्त्र और गुरु ही पूजा भक्ति के प्रमुख पात्र हैं, अतः यही रत्नत्रय माने गये हैं, इनकी भाव सहित पूजा-भक्ति गुणगान आदि करने से पुण्योपार्जन तो होता ही है, असंख्य गुणी कर्म निर्जरा भी होती है।

देव पूजा या जिनपूजा :- जैन दर्शन में जिन या जिनेन्द्र ही देव के रूप में स्वीकार्य हैं, अन्य कोई नहीं। अतः जिन पूजा का ही यहाँ विधान है । वस्तुतः देवपूजा या जिनपूजा श्रमणों की विशेषकर जैन-धर्म दर्शन की उपासना पद्धति है । वैदिक परम्परा में तो प्रारम्भ से यज्ञ-यागादि का ही प्रमुख स्थान पाया जाता है । वैदिक साहित्य में इज्यः या इज्या शब्द का प्रयोग यज्ञ के अर्थ में ही मिलता है ।परन्तु जैन साहित्य में इज्या शब्द का प्रयोग पूजा के अर्थ में उपलब्ध होता है । इसकी विपरीत यज् + क्यप् +टाप् से होती है । आचार्य जिनसेन (द्वितीय) ने अपने आदि पुराण में **प्रोक्ता पूजार्हतामिज्या सा चतुर्धा** 6 कहकर इज्या शब्द का प्रयोग पूजा के अर्थ में किया है।

देव पूजा दो प्रकार की होती है- द्रव्य पूजा और भाव पूजा। अर्हन्त, सिद्ध आदि के लक्ष्य करके अक्षत पुष्प गन्ध आदि अर्पित करना द्रव्यपूजा है। उनके आदर में खड़ा होना, प्रदक्षिणा करना प्रणाम करना आदि क्रियाएँ और वचन से गुणों का स्तवन भी द्रव्यपूजा है। और मन से अर्हन्त आदि के गुणों का स्मरण भाव पूजा कहलाती है।

देव पूजा का उद्देश्य और महत्वः- पूजा शब्द चुरादिगणीय पूज् पूजायाम् (+अ+टाप्) से निष्पन्न है। जैनदर्शन के अनुसार पूज्य व्यक्ति या आराध्य देव को वीतरागी, हितोपदेशी , सर्वज्ञ तथा द्वेष-मोह आदि विकारों से रहित होना चाहिए। यद्यपि बीतरागी और बीतद्वेषी देव की स्तुति भक्ति और निन्दा समान कोटि की होती है, क्योंकि वीतरागी देव किसी के द्वारा की गई निन्दा अथवा पूजा-प्रशंसा-स्तुति से प्रभावित नहीं होते। फिर भी उनके पवित्र गुणों का स्मरण, श्रवण, दर्शन एवं कीर्तन भक्त को स्थायी भावात्मक आनन्द देता है, जिससे मनुष्य पशुलोक से निकलकर लोकोन्तर मानव लोक में पहुंच जाता है, उसके पाप नष्ट हो जाते हैं, चित्त में शुद्धता बढ़ जाती है। इसी को स्पष्ट करते हुए आचार्य कहते हैं।

न पूजायार्थस्त्वयि वीतरागे न निन्दया नाथ विवान्तवैरे।
तथापि ते पुण्यगुणस्मृतिर्नः पुनाति चित्तं दुरिता ञ्जनेभ्यः ।।

देव पूजा और गृहस्थ श्रावक :- मुनिगण तो अहिंसादि महाव्रतों के आचरण, संयम की साधना एवं भाव पूजा भक्ति के द्वारा स्वयं ही पूज्यता को प्राप्त हो जाते हैं , लेकिन देव पूजा अर्थात् वीतरागी जिनेन्द्र देव की पूजा करना गृहस्थ श्रावक के छह आवश्यक कार्यों में एक प्रमुख तथा प्रथम कर्त्तव्य माना गया है। कहा भी है -

देवपूजा गुरोपास्ति स्वाध्यायः संयमस्तपः।
दानंचेति गृहस्थानांषट्कर्माणिदिने-दिने।।9

इस तरह देव पूजा और दान, ये दो श्रावक के मुख्य कर्त्तव्य हैं । कहा भी गया हैं- ध्यान के द्वारा योगी, संयम के द्वारा तपस्वी, सत्यवचन के द्वारा राजा तथा दान पूजा द्वारा गृहस्थ सुशोभित होता है।

पूजा भक्ति शुभोपयोग का कारण है :- इसमें महापुरुषों के पुण्य गुणों का स्मरण करके आत्मा को पवित्र (निर्मल) बनाया जाता है, जिससे पुण्यार्जन होता है । जिनपूजन और भक्ति जहाँ शुभोपयोग का साधन है, वही सम्यक्त्व की उत्पत्ति के उपास भी हैं । इससे आन्तरिक शान्ति, ज्ञान,प्रेम, श्रद्धा, विश्वास और तप आदि गुणों की प्राप्ति और वृद्धि होती है। पाचकेशरी स्तोत्र में कहा गया है कि भगवान जिनेन्द्र देव के गुणों का स्मरण करने से कर्मराशि नष्ट होती है। क्योंकि अर्हन्त भगवान के गुणों का चिन्तन ही आत्मचिन्तन है।

भक्ति एंव जिनबिम्बदर्शन की महत्ता :- जिनेन्द्र देव की भक्ति एवं जिनबिम्ब दर्शन की महत्ता बताते हुए अपराजितसूरि ने लिखा है कि जिस प्रकार अर्हन्त आदि परमेष्ठी शुभोपयोग उत्पन्न होने में कारण होते हैं, उसी प्रकार उनके प्रतिबिम्ब भी शुभोपयोग उत्पन्न होने में सहायक हैं । कारण यह है कि वाह्य पदार्थ के आलम्बन से जीव में शुभ या अशुभ परिणाम उत्पन्न होते हैं और इष्ट-अनिष्ट पदार्थों का सानिध्य होने से राग द्वेष की उत्पत्ति होती है। जैसे कि अपने पुत्र के समान किसी दूसरे व्यक्ति के पुत्र के देखने से अपने पुत्र की स्मृति उत्पन्न हो जाती है, उसी तरह अरहंत भगवान आदि के प्रतिबिम्ब का दर्शन करने से अरहन्त आदि परमेष्ठियों के गुणों का स्मरण हो जाता है। इस स्मरण से नवीन अशुभकर्मों का संवर होता है और नवीन शुभकर्मों का आस्रव या आगमन। जो शुभ प्रकृतियाँ बन्ध को प्राप्त हुई हैं, उनकी स्थिति और अनुभाग में परमेष्ठी के गुणों के स्मरण से वृद्धि होती है, तथा अशुभ प्रकृतियों के स्थिति और अनुभाग में हीनता आती है।

शास्त्रभक्ति :- शास्त्र से तात्पर्य अर्हन्तदेव का प्रवचन या जिनोपदेश है। शास्त्र स्व पर का बोध कराने वाला है, शास्त्र भक्ति से तात्पर्य मोक्षमार्गोपयोगी शास्त्रों के अध्ययन व स्वाध्याय से है। शास्त्रों का स्वाध्याय रत्नत्रय प्राप्ति का साधन है। प्रवचन का अर्थ रत्नत्रय भी है। क्योंकि ज्ञान दर्शन और चारित्र रूप रत्नत्रय ही प्रवचन है । प्रवचन का अर्थ शब्दरूप श्रुत भी माना गया है, क्योंकि इसके द्वारा जीव पुद्गल आदि षड्द्रव्यों और जीवाजीवादि सात तत्वों या नव पदार्थों का ज्ञान होता है।
अतः भक्ति के लिए शास्त्र का आलम्बन अनिवार्य है।

शास्त्र को आगम, सिद्धांत, प्रवचन, श्रुतग्रन्थ, या जिनवाणी भी कहते हैं।
सागारधर्मामृत में शास्त्र की पूजा के संबेध में कहा गया है कि

ये जानते श्रुतं भक्त्या ते यजन्तेऽञ्जसा जिनम्।

न किंचिदन्तर प्राहुरात्मा हि श्रुतदेवयोः ।।
सागारधर्मामृत अध्याय 2 श्लोक 44 13

जो भक्तिपूर्वक शास्त्र का पूजन करते हैं वे परमार्थरीति जिनेन्द्र देव की पूजा करते हैं क्योंकि सर्वज्ञप्रणीत-उपदिष्ट शास्त्र देव या परमात्मा में कुछ भी अंतर नहीं है।

जिनवाणी हमारी सच्ची हितैषी है यहीं हमारें अंदर छुपी हुई भक्ति का ज्ञान कराती हैं। यही हमारे सुख-दुख, आपत्ति-विपत्ति के समय काम आती है। ये सब कुछ प्रदान करती हुई भी बदले में कुछ भी नहीं चाहती अपितु देती ही देती रहती है।

वर्तमान में भगवन्त नहीं पर उनकी हुई वाणी साहित्य के रूप में उपलब्ध है उसे सच्ची हितैषी के रूप में जानना चाहिए। इससे इह लोक और परलोक में भी सुख शांति प्राप्त करने का ज्ञान मिलता है । अतः इसका स्वाध्याय पूजन, विनय भक्ति से करना चाहिए।

गुरुभक्ति :- जैन दर्शन में अर्हन्त ओर सिद्ध परमेष्ठी ही देवरूप में स्वीकार्य हैं और आचार्य उपाध्याय और साधु परमेष्ठी ही गुरु रूप में स्वीकृत हैं, अतः इन गुरुओं की पूजा-भक्ति-स्तुति भी परंपरा से मोक्ष प्रदान करने वाली है, अतः इनका आलम्बन लेना भी मनुष्य के लिए परम उपयोगी है। जो रत्नत्रय की साधना करते हैं, साधु कहलाते हैं। जो रत्नत्रय की साधना में तत्पर हैं और जिनागम के अर्थ का सम्यक् उपदेश करते हैं, वे उपाध्याय हैं । अथवा, जिनसे श्रुत का अध्ययन किया जाता है, वे उपाध्याय कहे जाते हैं। जो ज्ञानादि पाँच प्रकार के आचारों में स्वयं प्रवृन्त हैं और अन्य को प्रवृत्त कराते हैं वे आचार्य कहलाते हैं । वस्तु के यथार्थ स्वरूप को ग्रहण करने वाले ज्ञान में लगना ज्ञानाचार हैं। तत्वश्रद्धान रूप परिणाम दर्शनाचार है। पापकर्मों से निवृत्ति रूप परिणति चारित्राचार हैं । अनशन आदि क्रियाओं में लगना तपाचार है। और ज्ञानादि में अपनी शक्ति न छिपा कर प्रवृत्ति करना वीर्याचार है।

यद्यपि भक्ति में राग का अंश पाया जाता है क्योंकि श्रद्धा और प्रेम का मिश्रण भक्ति कहलाता है, जब पूज्य भाव की वृद्धि के साथ श्रद्धा भाजन के समीप्य लाभ की प्रवृत्ति हो, उसके साक्षात्कार की इच्छा हो, तब हृदय में भक्ति का प्रादुर्भाव होता है। तथापि यह राग प्रशस्त राग की श्रेणी में आता है, अतएव यह राग भी वीतरागता की प्राप्ति में सहायक है । जिस प्रकार रेखा गणित के सिद्धांतो की शिक्षा देते समय ऐसी एक रेखा की कल्पना की जाती है, जो अनादि अनन्त और बिना लम्बाई चौड़ाई की है, अर्थात् किसी कल्पित लम्बाई चौड़ाई वाली रेखा द्वारा समझाया जाता है । इसी तरह अनन्त ज्ञान दर्शन सुख और वीर्य आदि गुण के धारक वीतराग देव की भक्ति द्वारा उनके उन गुणों की प्राप्ति के लिए प्रयास किया जाता है, क्योंकि प्रारंभिक आत्मशुद्धि के विकास में रागरूप भक्ति बहुत सहायक सिद्ध होता है।

जैन भक्ति साहित्य का वैशिष्टय है कि इसमें प्रमुख रूप से आराध्य देव के गुणों का स्मरण एवं मनन किया गया है, परन्तु इसमें किसी देव विशेष की पूजा भक्ति नहीं की गई है, अपितु गुणों की ही पूजा भक्ति की गई है। यहाँ पर पूजा भक्ति से आत्मा की निर्मलता की प्राप्ति करना अथवा आत्मीय गुणों की प्राप्ति की भावना है । यह भावना जितनी अधिक दृढ़

प्रकर्ष प्राप्त एवं विशुद्ध होगी, सिद्धि भी उतनी ही अधिक निकट होती जायेगी।

जैनदर्शन की दृढ़ मान्यता है कि जीव या आत्मा स्वभाव से अनन्तदर्शन, अनन्तज्ञान, अनन्तसुख, अनन्तवीर्य आदि शक्तियों का स्वामी है, परन्तु अनादि कर्ममल रूप मल से मलिन होने के कारण उसकी वे सब शक्तियाँ आवृत (ढंकी) हैं और यह आत्मा संसार के मोहजाल में इतना फंसा हुआ है कि उन स्वाभाविक शक्तियों के विकास का इसे भान की नहीं होता । ज्ञानावरण और वीर्यान्तराय कर्म के क्षयोपशम से जीव को जीव को जो कुछ ज्ञान प्राप्त होता है उसी में यह मस्त रहता है, लेकिन जो संसारी जीव आत्मज्ञान का इच्छुक हो वह उत्कृष्ट ध्यान के बल से समस्त कर्म मल को दूर कर देता है, उसमें आत्मा की समस्त अनन्त ज्ञानादिक स्वाभाविक शक्तियों सर्वतोभाव से विकसित हो जाती हैं और तब वह आत्मा स्वच्छ तथा निर्मल होकर परमात्म पद को प्राप्त कर लेता है। इसी तथ्य केा स्पष्ट करते हुए स्तुति कर कहतें हैं।

ध्यानाज्जिनेश भवतों भक्तिः क्षणेन् , देहं विहाय परमात्मदशां ब्रजन्ति।
तीव्रनलादुपलभावमपास्य लोके , चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः ।।

तात्पर्य यही है कि परमात्म स्वरूप की प्राप्ति सभी संसारी आत्मओं को अभीष्ट है इसीलिए आत्मस्वरूप या परमात्म स्वरूप की प्राप्ति के लिए परमात्मा की पूजा भक्ति और उपासना करना प्रत्येक प्राणी का परम कर्त्तव्य हैं । परमात्मा का ध्यान और उनकी भक्ति निजात्मा की याद दिलाती है । पूजन भक्ति, शास्त्र स्वाध्याय, चिन्तन-मनन-स्तुति-स्तवन एवं ध्यान द्वारा आत्मा यह समझने में समर्थ होता है कि मैं कौन हूँ। कहाँ से आया हूँ मेरी शक्ति क्या है ? जड़ कर्म किस प्रकार मुझसे आबद्ध है ? मैं उन कर्मों से कैसे मुक्त हो सकता हूँ ? जैन दर्शन के अनुसार , पूजा भक्ति आदि परमात्म को प्रसन्न करने, उनसे कुछ वरदान प्राप्त करने के लिए अथवा विषय-कषायों को पुष्ट करने के लिए नहीं की जाती है, अपितु स्वरूप का ज्ञान और उसकी प्राप्ति के लिए एवं परमात्मा के उपकार को स्मरण करने के लिए की जाती हैं ।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि देव, शास्त्र और गुर साक्षात् या परंपरा से मोक्षमार्ग में प्रवृत्त कराने वाले निमित या साधन हैं । इनके गुणों में अनुराग रखना ओर स्वाध्याय आदि के द्वारा इनका अभ्यास करना सम्यग्दर्शनादि भावों को पुष्ट करने वाला है । पूज्य महापुरुषों और शास्त्रों में प्ररूपित विषयों का चिन्तन करने से भावों में विशुद्धि आती है, जो आत्म स्वरूप या परमात्म स्वरूप का प्राप्त कराने में आलम्बन बनती हैं। पूज्यपुरुषों तथा सद्गुरुओं के गुणों आदर-बहुमान एवं भक्ति भाव प्रकट करने का प्रमुख साधन पूजा विधान स्तुति -स्तोत्र आदि साहित्य हैं । इसीलिए प्राचीन काल से ही जैन परम्परा मे संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश हिन्दी एवं अन्य प्रादेशिक भाषओं मे नाना प्रकार के भक्ति साहित्य की रचना होती रही है और आज भी हो रही है। इस साहित्य के माध्य से मुमुक्षु द्रव्यपूजा ओर भावपूजा करके अपने भावों को विशुद्ध करता है पुण्योपार्जन करता है । साथ ही वन्दे तद गुणलब्धये रूप उद्देश्य के साथ प्रशस्तमार्ग में प्रवृत्त होता है। ये सभी भक्ति के विविध रूप है जों परंपरा से भवविनाशक होते हैं।

कविता

रेत में नॉव

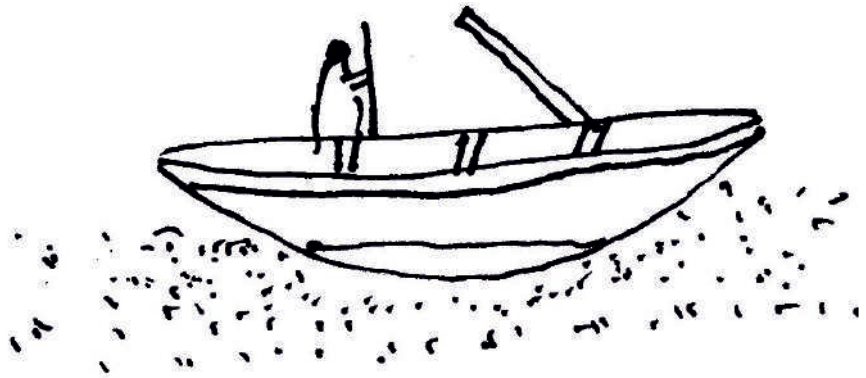

दरिया का किनारा
रेत में नाव फँसी
लोग सब देख रहे
उनको बस आती हँसी

मैं तो आशा लगाये
बैठा उम्मीद जगाये
आयेगी लहर कभी
नाव तैरेगी तभी

इंतजार है,
यही संसार है
बीत जायेगा ये दिन
घड़ी करती है टिन टिन

उमंगे हैं लगन भी है
लहर आयेगी एक दिन
तैरेगी नाव भी एक दिन

हमारे गौरव

हरिवर्मन कदम्ब

रविवर्मन का पुत्र एवं उत्तराधिकारी कदम्ब वंश का अंतिम महान नरेश और अपने पूर्वजों की ही भाँति जैन धर्म का भक्त था। अपने राज्य के चौथे वर्ष में लिखाये गये दानपत्र के अनुसार इस नरेश ने अपने चाचा शिवरथ की प्रेरणा से पलाशिका नगरी में भारद्वाज गोत्रीय सिंह सेनापति के पुत्र मृगेश द्वारा निर्मापित जिनालय में प्रतिवर्ष अष्टान्हिका महोत्सव और महामह पूजा एवं जिनाभिषेक किये जाने तथा उससे बचे द्रव्य से समस्त संघ को भोजन कराने के लिए कुन्दूर विषय का वसुत्तवाटक ग्राम कूर्च्चक सम्प्रदाय के वारिषेणाचार्य संघ को चन्द्रक्षान्त नामक मुनि को प्रमुख बनाकर प्रदान किया था। राजा उस समय उच्चश्रृंगी दुर्ग में था। इस शासन में राजा के लिए जो विशेषण दिये हैं। उनसे वह विद्वान बुद्धिमान शास्त्रज्ञ और पराक्रमी वीर रहा प्रतीत होता है। राज्य के पाँचवे वर्ष में इस सर्व प्रज्ञा-हृदय-कुमुद-चन्द्रमा महाराज हरिवर्मा ने अपने सामन्त सेन्द्रक कुल तिलक राजन् भानुशक्ति की प्रेरणा से अहिरिष्ट नाम के श्रवण संघ के उस चैत्यालय की पूजा संस्कार के लिये जिसे अधिष्ठता आचार्य धर्मनन्दी थे तथा साधुजनों के उपयोग के लिये मरदे नामक ग्राम का दान दिया था। हरिवर्मन की मृत्यु के कुछ ही वर्षों पश्चात ही कदम्बों की राज्य सत्ता समाप्त हो गयी।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेनेके बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकतेहैं ।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 8989121008

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

बाल मनोविज्ञान

अभिभावकों तथा शिक्षकों से

✻ पं. हीरालाल जैन, हीराश्रम साढूमल ✻

देखा जाता है कि अभिभावक तथा शिक्षकगण बालक की भावनाओं का आदर नहीं करते। वे यह भी नहीं जानते कि उसकी बचपन की चेष्टाओं और इच्छाओं का बाल के जीवन के विकास मे कितना महत्व है। जब बालक अनेक प्रकार की मीठी-मीठी खाने में चीजें मांगता है तो अक्सर हम उसकी इन इच्छाओं का तिरस्कार करते हैं। परिणाम यह होता है कि बालक चोरी करके अपनी खाने की इच्छाओं को तृप्त करने का प्रयत्न करता है। हम यह समझते हैं कि कि बालक को शैतान ने अपने काबू में कर लिया है। हम उसे अनेक प्रकार से दंड देते हैं। इसके परिणाम स्वरूप बालहृदय बालक अपनी बुरी आदतों को छोड़ देता हो, पर बालक के चरित्र में कुछ भी उन्नति नहीं होती। इसी तरह जब हम बालक को पढ़ने से जी चुराते, बड़ो की अवज्ञा करते अथवा झूठ बोलते या दूसरे लड़कों को तंग करते देखते है, तो हम एक दम क्रुद्ध हो अनेक प्रकार से दंड देने लगते है। पर इस तरह न तो बालक का चाल-चलन सुधरता है और न ही उसके चरित्र में ही उन्नति होती है। ऐसा बालक या तो उद्दंड हो जाता है, या एक दब्बू सा बनकर अपना जीवन व्यतीत करता है। बालक के जीवन में वास्तविक सुधार करने के लिए हमें उसके अव्यक्त मन का अध्ययन करना चाहिए।

हमें बालकों में अनेक अनुचित कार्यों के कारण, उसके अव्यक्त मन के अध्ययन से अनेक तथ्य ज्ञात हो सकते है। झूठ बोलना, डींग मारना, आज्ञा की अवहेलना करना, दूसरे बालकों को सताना, स्कूल के समय को खराब करना, चोरी करना, बीड़ी पीना इत्यादि ऐसे अनेक बालकों के कर्म ही जिनका कारण उसमें मन की भावना ग्रन्थियाँ होती है। इन भावना-ग्रंथियों से जब बालक का अव्यक्त मन मुक्त हो जाता है। तो उसके आचरण में सहज ही सुधार हो जाता है।

हास्य तरंग

1. मंदिर की तीसरी मंजिल का निर्माण चल रहा था कि अचानक एक मजदूर नीचे गिर गया, उसकी जान तो बच गई परन्तु चोंटे बहुत गहरी थी। मंदिर पुजारी उसे गिरता देखकर, दौड़कर उसके पास आये और उसे जिंदा पाकर बोले-भगवान तुम्हारे साथ था। मजदूर कराहते हुए बोला जरूर मेरे साथ कोई न कोई था नहीं तो मुझे धक्का कौन देता।

2. एक महिला ने दूसरी महिला से कहा ओफ मेरी तकदीर कितनी खराब है। दूसरी महिला ने पूछा अरे ऐसी क्या बात हो गई ? अब क्या बताऊँ , जब में बहु बनकर थी तो सास अच्छी नहीं मिली और अब में सास बन गई हूँ, बहु अच्छी नहीं मिली।

3. एक छोटी बच्ची रेल्वे स्टेशन पर टॉफियाँ बेच रही थी। उसके पास एक यात्री ने पूंछा-बिटिया क्या टॉफी खाने की तुम्हारी इच्छा नहीं होती। बच्ची मन तो करता है कि किन्तु मम्मी टॉफियाँ गिनकर देती है इसलिए मैं इन्हें चाटकर रख देती हूँ।

4. सेठी जी साधु से बोले, गुरुजी मेरी पत्नी बहुत परेशान करती है कोई उपाय बताइये। साधु मुझे पता होता तो क्या साधु बनता।

5. नाई-नेता जी के बाल काटने के पहिले पानी छिड़कते हुए नेता जी इस बार आप चुनाव कहॉ से लड़ेगे ? नेता जी नाई पर गुस्सा होकर पूंछते हैं मैं जब भी बाल काटने आता हूँ तो यही प्रश्न हमेशा पूंछते हो क्यों ? नाई नेता जी गुस्सा मत होईये, दरसल इस सवाल से आपके बाल खड़े हो जाते हैं और मुझ बाल काटने में आसानी होती है।

जिनेन्द्र कुमार जैन (गौरी नगर इन्दौर)

सेंधा नमक स्वास्थ्य के लिए वरदान

सेंधा नमक वात, पित्त और कफ के दोष को दूर करता है। इसके उपयोग से बहुत सी गम्भीर बिमारियों पर नियंत्रण रहता है, क्योंकि ये अम्लीय नहीं क्षरीय होते हैं जो पेट में अम्ल से मिलकर न्यूट्रल हो जाते हैं जिससे शरीर के 48 रोग ठीक हो जाते हैं। सेंधा नमक शरीर में आवश्यक 97 पोषक तत्त्वों की पूर्ति करता है, इसमें पोटेशियम और मैगनीशियम पाया जाता है व आयोडिन प्राकृतिक रूप से मिला रहता है।

सेंधा नमक रॉक साल्ट है जो बनाया नहीं जाता है यह प्राकृति क रूप से पूरे उत्तर भारतीय महाद्वीप में खनिज पत्थर से सेंधा नमक या सेन्धव नमक, लाहोरी नमक आदि नाम से जाना जाता है। वहाँ नमक के बड़े बड़े पहाड़ सुरंगे है वहाँ से यह नमक छोटे छोटे टुकडों में आता है।

सेंधा नमक हृदय के लिए उत्तम, दीपन और पाचन में मदद रूप, त्रिदोष शामक, शीतवीर्य अर्थात ठंठी तासीर वाला होता जिसके रक्तचाप, लकवा , गाठिया, जोड़ो का दर्द आदि अनेकों रोगों पर नियंत्रण करता है।

बाजारों में उपलब्ध आयोडीन युक्त नमक का बड़े पैमाने पर प्रचार प्रसार किया जाता है जो नमक कभी 2 से 3 रू किलो बिकता था उसकी जगह आयोडीन नमक 10 से 20 रू. किलो की पार कर गया है। दुनियाँ के 56 से अधिक देशों में आयोडीन युक्त नमक पहिले से प्रतिबंधित कर दिया गया है। अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस, डेनमार्क में इस पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। अयोडीन नमक समुद्री नमक है जो कृत जानवरों समुद्री जीव अंक के अवशेषों से बनता है। आयुर्वेद के अनुसार बहुत खतरनाक है। क्योंकि इसमें कम्पनियाँ अतिरिक्त आयोडीन को इन्डुस्टियल आयोडीन में मिलाती है जो बहुत गंभीर बिमारियों को बढ़ाती है। यह नमक मानव द्वारा फैक्टरियों में निर्मित है यह नमक अम्लीय होते हैं जिससे रक्त अम्लता बढ़ती है, यह नमक शरीर में नही घुलता व पानी में भी नही घुलता मात्र हीरे से चमकता रहता है जिससे शरीर से छनकर नहीं निकलने से पथरी का कारण बनता है।

अतः सभी से विनम्र निवेदन है समुद्री आयोडीन नमक के चक्कर से बाहर निकले व प्राकृतिक रूप में प्रदत्त सेंधा नमक का उपयोग करें जो ईश्वर का बनाया है। सदैव याद रखें इंसान शैतान हो सकता है। सेंधा नमक की शुद्धता के कारण उपवास, व्रत में व साधुगण, त्यागी कृवी हमेशा इसका ही उपयोग करते हैं। इसके उपयोगी से प्यास भी कम लगती है।

पांच हजार पुरानी आयुवेद चिकित्सा पद्धति में इसका उपयोग आयुर्वेदिक औषधियों, पाचक चूर्ण, मंजन में किया जाता है जो स्वाद के साथ-साथ स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है। जहाँ तक आयोडीन की बात है जो इसमें प्राकृतिक रूप में उपलब्ध है व हरी सब्जियों में भी मिलता है।

जिनेन्द्र कुमार जैन (गौरी नगर इन्दौर)

बाल कहानी

गिंचू का समोसा

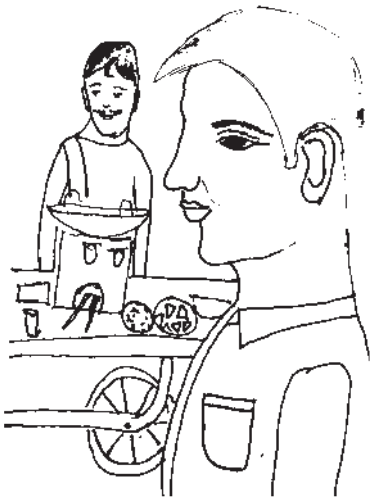

गर्मी की छुट्टियाँ चल रही थी। सुमन 8 वीं की परीक्षा दे चुका था। परीक्षा का परिणाम आ चुकमा था। सुमन को 58 % प्रतिशत अंक मिले थे। इसलिए पूरे परिवार की सुमन के साथ सहानुभूति थी। सुमन अब दिन भर घूमता था और अपने नये दोस्त बनाता था। एक दोस्त गिंचू भी बन गया था। गिंचू खाने-पीने से बहुत रूचि रखता था। गिंचू अकेले खुद नही खाता था। अपितु दूसरों को खिलाकर खाना ही उसे पसंद था। गिंचू ने सुमन के सामने समोसा खाने के प्रस्ताव रखा, सुमन ने पहली बार समोसा खाने से मना यिा सुमन ने गिंचू को प्रस्ताव पर न नुकर करते हुए अंत मे समोसा खाना स्वीकार कर लिया। गिंचू ने लगातार चार दिन तक सुमन को समोसा खिलावे, अब सुमन के सामने समस्या यह थी कि एक दिन गिंचू को समोसा खिलौना हैं तो गिंचू कहाँ से पैसे लाता था यह पता नहीं चलता था लेकिन सुमन के सामने समस्या था कि वह पैसे की जुगाड़ करके गिंचू को समोसा खिलाया एक दिन सुमन अपनी दुकान पर बैठा था उसने मौका देखकर पेटी से कुछ पैसे चुरा लिए ओर छिपाकर जेब में अपनी शर्ट के भीतर रख लिए। और दुकान से भाई के आने के बाद सुमन आगे बढ़ गया उसे यह पता नही था कि मुझे किसी ने पैसे चुराते हुए देख लिया हैं। सुमन की दुकान के पास रहने वाले बच्चू सिंह जी ने सुमन के भाई साहब से कहा कि तुम्हारा भाई पैसे चुराता हैं, सुमन के भाई ने कहा कि मेरा भाई कभी चोरी नहीं कर सकता हैं क्योंकि उसे ऐसी कोई आदतें नहीं है तथा उसकी संगति भी खराब नहीं है, और न ही उसे मैने कभी बाहर खाते पीते देखा हैं, फिर भी सुमन के भाई ने अपने माता पिता से सुमन की शिकायत की पर उसके माता पिता ने साफ शब्दों में कह दिया कि सुमन चोर नहीं हैं, सुमन का जब अपने बारे में पता चला कि पूरे परिवार को उस पर विश्वास हैं कि वह चोरी नहीं कर सकता तो सुमन ने गिंचू को समोसा खिलाकर अपना दोस्ताना फर्ज तो निभाया पर उसका चोरी करने में हाथ लपक गया। सुमन धीरे धीरे अपने घर की चोरी बहुत सफाई के साथ करने लगा लेकिन संयोग से आचार्य विद्यासागर जी के प्रभाव में आकर सुमन ने चोरी करना और समोसा खाना पाँच साल बाद छोड़ा दिया और एक अच्छा रास्ता पकड़ने मे सुमन को पाँच वर्ष लग गये।

संस्कार गीत

उत्तम संस्कार

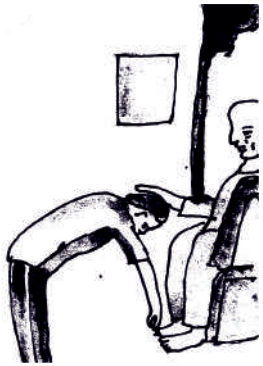

धीर बनो अरू वीर बनो तुम
इससे ही उद्धार है
मात पिता गुरु अभिवादन ही
यह उत्तम संस्कार है ॥

1.
लक्ष्य निष्ठ अरू लगनशील बन
तुम आगे बढ़ते जाना
कर प्रयास अविरल कर पल तुम
अंत सफलता को पाना
समय नहीं बेकार गमाओ
यही प्रगति आधार है।

2.
मुश्किल में भी सहते रहना
आँसू नहीं बहाना तुम
सूझ बूझ मत कभी छोड़ना
संकट में मुस्काना तुम
मानव जीवन में विवेक ही
करता बेढ़ा पार है।

3
ईर्ष्या नहीं किसी से करना
अपनी कौशल बढ़ाओ रे
दाल और रोटी ही खाओ
थोडे में मौज मनाओ रे
स्वाभिमान की रक्षा करना
इस जीवन का सार है ॥

बाल कविता

मुक्तागिरी

सिद्ध क्षेत्र मुक्तागिरी न्यारा
तीर्थ दिगम्बर सुन्दर प्यारा
जल प्रपात दो दो हैं प्यारे
हरे भरे पर्वत मनहारे
साठ जिनालय अनुपम लगते
जिन पर ध्वज लहराय करते
तीन चौमासे हुए गुरुवर के
विद्यासागर श्री मुनिवर के
दीक्षा दी थी इसी तीर्थ पर
मुनि बनाये सिद्ध भूमि पर
ऐलक क्षुल्लक दीक्षा दी थी
जैन दर्शन की शिक्षा दी थी
इस तीर्थ को नमन हमारा
सिद्धों को हो नमन हमारा

प्राचीन जैन मंदिरों का खजाना-गुलबर्गा जिला (कर्नाटक)

❊ विजय कुमार चंद्रनाथ पंढरे (कर्नाटक) ❊

गुलबर्गा (कलबुर्गी) एक कर्नाटक राज्य का उत्तरी भाग है, आंध्रप्रदेश एवं महाराष्ट्र प्रांतो से घेरा हुआ है। इस भाग पर राष्ट्रकूट , कल्याणी चालुक्य राजाओं ने राज्य किया है। इ.स. 650 से 112 तक राष्ट्रकूट राजाओं ने मलखेड (मान्यखेट) राजधानी से राज्य किया। राष्ट्रकूट राजा अमोघवर्ष जो जैन धर्मी थे, के कार्यकाल में अनेक प्रसिद्ध जैन आचार्य, कवी, गणितज्ञ, लेखक राज्याश्रित रहे थे। राष्ट्रकूट राजाओं ने तथा जब के प्रमुख एवं बड़े बहुल जैन समाज ने इस गुलबर्गा विभाग में 8वी शताब्दी से 12 शताब्दी तक अनेक जैन मंदिर बनाये थे। एक ही ग्राम में दो दो, तीन तीन जैन मंदिर पाये जाते हैं। यह सारे प्राचीन जैन मंदिर हेमाडपं थी काले पत्थर में बने हुये हैं। यह सारे जैन मंदिर विशाल, कलात्मक रहते हुये आज तक भी अपने अस्तित्व में बने छोड़े हैं, करीब सारे मंदिर ग्रामीण इलाके में फैले हुये हैं, ग्रामों में वर्तमान में कोई जैन नहीं है। जैन समाज का बड़े पैमाने पर सामुहिक धर्मांतरण हुआ था, कुछ जैनीयों का स्थानांतरण भी हुआ है। **इन परिस्थितीयों में यह सारे एवं कई जैन मंदिर कई पीढ़ियों से लावारिस होने से बड़ी ही दयनीय स्थिति में है, जिसका वर्णन करना बहुत ही पीडा दायक है। कईजैन मंदिरों का अतिक्रमण हुआ है, अन्य जातियों के मंदिर बन गये है, कई प्राचीन मूर्तियाँ कूड़े कचरे में, मट्टी में दबी हुयी है मंदिर न रहकर कुकर्म करने के स्थान बन गये हैं । जैन समाज को अपनी इस धरोहर का संरक्षण अति जरूरी है।**

गुलबर्गा जिला ज्ञान प्राचीन मंदिरों का संक्षिप्त निम्न में हैं।

1. हरसुर ग्राम :- श्री 1008 विघ्नहर पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन पंचकुट जैन मंदिर करीब 11वीं शताब्दी कल्याणी चालुक्य के राजवंश के समय का है। यह इ.स. 1181 तक एक खंडहर था। इसके दो कुटों का जीर्णोद्धार हुआ है, त्रिकट मंदिर का जीर्णोद्धार जरूरी है। वार्षिक मेला फाल्गुन वद्य मुला नक्षत्र पर रहता है। इस विभाग का यह सबसे बड़ा जिन मंदिर है। यहां भगवान पार्श्वनाथ की 7 फीट एवं 7 फीट 6 इंच ऊँचाई की दो मूर्तियाँ है। अन्य 17 मुर्तियाँ यहाँ पर है।

2. कालगी :- इस ग्राम में पहली सदी के तीन दिगम्बर जैन मंदिर हैं। एक भगवान पार्श्वनाथ का त्रिकुट मंदिर अति सुन्दर है, मंदिर जिसे मूलनायक की मुर्ति कुछ खंडित रूप में है, अन्य कुटों में मुर्तियाँ नहीं हैं। मंदिर गिरने में हैं। निकालकर विराजमान की है।

तीसरे मंदिर को मंदिर नहीं कर सकते क्यों कि यहाँ सिर्फ खंबे बचे हुये हैं एवं कोई भी मूर्ति नहीं है।

इन तीनों मंदिरो जीर्णोद्धार आवश्यक है।

3. गाडिकेश्वर : भगवान पार्श्वनाथ का प्राचीन मंदिर गिरने को है, पद्मानस्थ एवं कायोत्सर्ग मुर्तियाँ है जीर्णोद्धार जरूरी है।

4. मंगलगी : भगवान पार्श्वनाथ की कायोत्सर्ग करीब 14 फीट ऊंची काले पाषाण की मूर्ति दीवार को टीकी हुयी है। हाथ एवं पाँव खंडित मूर्ती है, इस मुर्ति को वज्रलेपन करके बनाया जा सकता है। प्राचीन मंदिर के बेसमें ट गांव के रस्ते पर पहले दिखते थे। अन्य छोटे मंदिरों का अतिक्रमण हो गया है। जीर्णोद्धार जरूरी है।

5. सुलेपेठ: इस ग्राम में प्राचीन दो मंदिर हैं। एक मंदिर का अतिक्रमण अन्य जातियों से हुआ है। दूसरे मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ की मूर्तियां बेहाल हैं, मंदिर जंगल से ढका हुआ है। चारों ओर से अतिक्रमण हुआ है। जीर्णोद्धार करना होगा।

6. इंगलगी : इस ग्राम में दो प्राचीन जिन मंदिर हैं । एक मंदिर का अतिक्रमण अन्य जातीयों ने किया है। दुसरा मंदिर गिर चुका हैं , मूर्तियाँ, शिलालेख मट्टी, कुड़े कचड़े में गीरी हुयी है। चारों और से अतिक्रमण हो चुका है। यह मंदिर जैन राणी जाकला देवी ने बनवाया था। जीर्णोद्धार अत्यावश्यक है।

7. दंडोती : यह भगवान पार्श्वनाथ का मंदिर पूर्ण रूप से खंडहर बन चुका है।

8. देगलमड़ी : यह जैन मंदिर एक बड़े घर में है, कुछ प्रतिमायें हैं। जीर्णोद्धार करना जरूरी है। पुजारी ने इंटरकास्ट शादी की हुयी है। इस मंदिर अंतर्गत कुछ जमीन है।

9. मीरीयाण : भगवान पार्श्वनाथ की चौबीसी युक्त विशाल मुर्ति है। अन्य अजैन मुर्ति को बुद्ध कह कर दर्शन लेते हैं। हक के लिए लड़ना होगा। मंदिर बनाना होगा।

10. पठशिरूर : इस छोटे मंदिर में कुछ मूर्तियाँ है। इस प्राचीन मंदिर की कुछ समय पहले मरम्मत की होगी। जैनों का एक घर यहाँ पर है।

11. हुणशी हडगील : इस भाग का यह एक बहुचर्चीत अतिशय क्षेत्र है। प्राचीन मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ जी भगवान शांतिनाथ जी एवं धरणेन्द्र पद्मावती जी मुर्तियाँ हैं । वार्षिक मेला भगवान पार्श्वनाथ जयंती पर होता है। दूसरा प्राचीन मंदिर टुट चुका है। जीर्णोद्धार जरूरी है।

12. जेवगरी तहसील : इस स्थान पर भगवान शांतिनाथ एवं ब्रह्मदेव यक्ष महाराज जी का प्राचीन मंदिर है। इस मंदिर की स्थिति ठीक है। यहाँ पर पौष अमावस को मेला होता

जीर्णोद्धार हुआ है एवं पूजा हो रही है।

27. भंकुर : यह स्थल जैन इतिहास मे भंकापूर कहलाया गया है। यहाँ दो प्राचीन जैन मंदिर है। एक मंदिर पर अजैनों ने अधिकार कर लिया है। दूसरे त्रिकुट जैन मंदिर का जीणोद्धार कर्नाटक सरकार पुरातत्व विभाग से चल रहा है। भगवान शांतिनाथ की प्राचीन मूर्ति एवं इतर मुर्तियाँ है।

28. यादगीर : शहर में जैन मंदिर है एवं पहाड़ पर उत्कीर्ण तीर्थंकर मूर्ति है। समाज है।

और भी अनेक प्राचीन मंदिर एवं मूर्तियाँ शैलगी, गंवार, बम्मनल्ली आदि अनेक ग्रामों में फैली हुई हैं। जिनका संशोधन एवं प्रसिद्धि होना चाहिए।

उपर लिखित जैन मंदिरों के जीर्णोद्धार हेतु अखिल भारत दिगम्बर जैन समाज आगे आना चाहिए। काफी धन एवं कार्यकर्ताओं की जरूरत है। हुणशी,हडगील, तडकल, मलखेड, आलुर (बी), जेवरगी, यादगीर, मालगत्ती इन प्राचीन मंदिरों के लिए स्वतंत्र समिति एवं ट्रस्ट हैं।बचे 22 प्राचीन मंदिरों के लिए श्री दिगम्बर जैन कल्याण ट्रस्ट (र) 7-1125/45 ए, गंज कालोनी, गुलबर्गा कार्यरत रहेगी एवं है। आप सभी से निवेदन है वर्तमान में हरसुर, इंगलगी, कालगी जैन मंदिर जीर्णोद्धानर हेतु कृपया धन राशी ऑनलाईन भेजे : खाते का नाम : श्री दिगम्बर जैन कल्याण ट्रस्ट : बैंक ऑफ महाराष्ट्र, सुपर माकेट गुलबर्गा- 585 101, खाता संख्या : 20132723022, आई.एफ.एस.सी. कोड : एम.ए.एच.बी. 0000425 में जमा करें। जमा कराने पर काउँटर फाईल भेजे, रसीद भेजी जायेगी।

आपकी इस मदत से हम कुछ मंदिरों की मरम्मत तो कर सकेंगे एवं भारत वर्षीय क्षेत्र कमीटियों का मंदिर से भागीदारी राशि दे पायेंगे।

जैन न्याय : स्वरूप एवं उपयोगिता

❊ परिणति जैन (विदिशा) ❊

जैन दर्शन में न्याय को परिभाषित करते हुए कहा गया है- प्रमाणनयात्मको न्यायः। अर्तात् न्याय नय और प्रमाणात्मक होता है। साथ ही जैन दर्शन में तत्त्वार्थों के अधिगम के उपायों की चर्चा में प्रमाण और नय-दोनों को समानरूप से उल्लिखित किया गया है। तत्त्वार्थ सूत्र में कहा ही है- प्रमाणनयैरधिगमः। अतः जैन न्याय में प्रमाण को जितना महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है उतना ही नयों को भी प्राप्त है। द्रव्य, तत्त्व, प्रमाण आदि की चर्चा तो सर्वत्र अन्य दर्शनों में भी की जाती है, परन्तु वस्तुस्वरूप के अधिगम एवं प्रतिपादन में नयों का प्रयोग जैनदर्शन की मौलिक विशेषता है। तात्पर्य यह है कि नय जैन दर्शन की एक ऐसी विशेषता है, जो उसे अन्य दर्शनों से पृथक करती है।

जैन दर्शन का यह नय प्रकरण जितना जटिल है,उतना आवश्यक भी है, क्योंकि समस्त जिनागम नयों की भाषा में ही निबद्ध है। नयों को समझें बिना हम जिनागम के रहस्य को नहीं समझ सकते और उसके बिना हमें आत्मकल्याण का सही मार्ग भी नहीं मिल सकता है। अतः आत्मकल्याण के लिए हमें नयों का ज्ञान करना आवश्यक है।

इस संसार में अनन्त वस्तुएँ हैं। प्रत्येक वस्तु अनेकात्मतात्मक हैं, अर्थात् उसमें अनन्त धर्म और विशेषताएँ होती हैं। जब भी किसी वस्तु का प्रतिपादन किया जाता है, तब एक साथ उन अनन्त धर्मों के संबंध में कह पाना संभव नहीं होता है, क्योंकि वाणी में अभिव्यक्ति की क्षमता सीमित है। कुछ धर्मों का प्रतिपादन करने से वस्तु का बोध अधूरा रह जाता है, अतः इस अधूरे अवबोध को पूर्णता तक पहुँचाने के लिए नयों का प्रयोग किया जाता है।

मनुष्य का सारा व्यवहार वाणी आधारित होता है और जो कुछ भी उसके द्वारा बोल जाता है, वह सारा नयों का ही प्रयोग होता है। कोई व्यक्ति अगर नयों के स्वरूप से परिचित न भी हो लेकिन तब भी वह नयों का प्रयोग करता है, क्योंकि वचन की सारी विवक्षाएँ नयों द्वारा ही नियंत्रित होती है। जैसे कोई व्यक्ति कवि है, लेखक है वक्ता है, दार्शनिक है, समालोचक है तथा और भी बहुत कुछ है किन्तु जिस समय उसके एक गुण की बात की जाती है, उस समय अन्य गुण उपेक्षित हो जाते हैं, विवेचन का आधार नहीं बन पाते हैं। यहाँ यह प्रश्न हो सकता है कि उस समय वे गुण कहाँ चले जाते हैं? क्या उनका लोप हो जाता है?तो नहीं, उन गुणों का लोप नहीं होता, अपितु वर्तमान में जिस गुण की प्रमुखता दृष्टिगत होती है, उसे वाणी का विषय बनाया जाता है, शेष सब गौण हो जाते हैं। अतः सम्पूर्ण वस्तु के खण्डशः प्रतिपादन की पद्धति ही नय है।

अलापपद्धति में देवसेनाचार्य ने नयों के स्वरूप को 4 प्रकार से स्पष्ट करते हुए कहा है कि

1. प्रमाणेन वस्तुसंगृहीतार्थेकांशो नयः- अर्थात् प्रमाण के द्वारा गृहीत वस्तु के एक अंश को ग्रहण करने का नाम नय है। प्रमाण के विषय में मुख्य गौण की व्यवस्था नहीं होती है, क्योंकि वह समग्र वस्तु को अपना विषय बनाता है, वह सर्वग्राही होता है। अतः उसके विषय में वस्तु के दोनों अंश मुख्य रहते हैं। नय का विषय वस्तु का एक अंश बनता है, वह अंशग्राही होता है। वस्तु के जिस अंश को विषय बनाया जाता है, वह अंश मुख्य होता है, शेष अंश गौण रहते हैं।

2. दूसरी परिभाषा में कहा है - श्रुतविकल्पो नयः अर्थात स्याद् पद से मुद्रित परमागमरूप श्रुतज्ञान के भेद नय है। यद्यपि श्रुतज्ञान एक प्रमाण है तथापि उसके भेद नय है। इसी कारण श्रुतज्ञान के विकल्प को नय कहा गया है।

3. तीसरी परिभाषा में कहा- ज्ञातुरभिप्रायों नयः अथवा **वक्तुरभिप्रायो** नयः अर्थात् अनन्तधर्मात्मक पदार्थ के किसी एक गुण को अथवा परस्पर विरूद्ध प्रतीत होने वाले धर्म-युगलों में से कोई एक धर्म को नय अपना विषय बनाता है। अब वस्तु के किस धर्म को विषय बनाया जाए यह ज्ञानी वक्ता के अभिप्राय पर निर्भर करता है। इसलिए कहा है कि ज्ञाता है कि ज्ञाता के अभिप्राय को अथवा वक्ता के अभिप्रायः को नय कहते हैं।

4. अन्तिम परिभाषा देते हुए कहा- नाना स्वभावों से वस्तु को पृथक करके जो एकस्वभाव में वस्तु को स्थापित करता है, वह नय है। नयों के कथन में एक धर्म मुख्य होता है और अन्य धर्म गौण रहते हैं। मुख्य धर्म को विवक्षित धर्म और गौण धर्म को अविवक्षित धर्म कहते हैं।

यहाँ एक बात ध्यान देने योग्य है कि नयों के कथन में अविवक्षित धर्मों की गौणता ही अपेक्षित होती है। उनका निषेध नहीं क्योंकि निषेध हो जाने पर वह नय नहीं रह पायेगा, नयाभास हो जाएगा। प्रमेयकमलमार्तण्ड में प्रभाचन्द्र देव नयों की परिभाषा देते हुए कहते हैं- **धर्मां का निराकरण न करते हुए वस्तु के अंश को ग्रहण करने वाला ज्ञाता का अभिप्राय नय है।**

यहाँ नय की परिभाषा में **अनिराकृतप्रतिपक्ष** विशेषण डालकर गौण शब्द का भाव अत्यंत सफलतापूर्ण स्पष्ट कर दिया गया है। आशय यह है कि जिन धर्मों को प्रतिपक्ष मानकर गौण किया है, उनका निराकरण नहीं किया अपितु उनके संबध में मौन रखा गया है। इन्हीं सब बातों का धवला में वीरसेनाचार्य ने और भी अधिक स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है।

यह तो हुई नयों के स्वरूप की चर्चा।

अब प्रश्न है कि नय कितने होते हैं अर्थात् उसके कितने भेद होते हैं ? तो इस प्रश्न का निश्चित उत्तर नहीं है, क्योंकि वस्तु के जितने धर्म होते हैं उन पर विचार करने के या बोलने के जितने तरीके होते हैं वे सभी नय कहलाते हैं। शास्त्रों में भी अनेक प्रकार से नयों का वर्गीकरण किया गया है। इस क्रम में देखते तो नय 1 प्रकार का है अर्थात् जो श्रुतज्ञान की पर्याय है और अंशग्राही है। नय 2 प्रकार के हैं- आगम के नय द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक अथवा अध्यात्म के नय निश्चय और व्यवहार तथा वचनात्मक और ज्ञानात्मक ये भी नयों के दो भेद हो सकते हैं।

इसी प्रकार श्लोकवार्तिक में ज्ञाननय, शब्दनय और अर्थनय ये नयों के 3 भेद बतायें हैं। तत्त्वार्थ सूत्र मे नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ़ एवं एवंभूत के भेद से 7 विकल्प बतायें हैं। तो प्रवचन सार में 47 प्रकार के नय बताये गये हैं। धवला में वीरसेनाचार्य ने असंख्यात नय तथा सर्वार्थसिद्धि में आचार्य पूज्यपाद ने अनन्त बतायें हैं। क्योंकि वचनात्मकता से देखे तो नय संख्यात होते हैं, विकल्पात्मकता से देखने पर नय असंख्यात होते हैं तथा गुण-धर्म शक्ति के अपेक्षा नय अनन्त होते हैं।

इस प्रकार नय के सामान्य से 1 भेद- विशेष से संक्षेप से 2,5,7 विस्तार से 47 और अति विस्तार से अनन्त भेद होते हैं।

नय-प्रमाण के स्वरूप को समझकर हम वस्तुस्वरूप का यथार्थ निर्णय करें और अपना आत्मकल्याण करें-यही मंगल कामना है।

डाकटिकटों पर जैन इतिहास

भारत के संग्रहालय : ऐरावत हाथी एवं कल्पद्रुम अथवा कल्पवृक्ष

❋ सुरेश जैन लुधियाना ❋

देवलोक में देवगण ही हाथी-घोड़ा आदि का रूप धारण कर के सेना के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। ऐरावत इसी प्रकार का एक हाथी है। इन्द्र महाराज की चतुविध सेना में जो गजसेना है, ऐरावत उस सेना का अधिपति माना जाता है। इसीलिए उसे हस्ती राजा भी कहते हैं। श्री स्थानाङ्ग जी सूत्र में कहा गया है -

एरावणे हत्थिराया कुंजराणी याहि वई!

अर्थात् गजराज ऐरावत कुञ्जर सेना का अधिपति है। हाथियों में कई जातियाँ होती है, उन सब में ऐरावत में हाथी सब में श्रेष्ठ-सर्वश्रेष्ठ माना गया है। कहा भी है :-

हत्थीसु एरावणमाहुणायं

भगवान महावीर की स्तुति-प्रसङ्ग में कहा गया है कि जैसे समस्त हाथियों में ऐरावत उत्तम है, उसी प्रकार भगवान सब महापुरुषों में उत्तोत्तम हैं। इन्द्र महाराज जब तीर्थंकर भगवान के जन्मोत्सव को मनाने के लिए आते हैं तो ऐरावत पर सवार होकर ही आते हैं, भगवान को उसी पर विराजमान करके सुमेरु-पर्वत पर अभिषेक के लिए ले जाते हैं। धन्य-धन्य है वह गजरात ऐरावत जिसे अपने ऊपर भगवान को अरूढ़ करने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

ऐरावत का वर्णन केवल जैन साहित्य में आता है। अपितु प्राचीन हिन्दु साहित्य तथा बौद्ध साहित्य में भी आता है। ऐरावत को वैदिक इन्द्र का वाहन भी माना जाता है।

(परिचय साध्वी ऊर्जा जी मुकेरियाँ चातुर्मास-2005) प्रारंभिक 19वी शताब्दी का लकड़ी के ऊपर बहुत खूबसूरत नकाशी किया हुआ पौराणिक ऐरावत श्वेत हाथी जिस के सात सूंड है, जो एक पहियेदार गाड़ी पर सवार है इसे गुजरात क्षेत्र के एक जैन मन्दिर से लिया गया है। यह जैन मन्दिर लकड़ी की नककाशी और काष्ठ की वास्तुकला के लिए सुप्रसिद्ध है। इस समय इस ऐरावत को कच्छ संग्रहालय-भुज (गुजरात) में सुरक्षित रखा गया है। इस संग्रहालय की स्थापना प्राचीन स्मारक सुरक्षा अधिनियम 1904 के फलस्वरूप हुई थी।

ऐरावत हाथी पर डाक टिकट :- भारतीय संग्रहालयों पर डाक टिकट की सिरीज के लिए विषयों का चयन करने में डाक-तार विभाग ने सहस्त्राब्दियों के भारतीय इतिहास का ही नहीं अपितु इसके लिए देश के विभिन्न भागों से विविध कलात्मक अभिव्यक्तयों का भी अवलोकन किया था। भारत के संग्रहालय डाक टिकट 1978 के अंतर्गत संग्रहालयों में पड़ी हुई धरोहर के रूप में चार डाक टिकटों का एक सेट जारी किया गया था! जिस में 25 पैसे के डाक टिकट के ऊपर कच्छ संग्रहालय-भुज में सुरक्षित ऐरावत हाथी का चित्र दिया गया है यह बहूरंगी डाक टिकट 27-7-1978 को भारत प्रतिभूति

मुद्रणालय से छपवा कर 50 लाख संख्या में जारी किया गया था। इस का विवरण लंडन इंगलेण्ड से छपने वाले Stanley Gibbons Caralouge में SG नम्बर 764 पर दिया गया है।

कल्पद्रुम अथवा कल्पवृक्ष :- इस वृक्ष का वर्णन प्राय समस्त प्राचीन धर्मो के ग्रंथो में आता है। भोगभूमि जीवों को सभी प्रकार की आवश्यक सामग्री प्रदान करने वाले वृक्ष कल्पवृक्ष कहलाते हैं । इनका अपर नाम सरतरू भी है। यहाँ पर जैन साहित्य की दृष्टि से दस प्रकार के कल्पवृक्षों का संक्षेप मे परिचय दिया जा रहा है।

1. मद्यांग वृक्ष - मधुर, सुस्वाद और पौष्टिक रस प्रदान करने वाले।

2. मृताङ्ग वृक्ष- विविध प्रकार के पात्र-भाजन प्रदायक वृक्ष।

3. तूर्याङ्ग वृक्ष- आमोद प्रमोद हेतु विभिन्न वादित प्रदायक वृक्ष।

4. दीपाङ्ग वृक्ष- अपनी शाखा-प्रशाखाओं से दीपकवत् प्रकाश फैलाने वाले वृक्ष।

5. ज्योतिकष्ठ वृक्ष - सूर्य अथवा अग्निवत् उष्णता प्रदान करनेवाले वृक्ष।

6. चित्राङ्ग वृक्ष-विविध वर्णो के पुष्प देने वाले।

7. चित्ररस वृक्ष- विभिन्न प्रकार का स्वादिष्टभोजन देनेवाले वृक्ष।

8. गेहागार वृक्ष - मकान की तरह आश्रय प्रदान करने वाले वृक्ष।

9. अनग्न वृक्ष - वस्त्राभाव की पूर्ति करने वाले वृक्ष।

10. मण्यङ्ग वृक्ष - मणि रत्न आदि की तरह विविध चमकदार आभूषणों का प्रदायक वृक्ष।

डाक टिकट का डिजाईन :- डाक टिकट पर जिस कल्पद्रुम अथवा कल्पवृक्ष का चित्र दिया गया है यह दूसरी शताब्दी की अद्भभुत मूर्तिकला की कृति है। किसी समय यह मध्यप्रदेश के विदिशा जिले के बेसनगर में किसी स्तंभ का शीर्ष था। इस समय यह भारतीय संग्रहालय कोलकत्ता में सुरक्षित है। कल्पद्रुम की कल्पना एक ऐसे वृक्ष के रूप मे की गई। जो समस्त कामनाओं की पूर्ति करने वाला और समस्त निधियों का देने वाला है, जैसे कि शंख, पद्म, दो कलश, जिन के लगातार मुद्राएं गिर रही हैं, एवं चार थैलियां जिन का रस्यिों का बांधा है। जिस स्तंभ का यह शीर्ष भाग है। वह धनपति कुबेर के किसी मंदिर की शोभा रहा होगा।

कल्पद्रुम अथवा कल्पवृक्ष पर डाक टिकट :- इसी श्रृंखला में जो दूसरी डाक टिकट जारी की गई थी वह इसी कल्पवृक्ष के चित्र वाल बहुरंगी डाक टिकट है जिस का मुल्य 50 पैसे है इसे 27-07-1978 को 30 लाख संख्या में छपवाकर जारी किया गया था । इस का विवरण एस.जी नम्बर 765 पर दिया गया है।

पाठकों की जानकारी के लिए इसी श्रृंखला में जो तीसरी डाक टिकट एक रूपये मुल्य की जारी की गई थी। उस पर पहली शताब्दी के सोने के एक कुषाण सिक्के के दोनो पहलू दिखाये गये हैं । यह सिक्का इस समय राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में सुरक्षित है। इसी श्रृंखला की जो चौथी डाक टिकट छापी गई है। उस का मूल्य दो रूपये है। उस पर 17वीं शताब्दी की मुगलकारी पर आधारित बहुत से बहुमूल्य रत्नजड़ित मुगल सम्राट जहांगीर की एक कटार तथा उनकी बेगम नूरजहां का एक छुरा है। यह दोनों हथियार इस समय सालारजंग संग्रहालय हैदराबाद में सुरक्षित हैं।

आगम वाचना और आचार्य विद्यासागर

❊ डॉ. देवकुमार जैन (रायपुर) ❊

श्रुत आराधना की श्रृंखला में पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने एक अनूठी पहल की थी सन् 1980 में अप्रैल महीने में वर्णी भवन मोरा जी के विशाल सभागार में षटखण्डागम महान ग्रंथ के सूत्र गुंजायमान कर दिये थे सूत्रों पर लिख हुई थी आचार्य वीरसेन की टीका की मीमांसा आचार्य श्री के मुखार विंद से सुनकर हर विद्वान विश्मय के सागर में डूब गया था मात्र 34 साल के युवा आचार्य विद्यासागर जी महाराज के मुख से आगम सूत्रों के गंभीर नये अर्थ सुनकर विद्वानों समूह के एक नई उहा कोह पैदा हो गई थी। सागर की वाचना के उपरांत षटखण्डागम ग्रंथ का सामान्य जन समुदाय को परिचय प्राप्त हुआ था तथा श्रुत पंचमी के महापर्व पर सागर नगर में पहली बार विशाल शोभायात्रा में आचार्य विद्यासागर जी महाराज के संघ के साथ तीन नवदीक्षित मुनि श्री समय सागर जी मुनि श्री नियमसागर जी एवं मुनि श्री योगसागर जी थे तथा इसी वाचनाकाल में मुनि श्री योगसागर एवं मुनि श्री नियमसागर जी को मुनि दीक्षा प्रदान की गई थी।

सन् 1981 में आगम ग्रंथ की वाचनाओं की गति का केन्द्र जबलपुर मढ़िया जी तीर्थ क्षेत्र बना था सागर वाचना के कुलपति पंडित जगन मोहनलाल शास्त्री जी थे।तथा उन्होंने ही जबलपुर मढ़िया जी वाचना का नेतृत्व किया था इन दोनों वाचनाओं में पंडित फूलचंद सिद्धांत शास्त्री पं. कैलाशचंद सिद्धांत शास्त्री पं. बालचंद सिद्धांत शास्त्री शामिल हुए पंडित हीरा लाल सिद्धांत शास्त्री केवल सागर की वाचनाओं के अपनी गरिमामय उपस्थिति प्रदान कर पाये थे किन्तु वे जबलपुर की वाचना के पूर्व ही समाधि को प्राप्त हो गये थे। आचार्य श्री पुनः सन् 1982 में सागर महानगर में वर्णी जी की मूर्ति के सामने ही आचार्य विद्यासागर जी महाराज जी के षटखण्डागम ग्रंथ की वाचना प्रारम्भ हुई इस वाचना का प्रभाव संपूर्ण जैन समाज पर बहुत गहरा पड़ा सिद्धांत ग्रंथो की वाचना से माध्यम से जो ग्रंथ मंदिरों की संदूक में बन्द थे वे बाहर निकालना प्रारंभ हो गये तथा षटखण्डागम ग्रंथ की

मर्यादित वाचना के माध्यम से संयमी जीवों द्वारा वाचना का महत्व समझ में आया जैन समाज ने भूतवलि पुष्पदंत आचार्य के द्वारा प्रस्तुत किये गये सिद्धांत का गहरा अर्थ सहजता व सरलता से समझा।

सन् 1983 में सम्मेद शिखर यात्रा के बाद आचार्य श्री का ग्रीष्म योग ईसरी में हुआ यही पर जिनेन्द्र वर्णी जो जैनेन्द्र सिद्धांत कोश के श्रेजेयता थे ऐसे क्षुल्लक जिनेन्द्र वर्णी जी ने पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के चरणों में अपना सम्पूर्ण ज्ञान परिमार्जित किया वही उन्होंने समाधि व्रत ग्रहण करके आचार्य श्री के चरणों में अंतिम सांस भी ली आचार्य श्री की वाचनाओं का महत्व उस समय अधिक प्रकट हुआ जब बीस तीर्थंकर की निर्वाण भूमि में मुनि मल्लिसागर जी का भी सानिध्य प्राप्त हुआ। ईसरी का वाचना के उपरांत सन् 1984 में पूज्य आचार्य श्री ने एक प्रभावी वाचना मढ़िया जी तीर्थ पर सम्पन्न की इस वाचना में एक बिन्दु उभरकर सामने आया कि पन्थ और आस्त्रव के क्षेत्र में मिथ्यात्व की भूमिका कषाय और योग से भिन्न हैं । कुछ उत्साही लोगों ने आचार्य श्री को चारित्र चक्रवर्ती उपाधि से विभूषित करने का उपाय किया किन्तु आचार्य श्री ने अपनी दृढ़ता के साथ उपाधि को अस्वीकार किया सन् 1985 में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी की वाचना खुरई नगर में हुई इस वाचना में नगर का बिगड़ा हुआ वातावरण आचार्य श्री के प्रभाव से पुनः सौहार्द पूर्ण भावना से ओत प्रोत हो गया सन् 1986 में पपोरा जी में षठखंडागम ग्रंथ में पाँचवी पुस्तक की वाचना हुई। सन् 1987 में ललितपुर के क्षेत्रपाल तीर्थ पर आगम सिद्धांत ग्रंथ की वाचना हुई । इसी समय आचार्य देशभूषण जी एवं आचार्य धर्म सागर जी का संलेखना पूर्वक एवं 1988 में पुनः इसी क्षेत्र पर आचार्य श्री का अंतिम संस्कार हुआ ग्रीष्मयोग के साथ आगमपंथ की वाचना हुई इस तरह से अनेक वाचनाओं का अयोजन पूज्य आचार्य श्री की प्रेरणा से होता रहा वाचनाओं के माध्यम से धवल जयधवल जैसे सिद्धांत ग्रंथो का चर्चा में आना बहुत बड़ी उपलब्धि हुई तथा ये सभी ग्रंथ गांव गांव के शास्त्र भण्डार में विराजमान हुए जिन शासन की प्रभावना में इन वाचनाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

जैन दर्शन

❊ प्रो. माधवाचार्य, एम.ए. ❊

यह दर्शन प्रधान रूपये अर्हत् भगवान का उपासक है इसलिए कोई कोई दार्शनिक इसको आर्हत-दर्शन भी कहते हैं।

संसार के त्यागी पुरुषों परमहंसचर्या सिखाने के लिए त्रिगुणातीत पुरुष विशेष परमेश्वर ने ऋषभावतार लिया था ऐसा भागवत आदि पुराणों में वर्णित महिमा मय वर्णन से स्पष्ट है। जगत के लिए परमहस-चर्या पथ दिखाने वाले आप ही थे। हमारे जैन धर्मावलम्बी भाई आपको आदिनाथ कहकर स्मरण करते हुए जैन धर्म के आदि प्रचारक मानते हैं ।

भगवान ऋषभ देव ने सुख प्राप्तिका जो रास्ता बताया था वह हिंसा, आदि भंयकर पापों के सघन तिमिर में अदृष्ट सा हो गया। उसके शोधन के लिए अहिंसा धर्म के अवतार भगवान महावीर स्वामी का अविर्भाव हुआ जिन्हें जैन लोग श्रीवर्धमान प्रभु कहकर श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।

महावीर स्वामी के उपदेशों को सूत्रों के रूप में ग्रथित करने वाले आचार्यों ने महावीर स्वामी के अवतरित होने का प्रयोजन बताया है कि , सव्व जगा रक्खण दआट्ठ आअपवयणं सु कहियं भगवया- भगवान महावीर स्वामी ने व्यथित जीवों करूण कन्दन से करूणाद्र चित्त होकर सब जीवों की रक्षा रूप दया के लिए सार्वजनीन उपदेश देना प्रारम्भ किया था।

यह सर्व साधारण को ज्ञात है कि भगवान बुद्धदेव ने विश्व को दुख रूप कहते हुए क्षणिक कहते समय यह विचार नहीं किया था कि इससे अनेक अनेक लाभों के साथ क्या क्या दोष होंगे। उनका उद्देश्य विश्व को वैराग्य की तरफ ले जाने का था जिससे अनाचार अत्याचार तथा हिंसा का लोप हो जाय। महावीर स्वामी ने बुद्ध देव से बनाये गये अधिकारियों की इस कमी को पूरा करने को पर भी ध्यान दिया था। इन्होंने कहा कि अखिल पदार्थों को क्षणिक समझकर शून्य को तत्त्व का रूप देना भयंकर भूल है। जब सब मनुष्य रंग रूप में एक से ही है तब फिर क्या कारण हैं कि कोई राजा बनकर शासन कर रहा है और कोई प्रज्ञा बना हुआ आज्ञा पालता है। किसी में कई विशेषताएं पायी जाती हैं तो किसी को वे बातें प्रयास करने पर भी नहीं मिलतीं। इसमें कोई कारण अवश्य है। वर्तमान जगत को देखकर मेरी समझ तो यही आता है कि शरीर से भिन्न, अच्छे बुरे कर्मो के शुभ अशुभ फलका भोक्ता, शरीर को धारण वर्णी-अभिनन्दन अन्य करने वाला कोई अवश्य है। उसके रहने से यह प्राणी चैतन्य रहता है, उसके छोड़ देने से मृतक कहलाता है। वह चैतन्य शरीर के जीवन का कारण होने से जीव शब्द से बोला जाता है। क्षण क्षण में तो इस परिदृश्यमान जगत के परिणाम हुआ करते है। इसलिए परिणाम ही प्रतिक्षण होने के कारण क्षणिक कहा जा सकता है। क्षणिक कहने वालों का वास्तविक मतलब परिणाम को क्षणिक कहने का है दूसरे किसी द्रव्य, आदि को नहीं ।

जो शून्य कहा जाता है उसको अर्थ कथंचित् शून्य कहने से है, केवल कहने से नहीं । क्योंकि परिदृश्यमान विश्व कंथचित्

परिणाम् या पर्याय रूप से शून्य अनित्य अथवा असत् कहा जा सकता है, द्रव्यत्व रूप से नहीं कहा जा सकता है।

यह दर्शन एक द्रव्य पदार्थ ही मानता है। गुण और पर्याय के आधार को द्रव्य कहते है । ये गुण और पर्याय इस द्रव्य के ही आत्म स्वरूप हैं, इसलिए ये द्रव्य की किसी भी हालत में द्रव्य से पृथक नहीं होते । द्रव्य के परिणत होने की अवस्था को पर्याय कहते है जो सदा स्थित न रहकर प्रतिक्षण में बदलता रहता है-जिससे द्रव्य रूपान्तर में परिणत होता है । अनुवृत्ति तथा व्यावृत्ति का साधन गुण कहलाता है, जिसके कार ण द्रव्य सजातीय से मिलते हुए तथा विजातीय से विभिन्न प्रतीत होते रहते हैं।

इसकी सत्ता में इस दर्शन के अनुयायी सामान्य विशेष के पृथक मानने की कोई आवश्यकता नहीं समझते।

द्रव्य एक ऐसा पदार्थ इस दर्शन ने माना है किसके मानने पर इससे दूसरे पदार्थ मानने की आवश्यकता नहीं रहती, इसलिए इसका लक्षण करना परमावश्यक है।

अपरित्यक्त स्वाभावने उत्पाद्व्ययध्रुवत्वसंवद्धम्।
गुणवच्चसपर्यायम् यत्तदद्रव्यमिति ब्रुवन्ति ॥3॥

अर्थात्-जो अपने अस्तित्व स्वभावकों न छोड़कर, उत्पाद, व्यय तथा ध्रुवता से संयुक्त है एवं गुण तथा पर्याय का आधार है सो द्रव्य कहा जाता है।

यही लक्षण तत्त्वाथ सूत्र में भी किया है कि गुणपर्यय वद्द्रव्यम्ा उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत्। यह द्रव्य जीवास्तिकाय, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्किाय, आकाशास्तिकाय, पुदगलास्तिकाय काल इन भेदों से छह प्रकार का होता है । सावयव वस्तु के समूह को अस्तिकाय कहते हैं । काल को छोड़कर शेष द्रव्य सप्रदेशी हैं, इसलिए जैन न्याय में काल को वर्जकर सबके साथ अस्तिकाय शब्द का प्रयोग किया गया है।

को वर्जकर सबके साथ अस्तिकाय शब्द का प्रयोग किया गया है।

श्री कुन्दाकुन्दाचार्य ने आत्मा को अरूप, अगंध, अव्यक्त, अशब्द, अरस, भूतों चिन्हों से अग्राहा, निराकार तथा चेतना गुणवाला अथवा चैतन्य माना है।

रूप, रस गंध, स्पर्श गुणवाले तेज, पृथ्वी वायु का पुद्गल शब्द से व्यवहार होता है क्योंकि ये पूरण-गलन स्वभाव वाले होते हैं। पुद्गल द्रव्य सूक्ष्म और स्थूल भेद से दो प्रकार का होता है। उसके सूक्ष्मपने की अन्तिम हद पर माणु पर जाकर होती हैं । तथा परमाणुओं के संघात भाव को प्राप्त हुए पृथिवी, आदिक स्थूल कहलाते हैं ।

जीव और पुद्गलों की गति में सहायक को धर्म कहते हैं । तथा गति-प्रतिबन्धक अधर्म नाम से पुकारा जाता है।

अवकाश देने वाले पदार्थ को आकाश कहकर बोलते हैं। द्रव्य के पर्यायों का परिणमन करने वाला काल कहलाता है।

यह छह प्रकार के द्रव्यों का भेद लक्षण सहित दिखलाया गया है । सम्पूर्ण वस्तुज्ञान इन ही का प्रसार है, ऐसा इस दर्शन का मत है।

जैन दर्शन का प्रमाण भी वेदान्त सिद्धान्त से मिलता जुलता है । इनके यहां

अपना और पर पदार्थ का आप ही निश्चय करने वाला, स्वपर प्रकाशक ज्ञान ही प्रमाण कहलाता है तथा इसके लिए आत्मा शब्द का भी व्यवहार होता है, क्योंकि यही ज्ञान आत्मा है। यह प्रत्यक्ष तथा परोक्ष भेद से दो प्रकार का होता है। सांव्यवहारिक तथा परमार्थिक भेद से प्रत्यक्ष भी एक पूरी लफ्त हैं । चक्षु और मन तो विषका का दूर रहने पर भी अनुभव कर लेते हैं परन्तु बाकी इन्द्रियां विषय का समीप्य प्राप्त होने पर ही विशेष संयोग द्वारा अनुभव कर सकती हैं। इसलिए जैनागम मन और चक्षु को अप्राप्यकारी तथा बाकी चारों ज्ञानेन्द्रियों को प्राप्यकारी कहता है। इन्द्रियों के भेद से उनके अनुसार इस के भेद होते हैं ।

ही विशेष संयोग द्वारा अनुभव कर सकती हैं। इसलिए जैनागम मन और चक्षु को अप्राप्यकारी तथा बाकी चारों ज्ञानेन्द्रियों को प्राप्यकारी कहता है। इन्द्रियों के भेद से उनके अनुसार इस के भेद होते हैं ।

जैनी लोग व्यवहार के निर्वाह करने वाले प्रत्यक्ष को सांव्यवहारिक प्रत्पक्ष कहते हैं । इसका दूसरा नाम मतिज्ञान भी है। यह इस के भेदों के साथ कह दिया गया है। अत्र मय भेदों के पारमार्थिक प्रत्यक्ष कहा जाता है।

जो प्रत्यक्ष किसी भी इन्द्रिय की सहायता न लेकर वस्तु का अनुभव कर ले वह पारमार्थिक प्रत्यक्ष कहलाता है । यही वास्तविक प्रत्यक्ष कहने योग्य है। बाकी प्रत्यक्ष तो लोकयात्रा के लिए स्वीकार किया है। यह विकल पारमार्थिक प्रत्यक्ष और सकल पारमार्थिक प्रत्यक्ष भेद से दो प्रकार का होता हैं । जो प्रत्यक्ष पूर्वोक्त प्रकार से रूपी पदार्थो का ही अनुभव कर सकता हो वह अरूपी पदार्थों के अनुभव से हीन होने के कारण विकल परमार्थिक प्रत्यक्ष कहलाता है।

ज्ञान को नय कहते हैं। क्योंकि वस्तु का मति, श्रुतज्ञान होने पर भी उसके समस्त धर्मों का ज्ञान नहीं हो सकता। उसके किसी एक अंश के अनुभव का निरूपण, नय से भली भांति हो जाता है।

द्रव्य मात्र को ग्रहण करने वाला तथा गुण और पर्याय मात्र को ग्रहण करने वाला नय क्रम से द्रव्यार्थिक और पर्यायर्थिक कहलाता है। नैगम, संग्रह और व्यवहार नय के भेद से तीन प्रकार का द्रव्यार्थिक होता है इसी तरह ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ़ और एवं भूत यह चार प्रकार का पर्यायर्थिक नय होता है।

वस्तु का प्रत्यक्ष करते समय आरोप तथा विकल्प को नैगम नय ग्रहण करता है। एक के ग्रहण में तज्जातीय सत्र का ग्रहण करने वाला संग्रह नय होता है। पृथक्, पृथक व्यवहारनुसार ग्रहण करने वाला व्यवहार नय है। वर्तमान पर्याय को ग्रहण करना ऋजुसूत्र नय का कार्य है। व्याकरणसिद्ध प्रकृति, प्रत्यय, लिंग आदि के ग्रहण करने वाले को शब्द नय कहते हैं। पर्यायवाचक शब्दों की व्युत्पत्ति के भेद से भिन्न अर्थों को ग्रहण करने वाले का नाम समभिरूढ़ नय है। अन्वयार्थक संज्ञा वाले व्यक्ति का उस काम को करने के क्षण में ग्रहण करने वाला एवं भूत नय है।

जब प्रमाण अपने ज्ञेय विषयों को जानते है तब ये नय उनके अंग होकर ज्ञान प्राप्ति में सहायता पहुंचाते हैं। इसलिए तत्त्वार्थ सूत्र कारने वस्तु के निरूपण में एक ही साथ इनका उपयोग माना है।

निक्षेप- इसी तरह वस्तु के समझने के लिए, स्थापना, द्रव्य और भाव निक्षेपका भी उपयोग होता है। अन्त में यह सिद्धान्त व्याकरण महाभाष्यकारकी चतुष्टयी शब्दानां प्रवृत्ति से मिलता जुलता है। साधारणतः संज्ञा को नाम तथा झूठी सांची आरोपण को स्थापना एवं कार्यक्षमता को द्रव्य और प्रत्युपस्थित कार्य या पर्याय को भाव कहते हैं।

जैन तंत्र वस्तु के निरूपण में इतनी उपकरणों की अपेक्षा रखने वाला होने के कारण प्रथम कक्षा के लोगों के लिए दुरुह सा हो गया है। पर इसके मूल तत्त्व समझमें आ जाने के बाद कोई कठिनता नहीं मालूम होती। इसी तरह क्षेत्र, काल और स्वामी आदि का ज्ञानभी आसान हो जाता है।

लोका का स्वरूप-एह हजार मन का लोहे का गोला इन्द्र लोक से नीचे गिरकर छह मास में जितनी दूर पहुंचे उस सम्पूर्ण लम्बाई को एक राजू कहते हैं। नृत्य करते हुए भोंपा के समान आकार वाला यह ब्रह्माण सात राजू चौड़ा और सात राजू मोटा ता चौदह राज उंचा (लम्बा) है। अन्य दर्शनों के समान जैन दर्शन भी स्वर्ग, नकर तथा इन्द्रादि देवताओं के जुदे जुदे लोक मानता है।

जीवात्मा का विस्तार-यह दर्शन जीवात्मा को समस्त शरीर व्यापी मानता है। छोटे बड़े शरीर में दीपक के समान जीवात्मा के भी संकोच विकास होते रहते हैं। परन्तु मुक्त जीव अन्तिम शरीर से कुछ कम होता है।

जीव के भेद-पृथिवी, जल, वायु, तेज ओर वनस्पति शरीर वाले जीव स्थावर कहलाते है। इनको स्पर्श का ही विशेष रूप से भान होता है।शेष स्पर्शादि द्वि इन्द्रियों से लेकर पांच इन्द्रिय वाले मनुष्य, आदि त्रस कहलाते हैं। कारण, इनमें अपनी रक्षा करने की चेष्टा होती है।

मुक्त जीव- संवर और निर्जरा के

प्रभाव से आस्त्र का बन्धन छूटकर आत्म-प्रदेशों मे से कर्मों के संयोग को तोड़ कर नाश कर दिया जाता है। तब जीव अपने आप उर्ध्व गमन करता हुआ। मुक्त हो जाता है। फिर उसका जन्म मरण नहीं होता।

अहिंसा परमो धर्म :- इस दर्शन के अनुयायियों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह, आदि सार्वभौम छह व्रतों की उपासना प्रधान रूप से होती है। सब धर्मों के मूल अहिंसा ब्रत की उपासना, करने के कारण इन्हें अहिंसा परमो धर्मः का अनुयायी कहा जाता है।

यत्र तत्र आचार्यों के ईर्षा द्वेष सूचक अक्षरों को पृथक करके दर्शन के मूल सिद्धान्तों पर विचार किया जाय तो वे सिद्धानत वेद से परिविद्रित सनातन ही प्रतीत होते हैं। कारण, भगवान वेदव्यास के न्यास भाष्य से मूल जैनदर्शन, बिलकुल मिलता जुलता है। रही आपस के खण्डन मण्डन की बात, सो हर एक दार्शनिकको उसमें पूरी स्वतंत्रता रही है जब वेदान्त-ब्रह्मसूत्र ने अपने बराबर के योग शास्त्र के सिद्धान्त के लिए भी कह दिया है कि एतेन योग प्रत्युक्त इससे योग प्रत्युक्त कर दिया गया, तब हम वेद के विचारों के अतिरिक्त दार्शनिक खण्डन मण्डन पर ध्यान नहीं देते। उसमें तत्त्व ही ढूंढ़ते हैं।

अहिंसा को मुख्यता मानने वाला यह दर्शन महावीर स्वामी के निर्वाण के बाद भी अहिंसा के मुख्य सिद्धान्तों का संग्राहक रहा इसी कारण अग्रोहाधिप महाराज अग्रसेन जी की सन्तान ने अपने को इस धर्म में दीक्षित किया था।

प्रायः जब किसी दर्शन का अनुयायी अधिक जन हो जावेगा तब ही जुदे जुदे मण्डल खड़े होने लग जांयगे। एक दुर्भिक्ष के बाद जैनों में भी श्वेताम्बर नाम से दूसरा सम्प्रदाय बन गया।

महाराज अग्रसेन की जैन सन्तान ने दिगम्बर पथ का अनुसरण किया, जो अब भी जैन समुदाय में सरावगी कह कर पुकारे जाते हैं। वे प्रायः वैदिक संस्कार तथा अहिंसा व्रत दोनों ही का पालन करते हैं। इनमें अग्रवालों की संख्या अधिक है। सरावगी लोग वैदिक विधि से ही उपवीत धारण करते है।

दिगम्बर सम्प्रदाय में पहिले मूर्ति पूजा को न मानने वाला लगभग हजार व्यक्तियों का समुदाय निकला था पर उसकी अधिक वृद्धि न हो सकी। काल पाकर श्वेताम्बर सम्प्रदाय की संवेगी और बाईस टोला इन दो भागों में बट गया। संवेगी लोग अधिक सूत्र ग्रंथ माना करते हैं पर इनमें से बाइस टोलाने थोड़े से ही सूत्र ग्रंथो को प्रमाण माना है। आज से करीब दो सौ वर्ष के पहिले बाईस टोला से निकलकर श्री भीखमदास जी मुनि ने तेरह पंथ नाम का एक पन्थ चलाया। इसमें सूत्रों की मान्यता तो बाईस टोला के बराबर है परन्तु स्वामी दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश की तरह इन्होंने भी भ्रम विध्वंसन और अनुकम्पा की ढाल बना रखी है। इस मतने दया दान का बड़ा अपवाद किया है।

जैन साधु में सत्ताईस गुण रहने चाहिए। उसका आहार भी सेंतालीस दोषों से रहित होना चाहिए। मठधारी यतियों को छोड़कर के शेष सर्व जैन साधुओं में कष्ट सहने की अधिक शक्ति पायी जाती है। तेरह पंथ तथा बाईस टोला के साधु गण मुख पर पट्टी बांधते हैं। संवेगी साधु उसे हाथ ही में रखते हैं। बाकी साधुओं में इसका व्यवहार नहीं है, शास्त्रों में

इनका नाम श्रमण हैं । अन्य सम्प्रदायों में साधारण लोग यतियों के सिवा इन साधुओं को ढूढ़िया कहकर व्यवहार करते हैं । पहले तो इसका अधिकांश प्रचार यति योंने ही किया था।

सम्प्रदायों की प्रतिद्वन्दिता के साथ कुछ लोग यह भी समझने लग गये हैं कि हमारा सनातन धर्म के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है । कतिपय सम्प्रदायों ने तो अपना रूप भी ऐसा ही बना लिया है कि मानों इनका सनातन धर्म के साथ कभी कोई सम्बन्धी नहीं रहा था। वह भोले लोगों की नासमझी ही है।

जैन धर्म के परिरक्षकोंने जैसा पदार्थ के सूक्ष्म तत्त्व का विचार किया है उसे देखकर आजकल के दार्शनिक बड़े जाते हैं, वे कहते हैं कि महावीर स्वामी आजकल के विज्ञान के सबसे पहिले जन्मदाता थे । जैन धर्म की समीक्षा करते समय कई एक सुयोग्य प्राध्यापकोंने ऐसा ही कहा है । श्री महावीर स्वामी ने गोसाल जैसे विपरीत वृत्तियों को भी उपदेश देकर हिंसा का काफी निवारण किया

भगवान बुद्ध देव व महावीर स्वामी के उपेदश उस समय की प्रचलित भाषाओं ही हुआ करते थे जिससे अब लोग सरलता समझ लिया करते थे । उस समय की भाषाओं के व्याकरण हेमेन्द्र तथा प्राकृत प्रकाश के देखने से पता चलता है कि वह भाषा अपभ्रंश के रूप को प्राप्त हुई संस्कृत भाषा ही थी । उसी को धर्मभाषा बना लेने के कारण श्री बुद्ध भगवान और महावीर स्वामी के सिद्धान्त प्रचलित तो खूब हुए पर भाषा के सुधार की और ध्यान न जाने के कारण संस्कृति की स्थिति और अधिक बिगड़ गयी। जिससे वेदों की भाषा का समझना नितान्त कठिन होकर वैदिकों की चिन्ता का कारण बन गया।

आचार्य विद्यासागर जी के सपनों का मंदिर

❊ प्रतिष्ठाचार्य ब्र. नितिन जैन, खुरई ❊

ईसापूर्व 350 वर्ष मंदिर निर्माण कार्य प्रारंभ होगया था । गुफा मंदिरके रूप में उदयगिरि-खंडगिरि की रानी गुफा एवं हाथी गुफा का निर्माण जैन आगम केअनुकूल हुआ जैन मंदिर की कला का विकास एवं जैन पद्धति सेमंदिरों का निर्माण करना उस युग में सहज कार्य था क्योंकि जैन वास्तुकला का विकसित रूप अनेक प्रकार सेसम्पन्न था । निषिद्धकाओं के रूप में जिन आयतनों का प्रचलन था आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धांतचक्रवर्ती, आचार्य वसुनन्दी, आचार्य जयसेन जैसेमहान आचार्यों नेभारतीय संस्कृति के लिए मंदिर मर्तियों का निर्माण शास्त्रीय पद्धति सेकराया था। इन आचार्यों नेजैन वास्तुकला के विकास के लिए अपनी लेखनी भी चलाई।

पूज्य आचार्य विद्यासागर महाराज नेजैन मंदिर के निर्माण के लिए अपना चिंतन पूर्व आचार्यों सेसमायोजित करतेहुए रखा सर्वप्रथम उन्होंनेमंदिर संरचना कोसमझतेहुए यह ध्यान दिया कि जैन मंदिर, शैव मंदिर, वैष्णव मंदिर में वास्तविक अंतर क्या होता है। शिखर की शैली बता देती है कि यह मंदिर किस परम्परा का है । शिखर बनातेसमय श्रृंगों की गणना एवं उरु श्रृंगों का विस्तार तथा चैत्यगवाक्ष अमलिकासार ध्वजदण्डथान जिन मुख रचना सुख नासा जैसेशिखर के आवश्यक अंगों पर पूज्यश्री नेअपना ध्यान केन्द्रित किया। इन सब अंगों के साथ पूज्यश्री नेशिखर के अनुपात रचना पर अपनी सूक्ष्म दृष्टि केन्द्रित की। मूलरेखा के साथ शिखर की फालियों, कर्णिकाओं एवं उसके विस्तार और ऊंचाई के अनुपातों कोसुंदर ढंग सेसमावेशित करनेका पूर्ण प्रयास किया।

आचार्य विद्यासागर जी नेमंदिर का निर्माण की प्रचलित अवधाराणा एवं पद्धति कोसमूल परिवर्तित कर दिया। सुविधा और सरलता कोध्यान में रखकर प्रायः मंदिरों का निर्माण सीमेंट, गिट्टी एवं लौह धातु की क्षणों सेहोरहा था तथा सीधा हाल बनाकर वेदी स्थापित की जाती थी। श्रावकगण यह भूल जातेथेकि आर.सी.सी. के निर्माण कार्य की आयु अधिकतम 50 वर्ष है । आचार्यश्री नेसमाज कोसूत्र दिया कि सस्ता रोवेबार-बार, महंगा रोवेएक बार अतः पाषाण सेनिर्मित मंदिरों की योजना कोआचार्यश्री नेकार्य रूप दिया। जिन्होंनेभी मंदिर निर्माण की प्रस्तावना आचार्यश्री के समक्ष रखी उन सबके लिए आचार्यश्री नेपाषाण निर्मित

मंदिर का ही निर्देश दिया और आचार्यश्री का निर्देश समाज नेआदेश समझकर शिरोधार्य किया । पूज्य आचार्य श्री नेसर्वप्रथम अमरकण्टक सेही पाषाण निर्माण का कार्य कराया तदोपरांत रामटेक, नेमावर, कुण्डलपुर, बीनाबारहा जैसेतीर्थों पर अद्वितीय पाषाण निर्मित सुंदर कला सम्पन्न सम्पूर्ण अंगों सेयुक्त मंदरों का निर्माण कराके दिगम्बर जैन संस्कृति कोयुगों -युगों तक के लिए उच्च स्थान पर स्थापित किया । आचार्यश्री का ऐसा मानना है कि मंदिर की भव्यता समाज कोभव्य बना देती है। जिस नगर का मंदिर भव्य और दोषों सेमुक्त होता है उस समाज का आर्थिक विकास भी दिन दूना और रात चौगुना बढ़ता है। निर्दोष जिनालय के माध्यम सेही श्रावक धर्म की पूर्णता मानी जाती है । जिन आयतन सम्यक धर्म की आधार शिला स्थापित करता है तथा धर्म, समाज एवं राष्ट्र की सम्पन्नता और सहजता कोपूर्ण करता है जिनालय ही श्रमण साधना का केन्द्र बनता है।

जिनालय का निर्माण करने-करानेवाला अथवा करनेकी प्रेरणा देनेवाला जिनालय में बैंठकर सामायिक-स्वाध्याय-उपासना की साधना होती है। उसके अर्जित पुण्य का दशांश पुण्य उसेभी उपलब्ध होता है जोमंदिर का निर्माण कराता है । मंदिर के श्रृंगार चौकी मत्तापूर्ण नृत्यमंडप, रंगमडंप विविध प्रकार की शैलियों के होतेहैं । इन मंडपों के अंत में गर्भ गृह रहता है। गर्भ गृह की मर्यादा जितनी सुरक्षित रखी जाती है उतनेही जिनालय में अतिशय प्रगट होतेहैं। अतिशयों का नाश श्रावकगण स्वयं कर देतेहैं वेजब गर्भ गृह में अशुद्ध वस्त्र पहनकर प्रवेश करतेहैं अथवा गर्भ गृह में महिलाओं का प्रवेश होनेलगता है तब जिनालय के भक्त देवगण स्वयं पलायन कर जातेहैं और मंदिर का अतिशय क्षीण होजाता है।

जिनबिम्ब और जिनालय ऐसा होना चाहिए जिसके दर्शन सेनिद्धित निकाचित कर्मों का नाश होसके तथा मिथ्यात्व का अंधेरा छंटकर सम्यक्त्व का दिव्य प्रकाश प्रकट होसके जिनालय की रचना जितनी मनोज्ञ होगी उतनेही विशुद्धि परिणामों का संवर्धन होता है विशुद्धि परिणाम सेसाता वेदनीय का कर्म बंध होता है और असाता वेदनीय कर्म के स्थितिकारण्डक, अनुभाग काण्डक का घात होता है तथा असाता वेदनीय के सम्पूर्ण कर्म परमाणुओं कोसंक्रमण साता वेदनीय के रूप में होजाता है। बस इसी कर्म की बदली हुई परिस्थिति सेजिनालय और जिनबिम्ब में चमत्कार पैदा होजाता है । अतः निर्दोष भव्य कलापूर्ण मंदिर बनवाना ही श्रेयस्कर है।

जैन परम्परा मे आखा तीज का है विशेष महत्व

❊ डॉ. सुनील जैन संचय (ललितपुर) ❊

भारतीय संस्कृति मे पर्व, त्याहारों ओर व्रतों का अपना एक अलग महत्व है। ये हमें हमारी सांस्कृतिक परंपरा से जहां जोड़ते हैं वही हमारे आत्मकल्याण में भी कार्यकारी है । वैशाख शुक्ला तृतीया को अक्षय तृतीया पर्व मनाया जाता है। इस दिन जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) ने राजा श्रेयांस के यहां इक्षु रस का आहार लिया था, जिस दिन तीर्थंकर ऋषभदेव का आहार हुआ था, उस दिन वैशाख शुक्ला तृतीया थी उस दिन राजा श्रेयांस के यहां भोजन, अक्षीण (कभी खत्म न होने वाला) हो गया था। अतः आज भी लोग इसे अक्षय तृतीया कहते हैं । जैनधर्म के अनुसार भरत क्षेत्र में इसी दिन से आहार दान की परम्परा शुरु हुई। ऐसी मान्यता है कि मुनि का आहार देने वाला इसी पर्याय में या तीसरी पर्याय से मोक्ष प्राप्त करता है। राजा श्रेयांस ने भगवान आदिनाथ को आहारदान देकर अक्षय पुण्य प्राप्त किया था, अतः यह तिथि अक्षय तृतीया के रुप में मानी जाती है। यह दिन बहुत ही शुभ होता है, इस दिन बिना मुहूर्त निकाले शुभ कार्य सम्पन्न होते हैं।

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में विजयार्ध पर्वत से दक्षिण की ओर मध्य आर्यखण्ड में कुलकरों में अंतिम कुलकर नाभिराज हुए। उनके मरुदेवी नाम की पट्टरानी थी। रानी के गर्भ में जब जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव आये तब गर्भकल्याणक उत्सव देवों ने बड़े ठाठ से मनाया और जन्म होने पर जन्म कल्याणक बनाया। फिर दीक्षा कल्याणक होने के बाद ऋषभदेव ने छः माह तक घोर तपस्या की। छः माह के बाद चर्या (आहार) विधि के लिए ऋषभदेव भगवान ने अनेक ग्राम नगर, शहर में विहार किया, किन्तु जनता व राजा लोगों को आहार की विधि मालूम न होने के कारण लोगों ने भगवान को धन, कन्या, पैसा, सवारी आदि अनेक वस्तु भेंट देना चाही । भगवान ने यह सब अंतराय का कारण जानकर पुनः वन में पहुंच छः माह का तपश्चरण योग धारण कर लिया।

अवधि पूर्ण होने के बाद पारणा करने के लिए चर्या मार्ग से ईर्यापथ शुद्धि करते हुए ग्राम, नगर में भ्रमण करते-करते कुरुजांगल नामक देश में पधारे । वहां हस्तिनापुर में कुरुवंश के शिरोमणि महाराज सोम राज्य करते थे। उनके श्रेयांस नाम का एक भाई था। उसने सर्वार्थसिद्धि नामक स्थान से चयकर वहां जन्म लिया था।

एक दिन रात्रि के समय सोते हुए उसे रात्रि के आखिरी भाग में कुछ स्वप्न आये । उन स्वप्नों में मंदिर, कल्पवृक्ष, सिंह, वृषभ, सिंह, समुद्र, आग, मंगल द्रव्य यह अपने राजमहल के समक्ष स्थित हैं ऐसा उस स्वप्न में देखा तदनंतर प्रभात बेला में उठकर उक्त स्वप्न अपने जेष्ठ भ्राता से कहे, तब ज्येष्ठ भ्राता सोमप्रभ ने अपने विद्वान पुरोहित को बुलाकर स्वप्नों का फल पूछा। पुरोहित ने जबाव दिया - हे राजन् ! आपके घर श्री ऋषभदेव भगवान पारणा के लिए पधारेंगे, इससे सबको आनंद हुआ।

इधर भगवान ऋषभदेव आहार (भोजन) हेतु ईर्या समितिपूर्वक भ्रमण करते हुए उस नगर के राजमहल के सामने पधारे तब सिद्धार्थ नाम का कल्पवृक्ष ही मानों अपने सामने आया है, ऐसा सबको भास हुआ । राजा श्रेयांस को भगवान ऋषभदेव का श्रीमुख देखते ही उसी क्षण अपने पूर्वभव में श्रीमती वज्रसंघ की अवस्था में एक सरोवर के किनारे दो चारण

मुनियों को आहार दिया था उसका जाति स्मरण हो गया। अतः आहारदान की समस्त विधि जानकार श्री ऋषभदेव भगवान को तीन प्रदक्षिणा देकर पड़गाहन किया व भोजन गृह में ले गये।

प्रथम दान विधि कर्ता वह दाता श्रेयांस राजा और उनकी धर्मपत्नी सुमतीदेवी व ज्येष्ठ वधु सोमप्रभा राजा अपनी लक्ष्मीपति आदि ने मिलकर श्री भगवान ऋषभदेव को सुवर्ण कलशों से इच्छुरस का आहारदान दिया उसमें से तीन खण्डी (बंगाली तोल) इक्षुरस (गन्ना का रस) अंजुल में होकर निकल गया और दो खण्डी रस भगवान के पेट में गया।

इस प्रकार भगवानं ऋषभदेव की आहारचर्या निरन्तराय सम्पन्न हुई। इस कारण उसी वक्त स्वर्ग के देवों ने अत्यंत हर्षित होकर पंचाश्चर्य (रत्नवृष्टि, गंधोदक वृष्टि, देव दुदुंभि, बाजों का बजना व जय-जयकार शब्द होना) किये और सभी ने मिलकर अत्यंत प्रसन्नता मनाई।

जब ऋषभदेव निरंतराय आहार करके वापस विहार कर गए उसी समय से अक्षय तीज नाम का पुण्य दिवस (जैन धर्म के अनुसार) का शुभारंभ हुआ। इसको आखा तीज भी कहते हैं। यह दिन हिन्दू धर्म में भी बहुत पवित्र माना जाता है। इस दिन अनबूझा मुहूर्त मानकर शादी विवाह एवं मंगलकार्य प्रचुर मात्रा में होते हैं।

जैनधर्म में दान का प्रवर्तन इसी तिथि से माना जाता है क्योंकि इससे पूर्व इस काल में दान की विधि किसी को मालूम नहीं थी। अतः अक्षय तृतीया के इस पावन पर्वको देव भर के जैन श्रद्धालु हर्षोल्लास व अपूर्व श्रद्धा भक्ति से मनाते हैं। इस दिन हस्तिनापुर में भी विशाल आयोजन किया जाता है। इसी दिन व्रत, उपवास रखकर इस पर्व के प्रति अपनी प्रगाढ़ आस्था दिखाते हैं।

अक्षय तृतीया व्रत विधि एवं व्रत - यह व्रत जैन परम्परा के अनुसार वैशाख सुदी तीज से प्रारम्भ होता है।उस दिन शुद्धतापूर्वक एकाशन करें या 2 उपवास या 3 एकाशन करें।

इसकी विधि यह है कि व्रत की अवधि में प्रातः नैत्यिक क्रिया से निवृत्त होकर मंदिर जी को जावें। मंदिरजी में जाकर शुद्ध भावों से भगवान की दर्शन स्तुति करें। पश्चात् भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा को सिंहासन पर विराजमान कर कलशाभिषेक करें। नित्य नियम भगवान आदि तीर्थंकर (ऋषभदेव) की पूजा एवं पंचकल्याणक का मंडल जी मंडवाकर मंडलजी की पूजा करें। तीनों काल (प्रातः मध्यान्ह, सांय) निम्नलिखित मंत्र जाप्य करें एवं सामायिक करें।

मंत्र- ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री आदिनाथ-तीर्थंकराय नमः स्वाहा

प्रातः सायं णमोकार मंत्र का शुद्धोच्चारण करते हुए जाप्य करें।

व्रत के समय गृहादि समस्त क्रियाओं से दूर रहकर स्वाध्याय, भजन, कीर्तन आदि में समय यापन करें। दिन भर जिन चैत्यालय में ही रहें। व्रत अवधि में ब्रह्मचर्य रहें।हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह इन पांच पापों का अणुव्रत रुप से त्याग करें। क्रोध, मान, माया,लोभ कषायों का शमन करें।

व्रत पूर्ण होने पर यथाशक्ति उद्यापन करें। भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा मंदिरजी में भेंट करें तथा मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका चतुर्विध संघ को चार प्रकार का दान देवें। इस प्रकार शुद्धतापूर्वक विधिवत रूप से व्रत करने से सर्व सुख की प्राप्ति होती है तथा साथ ही क्रम से अक्षय सुख अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति होती हैं।

गुरुसत्संग जिया तो जाना

सन्दर्भ- संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर

❊ एड अजित जैन (जबलपुर) ❊

यह सन्त शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी मुनिराज की अनेकों धर्मसभाओं के संयोजन व संचालनकर्ता एड. अजित जैन जो पूर्व में आचार्य श्री का अशीष प्रेरणा से जबलपुर में संचालित भारत वर्षीय दिगम्बर जैन प्रशासकीय प्रशिक्षण संस्थान के अनेकों वर्ष तक डायरेक्टर रहने के बाद वर्तमान में वर्ष 2011 से आचार्य श्री पुष्पदन्त सागर की प्रेरणा से स्थापित मानव सेवा के अनुमप पुष्पगिरि तीर्थ में सेवार्पित हैं एवं मासिक पत्रिका के सम्पादक है। यह लेख आचार्य श्री विद्यासागर जी की निजता में घटित उन संस्मरणों का प्रस्तुतिकरण है, जो दर्शन के जगत पठनीय व मननीय हैं। **ब्र. जिनेश मलैया**

दुनियाँ विनाश के कगार पर खड़ी है। राष्ट्रगत अहंकार एवं दलगत राजनीति ने मनुष्य को भीषण त्रासदी में लाकर खड़ा कर दिया है। ऐसे भयावह वातावरण में मनुष्य जाति को बचाये रखने की दिशा में तेजी से कार्य आवश्यक है। सोचना है कि एक अन्तराल से आलौकिक आत्मायें जन्म लेती हैं और वे अपनी व्यक्तिगत जीवन चर्या की सुगंध दूर-दूर तक फैल जाती है, वही खुशबु मनुष्य जाति को सुरभित करती है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी को समीप से जीने के ऐसे अनेक अवसर मिले, और उनके जीवन्त संस्मरणों की पृष्ठभूमि से जब उन्हें झाँककर देखा तो अनुभव हुआ कि ऐसे सन्तों को जातीय सीमाओं में बाँधकर रखना संभव नहीं है। वे आगम आलोक के पथानुगामी ही नहीं, प्रमाणिक प्रज्ञापुरुष हैं। शायद यही कारण है कि उनके सत्संग में जो कुछ संस्मरण घटे वे विश्व के किसी भी अध्यात्म या दर्शन जगत के लिए एक पठनीय अध्याय की भॉति है। कुछ संस्मरण प्रस्तुत कर सुधी पाठकों का ध्यान आकर्षित कर रहा हूँ ताकि जनमानस यह जानले कि आचार्य श्री विद्यासागर जी समस्त जयकारो और जयध्वनियों से पार प्रकाश की एक किरण की भॉति सूर्यपुत्र हैं - बस चाहिए अपने दरवाजे खुले रखना ताकि किरण प्रवेश करते हुए मनुष्य जाति में व्याप्त कल्मष और तमस का निवारण हो सके। प्रस्तुत है कुछ ऐसे संस्मरण जो दर्शन जगत में मूल्यवान पृष्ठ की भाँति प्रेरणा देते हैं देते रहेंगे। संघ में दिगम्बर बनने आये हो वस्त्र पहिने रहने नहीं आचार्य श्री की अनगिनत धर्मसभाओं के संचालन अहोभाग्य से गुजरा मैं, जब एक बार आचार्य श्री के चरणों में कई वर्ष संभावित 1995-96 में औंरगाबाद आचार्य श्री देवनंदी जी की धर्मसभा का संचालन कर जबलपुर लौट रहा था, वाया नागपुर

आना था। नागपुर से रामटेक इसलिए रूकते हुए आया कि संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी ससंघ विराजमान हैं, दर्शन-नमोस्तु व आशीष लेकर जबलपुर चला जाऊँगा। प्रातः जैसे ही उनके पाद्मूल में माथा रखा तो अनायास आचार्य श्री बोले आप ! मैंने कहा हाँ गुरुदेव दर्शन करने थे- औंरगाबाद से नागपुर होते हुए रामटेक आ गया। आचार्य श्री स्मित मुस्कान ओंठो पर लाते हुए बोले- आप दर्शन को कहाँ आते हैं - संचालन को आते हैं। मैंने कहा-गुरुदेव आपका आशीष सभाओं का इतना संचालन का अहोभाग्य मिलता है कि संचालन में जी भर के दर्शन हो जाते हैं। बात चलते-चलते मैं देखता हूँ एक ब्रह्मचारी जी (नाम तो भूल रहा हूँ)गुरुदेव के समक्ष बैठे हैं, मैं उन्हें जानता था-वे मुझे जानते थे। उनकी आँखे नम थी-अश्रु बहते हुए दिखाई दे रहे थे-मैंने गुरुदेव से विनती की-गुरुदेव ब्रह्म जी के आँख से आँसू ? आचार्य श्री ने कहा- वे यूँ ही आँसू भी बहाते रहेंगे-प्रायश्चित माँगते रहेंगे।

आगे जा हुआ, वह दर्शन-अध्यात्म-चिंतन के जगत् में पठनीय है। ब्रह्मचारी जी बोले आचार्य श्री शिविर में मैंने कार्यकर्ताओं को मना किया कि मेरी धोती-कपड़े मत धोया करो, मैं खुद धो लूँगा। लेकिन वे मानते नहीं थे। तब आचार्य श्री ने कहा- वे मानते नहीं थे अर्थात् आप मान जाते थे। यदि लोगों की बात मानना है तो राजनीति में जाओं और व्रतों की मानना हो तो संघ में रहो। तुम उनकी मान लेते थे। राजनीति में ऐसा होता है। फिर आचार्य श्री ने दृष्टि मेरे और ड़ाली और जो कहा वह किसी भी अध्यात्म व दर्शन का शिखर है।

आचार्य श्री ने कहा-ये लोग ये नहीं जानते हैं कि संघ कपड़े उतारने के लिए आये हैं (दिग. जीवी) जब कपड़े उतारना ही है तो कपड़े स्वयं धोयेगे तो कपड़े धोने की पीड़ा, कपड़ो के प्रति उदासीनता पैदा होगी। जब स्वयं कपड़े धोयेगें तो कितना साबुन या कितना पानी लगना है उसका ध्यान रख सकेंगे। अब जब अव्रती कपड़े धोयेगा तो पानी कितना बहे, कितने ही जीवों का घात हो, उसे ब्रह्मचारी जी की धोती अच्छे टिनोपाल दे- देकर सफेद करनी है ताकि ब्रह्म जी प्रसन्न हो जायेंगे। तब क्या उन जीवों के घात का दोष इन्हें नहीं लगेगा। ये कुछ नहीं समझना चाहते हैं, बस आँसु बहालो और प्रायश्चित ले लो।

मैं मौन इस गहन- प्रेरक उर्ध्वगामी दर्शन व चिंतन का सुनता रहा। बस सोचता रहा आचार्य विद्यासागर संज्ञापित एक ऊर्जा पिंड़ धरती पर है, जिसको सुना-समझा गया और व्यक्ति से लेकर राष्ट्र और राष्ट्र से लेकर विश्व तक आचरण का असली जामा पहिनाया गया तो सभ्यता अपने सौन्दर्य सौम्य और समता जीवी अलंकरण को वरण कर सकेगी और व्यक्ति राष्ट्र व विश्व, ईर्ष्या, जलन अहंकार और विनाश की भट्टी में झोंके जाने से बचायी जा सकेगी। ऐसी ही कुछ सोच लेकर उठ गया ब्रह्म भैया कुछ समय बाद गये। पुनः क्षमा याचना की। प्रायश्चित मिला।

जैनाचार्य विद्यासागर जी के प्रति दिग्विजय सिंह की अपार श्रद्धा एवं समर्पण

❊ विजय कुमार जैन (राघोगढ़ म.प्र.)❊

वर्तमान युग के महान तपस्वी जैन संत आचार्य विद्यासागर जी महाराज की मुनि दीक्षा के पचास वर्ष गत वर्ष 30 जून 17 को पूर्ण हो गये। सारे देश मे आचार्य विद्यासागर जी का 50वाँ दीक्षा दिवस संयम स्वर्ण महोत्सव के रूप में गत वर्ष 30 जून 17 से विभिन्न धर्मिक सांस्कृतिक समाज सेवा के आयोजनों के साथ मनाया जा रहा है। संयम स्वर्ण महोत्सव आगामी 30 जून 18 तक चलेगा श्रमणाकाश के ध्रुवतारे वर्तमान युग के ज्येष्ठ-ज्येष्ठ जैनाचार्य विद्यासागर जी की मुनि दीक्षा दिनांक 30 जून 1968 को अजमेर राजस्थान में हुई। आपके दीक्षा गुरु महाकवि दिगम्बराचार्य श्री ज्ञान सागर जी महाराज थे। आचार्य विद्यासागर जी को हिन्दी कन्नड मराठी प्राकृत संस्कृत अपभ्रंश अंग्रेजी बंगला आदि भाषाओं का ज्ञान है।

कॉग्रेस के वरिष्ठ नेता म.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह आचार्य विद्यासागर जी की कठोर साधना त्याग एवं धर्म परायणता से प्रभावित है उनके अनन्य भक्त माने जाते है। श्री दिग्जिय सिंह पिछले 6 माह से नर्मदा परिक्रमा पदयात्रा करते हुए गत दिनांक 19 मार्च 18 डिंडोरी म.प्र. पहुचे। डिंडोरी में आचार्य श्री विद्यासागर ससंघ विराजमान थे। श्री सिंह ने डिंडोरी में पदयात्रा को विराम दिया और साथियों सहित आचार्य विद्यासागर जी दर्शन करने पहुंचे। वहाँ उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। दिनांक 30 सितम्बर से नरसिंहपुर जिले से स्थित नर्मदा नदी के पवित्र वरमान घाट रही श्री दिग्विजय सिंह जी की नर्मदा परिक्रमा पदयात्रा को दिनांक 20 मार्च 18 को विराम देकर आप डिंडोरी में आचार्य विद्यासागर जी महाराज के दर्शन करने पहुंचे। प्रातः कालीन प्रवचन सभा में सम्मिलित हुए। चरण वंदना की आशीर्वाद लिया।

आचार्य विद्यासागर जी के संयम स्वर्ण महोत्सव के अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के लिए भेजे विनयांजलि संस्मरण पत्र में श्री दिग्विजय सिंह ने आद सहित उल्लेख किया है आनंद विभोर हूँ यह जानकर कि इस सदी के महानतम संत मूकमाटी महाकाव्य के सृजनकार परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी अपनी उपलब्धि पूर्ण श्रावण्य यात्रा के 50 वर्ष पूर्ण कर रहे है।

इस महान अवसर पर उन्हें समर्पित करने के लिए मेरे पास कुछ भी नही है सिवाय उनके प्रति अपार श्रृद्धा में नहाये हुए कुछ शब्द और उनके सामिप्य की स्मृतियाँ, अपनी साधना की सुगंध से हम जैसे राजनीति के क्षेत्र मे कार्य करने वालों को भी अपनी और आकृष्ट कर लेने वाले इस महान पदयात्री के पहली बार मैंने कब दर्शन किये यह तो कहना मुश्किल है। प्रथम दर्शन की अनुभूतियाँ आज भी मेरे हृदय में विद्यमान है।

वर्षो की अनुनय विनय के फलस्वरूप 16 अप्रेल 2002 को विशाल संघ के साथ आचार्य श्री विद्यासागर जी के चरण भोपाल में पड़। 25 अप्रैल 2002 को महावीर जयन्ती का विराट उत्सव राजधानी का विशाल लाल परेड मैदान अपार भीड़ प्रदेश के अनेक मंत्री शीर्ष अधिकारी जानी मानी हस्तियाँ और मैं स्वयं भी सानिध्य विद्यासागर जी का विनयांजली संस्मरण पत्र में श्री दिग्विजय सिंह जी ने आगे लिखा है आचार्य श्री विद्यासागर जी के भोपाल प्रवास की जब याद करता हूँ, एक अधूरी इच्छा पंख फैलाती है काश आचार्य श्री विद्यासागर जी मेरे गृह नगर राघौगढ़ भी एक बार पधारें। राजनैतिक व्यस्ताओं के कारण चाहते हुए भी प्रत्यक्ष ज्यादा न सही परोक्ष में मन स्मरण करता रहता है। उनका आशीर्वाद आज भी मेरे जीवन की पवित्र पूंजी निरंतर वृद्धि को प्राप्त हो ऐसी मेरी भावना है।

मैंने श्री दिग्विजय सिंह जी की संतो के सबंध में पवित्र भावनाओं को सुना है आपका कहना है सभी धर्मो के संतो में दिगम्बर जैन संतो का त्याग और कठिन तपस्या से जीवन में मैं सबसे अधिक प्रभावित हूँ। सन् 1993 से 2003 के बीच लगातार 10 वर्ष तक जब श्री दिग्विजय सिंह जी मध्यप्रदेश के मुख्य मंत्री थे उस दौरान आपने जैन तीर्थ कुण्डलपुर, पुष्पगिरि, सोनागिरि बावनगजा बड़वानी, मक्सी पार्श्वनाथ, गोलाकोट पचराई जी सिद्धवर कूट नेमावर आदि के लिये उदारता से सहयोग किया। आपने मध्यप्रदेश में गोसेवा आयोग कर गठनकर गोशालाओं को शासकीय अनुदान दिलाया। जैन संतो एवं जैन धर्म के प्रति श्री दिग्विजय सिंह की एवं श्रृद्धा एवं समर्पण स्वागत योग्य है।

समाचार

अशोक जी जमादार दिल्ली की मुनि दीक्षा सम्पन्न

उदयपुर (राज.)- आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज के करकमलों से दिनांक 20 अप्रैल 2018 को ब्र. श्रीपाल भैया सलूम्बर, ब्र. अशोक जी जमादार दिल्ली, क्षुल्लिका श्री श्रुतमति माताजी, ब्र. सतीश भैया जी भड़गांव (महा.), ब्र. सरोज दीदी भड़गाँव (महा.) की दीक्षा श्री नेमिनाथ पंचकल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव सेक्टर नं. 14, उदयपुर (राजस्थान) में जन्म कल्याणक के दिन हुई। जिनका नाम क्रमशः मुनि श्री सुधीन्द्र सागर जी, मुनि श्री सुधीर सागर, आर्यिका श्री शुद्धमति माता जी, क्षुल्लक श्री सुधी सागर जी, क्षुल्लिक श्री शुद्धात्ममति माता जी रखा गया। नवीन दीक्षित साधकों को शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य क्रमशः ब्र. चंदन भैया, श्रीमति रविकांता अंकुर भैया दिल्ली, श्री शांतिलाल जी वेणावत उदयपुर, श्री चेतनप्रकाश जी भगत उदयपुर, गोपाल ली मुणेत परिवार को प्राप्त हुआ। पिच्छी एवं कमण्डल देने का सोभाग्य राजस्थान के गृहमंत्री श्री गुलाबचंद्र जी कटारिया, श्री फूल जी मीणा विधायक उदयपुर, श्री प्रदीप जी कासलीवाल इन्दौर, आर.के जैन मुम्बई, श्रीमति रविकांता जैन, श्री राजेन्द्र जी वास्तु इन्दौर, श्रीमति नेहा अंकुर जैन, श्रीमति रूचि-योगेश जैन, श्रीमति मोना-अमित, राकेश जैन, मंगलसेन, सुभाषचंद जी जैन अशोक विहार दिल्ली, राजीवन जैन त्रिनगर दिल्ली, राकेश (रानू) दिल्ली, अरूण जन दिल्ली, अनिल जैन, अक्षय जैन, अजय जैन दिल्ली, श्रीमति सुषमा अशोक जैन सीसी कॉलोनी दिल्ली, अतुल जैन बड़ौत, नरेन्द्र जैन बेड़िया, विजयकुमार काला सनावद, श्रीमति कलाबाई बसंतीलाल, श्रीमति रजनी-विपिन जैन, श्रीमति अनिता-संजय जैन कोटरी वाला परिवार इन्दौर, जिनेन्द्र शास्त्री सिद्धवरकूट, वैभव देवल भोपाल एवं सभी दीक्षार्थियों के परिवारजन को प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन संस्कार सागर के प्रधान सम्पादक ब्र. जिनेश मलैया इन्दौर ने किया। साथ-साथ आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज का 22वां दीक्षा दिवस मनाया गया। इस अवसर पर श्री फूल जी मीणा विधायक उदयपुर ने आजीवन मॉस मदिरा सेवन का त्याग किया एवं गुलाबचंद्र जी कटारिया ने रात्रि भोजन त्याग का नियम लेकर ऐसे महान कठोर तपस्वी साधक की साक्षी में अपने जीवन मे उत्तम सदाचारी पवित्र आचरणों को अंगीकार किया।

दीक्षा दिवस सम्पन्न

ऊन - आर्यिका श्री सुदृष्टि मति माता जी द्वारा श्रीमति कमलाबाई इन्दौर को क्षुल्लिका दीक्षा दिनांक 22 अप्रैल 2018 को श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र ऊन में सम्पन्न हुई। जिनका नाम शुभ्रमति माता जी रखा गया।

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज का अतिशय क्षेत्र पपौराजी में भव्यमंगल प्रवेश

पपौराजी (टीकमगढ़) म.प्र. - आचार्य श्री विद्यासागर जी ससंघ का डिंडोरी से तीव्र गर्मी मे विहार करते हुए श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पपौरा जी (टीकमगढ़) में दिनांक 20 अप्रैल 2018 को हजारों श्रद्धालुओं ने आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ससंघ का भव्य मंगल प्रवेश कर अगवानी हुई।

आगामी दीक्षा

सिद्धक्षेत्र सम्मेद शिखर जी- ब्र. चेलना दीदी को आर्यिका दीक्षा दिनांक 18 जुलाई 2018 को आचार्य श्री सम्भव सागर जी महाराज द्वारा दी जायेगी।

श्रुतधाम बीना में गुरुकुल बाल संस्कार शिविर

बीना। परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज के संयम स्वर्ण वर्ष की पावन श्रृंखला में अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना के तत्वावधान में आदरणीय ब्रं. संदीप जी सरल के कुशल निर्देशन में 23 से 27 मार्च 2018 तक गुरुकुल बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 101 शिविरार्थी 8 वर्ष से 15 वर्ष के बालक सम्मिलित किये गये। शिविर का उद्देश्य था बालकों को स्वावलम्बन की शिक्षा के साथ-साथ व्यवहारिक जीवन में सहभागिता, मिलनसारिता के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा प्रदान करना था।

भाव सुधारो तो भव सुधर जाएगा : राष्ट्र संत आचार्य ज्ञानसागर जी

ललितपुर। इन दिनों नगर के क्षेत्रपाल जैन मंदिर में विराजमान राष्ट्र संत सराकोद्धारक आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज की धर्म देशना सुनने बड़ी संख्या मे श्रद्धालु उमड़ रहे हैं। आचार्यश्री धर्मसभा में अपनी अमृतमयी वाणी में कहा कि कर्म सिद्धांत को समझने वाला ही कर्मों के बंधन को तोड़ सकता है। दूसरों के दोष मत देखों, न ही दूसरों को दोष दो। वह तो मात्र निमित्त हैं, वस्तुतः तो हमें स्वयं के द्वारा किये गये कर्मों का फल मिल रहा है। कर्मों के उदय में जो जितना समताभाव रखता है वह उतना अधिक कर्मों के बंधन को तोड़ देता है। प्रत्येक व्यक्ति अगर अपने भावों को सुधारने का प्रयास करें तो भव सुधर सकता है। भाव बनायें, भाव बिगाड़े, बना है भावों का संसार। अच्छे भावों से आप अपने जीवन का अच्छा नक्शा बना सकते हो, बुरे भावों सेआप अपने जीवन का बुरा नक्शा बना सकते हो। अपने आपको सुधारो, जब भी बुरे विचार आएं तुरंत पश्चाताप करों।

इन्दौर में महावीर जयंती पर निकला जैन समाज का भव्य जुलूस

इन्दौर। जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म कल्याणक अर्थात् महावीर जयंती दुनिया भर में हर्षोल्लास के साथ 29 मार्च 2018 को मनाई गई। दिगम्बर जैन समाज द्वारा 97 वर्षों से निरंतर निकलने वाली ऐतिहासिक महावीर जयंती स्वर्ण रथ यात्रा निकाली गई।

डॉ. अनिल जैन और अभिषेक मनु सिंघवी (जैन) राज्यसभा सांसद बने

ललितपुर। जैन समाज के लिए हर्ष का विषय है कि डॉ. अनिल जैन (बीजेपी) और एडवोकेट अभिषेक मनु सिंघवी (जैन) जी (कांग्रेस) राज्यसभा सांसद चुने गए हैं। दोनों नेता बीजेपी और कांग्रेस राष्ट्रीय पार्टी में अपना अहम स्थान रखते हैं। राज्यसभा सासंद बनने पर जैन

सुमित्रा जी महाजन, अध्यक्ष लोकसभा द्वारा किया गया। माननीय अध्यक्ष ने बताया कि हिन्दी पद्य में विरचित यह छंदोदय जैन संस्कृति का प्रकाश स्तंभ सिद्ध होगा।

समाधिमरण

पिड़ावा (राज.)- मुनि श्री सरलसागर जी महाराज के शिष्य मुनि श्री ब्रह्मानंदसागर जी महाराज का समाधिमरण 20 अप्रैल 2018 को दोपहर 1.35 पर श्री दिगम्बर जैन मंदिर पिड़ावा (राज.) में हुआ। आप का जन्म कर्नाटक प्रांत में होते हुए आपने अपना जीवन मध्य भारत में व्यतीत करते हुए उत्कृष्ट साधना की।

सीपुर उदयपुर (राज.)- अतिशय क्षेत्र सीपुर परम पुज्य धर्मालांकार आचार्य श्री रयणसागर जी महाराज के सुशिष्य समाधिस्थ मुनि श्री अक्षय सागर जी महाराज की समाधि दिनांक 26 मार्च 2018 को दोप. 11.20 को हुई।

अखिल भारत वर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि परिषद द्वारा स्वास्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी का सम्मान

श्रवणबेलगोला- दिनांक 14.04.2018 को श्रवणबेलगोला श्री क्षेत्र में चामुण्डराय मण्डप में आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज आदि अनेक आचार्य संघो के सान्निध्य, स्वास्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी के सरंक्षकत्व और डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बडौत की अध्यक्षता में शास्त्रि परिषद कार्यकारिणी समिति बैठक आयोजित की गई जिसमें भट्टारक स्वामी का उनके कुशल नेतृत्व में भगवान बाहुबली स्वामी के महामस्तकाभिषेक के सफलतम कार्यक्रम की उपलब्धि पर शास्त्रि परिषद में उन्हें सम्मानित किया जिसमें आप को रजत श्रुत पीठ, आदमकद अभिनंदन पत्र वस्त्र एवं श्रीफल आदि भेंट कर विद्वत रत्नाकर के अलंकरण से अलंकृत किया। देश के कोने कोने से परिषद के वरिष्ठ विद्वान उपस्थित हुए उन्होंने समाज हित धर्म संरक्षण और श्रमण प्रभावना के अनेक प्रस्ताव पारित किए जिसकी सभी ने अनुमोदना की। समस्त कार्यकारिणी ने मस्तकाभिषेक का धर्म लिया।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा

माह : मई 2018

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये

01. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी का डोंगरगढ़ छत्तीसगढ़ में प्रथम प्रवेश कब हुआ था।
02. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज द्वारा मुक्तागिरी में सन् 1991 में कितनी ऐलक दीक्षायें दी गई थी
03. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी द्वारा मुक्तागिरी मे सन् 1998 में कितनी मुनि दीक्षायें दी गई थी।
04. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज का सर्वोदय तीर्थ अमरकटंक में सर्वप्रथम प्रवेश कब हुआ था।
05. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में सन् 1978 में पंचकल्याणक की तारीक क्या थी।
06. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने सन् 1997 में वर्षायोग कहा किया था।
07. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने 23 मुनि दीक्षायें कब एवं कहा दी थी।
08. सिद्धोदय तीर्थ पर आचार्य श्री विद्यासागर महाराज द्वारा कितनी मुनि दीक्षायें दी गई।
09. सिद्धोदय तीर्थ पर आचार्य श्री विद्यासागर महाराज द्वारा कितनी आर्यिका दी गई।
10. आचार्य विद्यासागर महाराज जी का अतिशय क्षेत्र पटनागंज में सर्वप्रथम प्रवेश कब हुआ था।
11. आचार्य विद्यासागर महाराज द्वारा सिद्धक्षेत्र नेनागिर जी में कितनी दीक्षायें दी गई।
12. आचार्य विद्यासागर महाराज द्वारा आर्यिका दीक्षा देने का प्रारंभ कौन से क्षेत्र से हुआ।
13. आचार्य विद्यासागर महाराज जी ने श्री सिद्धक्षेत्र नैनागिर जी में कितने चातुर्मास किये।
14. आचार्य विद्यासागर महाराज जी की सिद्धक्षेत्र नैनागिर जी में कितनी शीतकालीन वाचनायें हुई।
15. आचार्य विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में श्री सिद्धक्षेत्र नैनागिर जी में समवशरण मंदिर पर पंचकल्याण किस सन् में हुआ था।
16. आचार्य विद्यासागर महाराज जी का रामटेक में प्रथम चातुर्मास किस सन् में हुआ था।
17. आचार्य विद्यासागर महाराज के सानिध्य में श्री रामटेक जी में चौबीसी का शिलान्यास किस सन् में हुआ था।
18. आचार्य विद्यासागर महाराज जी के रामटेक में कितने चातुर्मास हो गये।
19. आचार्य विद्यासागर महाराज जी द्वारा 2013 में मुनि दीक्षायें कौन से क्षेत्र पर दी गई थी।
20. आचार्य विद्यासागर महाराज जी के श्री सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर जी में कितने चातुर्मास हुये।
21. आचार्य विद्यासागर महाराज जी द्वारा श्री सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर जी में कितनी आर्यिका दीक्षायें दी गई।
22. आचार्य विद्यासागर महाराज जी द्वारा श्री सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर जी में कितनी ऐलक दीक्षायें दी गई।
23. आचार्य विद्यासागर महाराज जी द्वारा श्री सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर जी में कितनी क्षुल्लक दीक्षायें दी गई।
24. आचार्य विद्यासागर महाराज जी द्वारा श्री सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर जी में कुल कितनी दीक्षायें दी गई।

25. मूकमाटी भवन कहा पर बन रहा है।
26. मूकमाटी भवन बनने की घोषणा कब की गई।
27. श्री अतिशय क्षेत्र कोनीजी में आचार्य श्री विद्यासागर जी के सानिध्य में पंचकल्याणक कब हुआ था।
28. त्रिमूर्ति मंदिर का शिलान्यास श्री अतिशय क्षेत्र कोनी जी में आचार्य श्री विद्यासागर जी के सानिध्य में कब हुआ था।
29. आचार्य विद्यासागर महाराज जी द्वारा लिखित नर्मदा का नरम कंकर पुस्तक का लोकार्पण सर्वप्रथम कहा और कब हुआ था।
30. आचार्य विद्यासागर महाराज जी द्वारा लिखित परीषह जय शतक कहां पर पूर्ण हुआ।
31. आचार्य विद्यासागर महाराज जी द्वारा लिखित डूबो मत लगाओ डुबकी का प्रणयन कहा हुआ।
32. आचार्य विद्यासागर महाराज जी द्वारा लिखित परीषह जय शतक ग्रंथ की रचना कब पूर्ण हुई थी।
33. आचार्य विद्यासागर महाराज जी द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार का पद्यानुवाद कहा हुआ था।
34. आचार्य विद्यासागर महाराज जी द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार का पद्यानुवाद कब पूर्ण हुआ था।
35. आचार्य विद्यासागर महाराज जी द्वारा लिखित डूबो मत लगाओ डुबकी नामक काव्य संग्रह में कितनी कवितायें है।
36. आचार्य विद्यासागर महाराज जी द्वारा अभी तक कुल कितनी दीक्षायें दी गई।
37. आचार्य विद्यासागर जी ने आचार्य श्री ज्ञानसागर के साथ कितने चातुर्मास किये।
38. आचार्य विद्यासागर जी ने मुनि अवस्था में कितने चातुर्मास किये।
39. आचार्य विद्यासागर महाराज जी द्वारा अभी तक कुल कितनी मुनि दीक्षायें दी गई।
40. आचार्य विद्यासागर महाराज जी द्वारा अभी तक कुल कितनी ऐलक दीक्षायें दी गई।
41. आचार्य विद्यासागर महाराज जी द्वारा अभी तक कुल कितनी क्षुल्लक दीक्षायें दी गई।
42. आचार्य विद्यासागर महाराज जी द्वारा अभी तक कुल कितनी आर्यिका दीक्षायें दी गई।
43. आचार्य विद्यासागर महाराज जी द्वारा अभी तक कुल कितनी क्षुल्लिका दीक्षायें दी गई।
44. आचार्य विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में अभी तक कुल कितने पंचकल्याणक हो चुके है।
45. आचार्य विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में महाराष्ट्र प्रांत में कितने पंचकल्याण हो गये।
46. आचार्य विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में छत्तीसगढ़ प्रांत में कितने पंचकल्याण हो गये।
47. आचार्य विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में गुजरात प्रांत में कितने पंचकल्याण हो गये।
48. आचार्य विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में राजस्थान प्रांत में कितने पंचकल्याण हो गये।
49. आचार्य विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में मध्यप्रदेश प्रांत में कितने पंचकल्याण हो गये।
50. आचार्य विद्यासागर महाराज जी ने एक साथ नौ उपवास कहा पर किये थे।

संस्कार सागर अप्रैल 2018 तीर्थ संरक्षण संवर्धन विशेषांक से

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षाः मई 2018

प्रश्न पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम .....स्थान .....

उम्र .....सदस्यता क्र. .....

पूर्ण पता .....

पिन कोड ..... फोन नं..... (एस.टी.डी.) .....

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम ..... हस्ताक्षर

नियम :– ..... जब तक दूसरा प्रश्न–पत्र भरकर नहीं भेजतेतब तक के लिए।

वर्ग पहेली 229

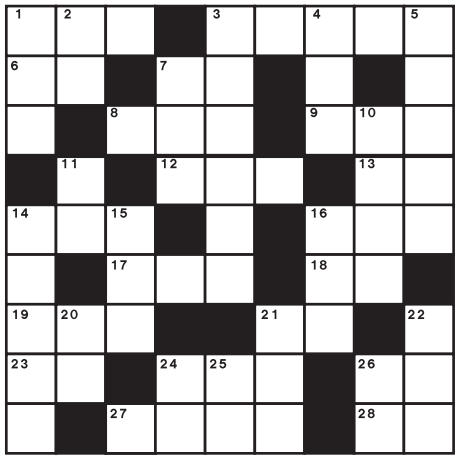

ऊपर से नीचे

1. भ्रमपूर्ण ज्ञान, संदेह, अनिश्चित ज्ञान 3
2. गर्मी, उष्मता 2
3. नेमावर में 20 अप्रैल को दीक्षित 1999 13वें क्रम के मुनि 6
4. आभार सहित 3
5. आचार्य कुंदकुंद द्वारा रचित एक ग्रंथ 5
7. सौ छंद, वस्तु संख्य, रनो का समूह 3
10. मेरापन, मेरा का भाव 4
11. प्रमाण का अंश श्रुतज्ञान का अंश ज्ञाता वक्ता का अभिप्राय 2
15. अधूरा प्रयास, कुछ बाकी 3
16. समुद्र का पर्यायवाची 3
20. विचार, अभिमत, वोट साभार 2
22. शास्त्र, जैन साहित्य 3
25. नस, शिरा 2
26. निशा, रात्री 2

बाये से दाये

1. नामकर्म जिसके उदय से मूल में नहीं प्रभा में उष्णता है। 3
6. बाष्प 2
7. शमन, शान्त 2
8. विशेष तल, विशेष सतह 3
9. रमने का भाँव 3
12. गेहूँ के आटे का सिका हुआ मिष्ठान 3
13. शरीर में बना काला निशान 2
14. ज्ञान का करने वाला, ज्ञाता 3
16. आकार सहित, आकार युक्त 3
17. युद्ध का पर्यायवाची 3
18. यदि को संस्कृत में कहते हैं 2
19. अमर सहित, हिरण 3
21. श्रेष्ठ दूल्हा 2
23. बीता हुआ 2
24. कमल 3
26. अनुराग, लगाव, अनुरक्ति 2
27. देवों का समूह 4
28. अंधकार अंधेरा 2

वर्ग पहेली 228 का हल

1 मं	2 दा	3 र	गि	रि	■	4 ज	ग	5 त
6 दो	रा	ह	■	7 आ	8 भा	■	■	ख
द	■	9 म	10 त	■	11 र	12 ह	म	त
13 री	14 ति	■	15 स	म	त	ल	■	■
■	16 मि	17 थ	ला	■	■	■	18 श	19 नि
20 भ	र	म	■	21 यः	■	22 नि	का	य
ग	■	23 ना	थ	■	24 स	■	25 ला	भ
26 व	27 न	■	28 र	29 ज	त	■	■	सा
30 तीं	त	र	■	31 रा	ह	त	■	र

.....सदस्यता क्र. .....

पता : .....

वर्ग पहली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को **हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन** (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रू., तृतीया पुरस्कार 41 रू.) प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

यही जन्म तो सार्थक होता

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

चित्रप्रदर्शनीय स्थल (07)-इंजी अभिषेक जैन के द्वारा संयम स्वर्ण महोत्सव पर
आचार्य विद्यासागर जी पर चित्रप्रदर्शनीय
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विजय नगर इन्दौर में.

आचार्य विद्यासागर जी से दीक्षित शिष्यों की दीक्षा के अनुपम पल...

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org